3 राजधानी
विजय नायर को मिली जमानत

6 अभिमत
संसदीय गरिमा में गिरावट

11 विदेश
दक्षिण अफ्रीका में हनुमान चालीसा बांटेगा हिंदू संगठन

12 स्पोर्ट्स
नितेश ने पैरालंपिक में स्वर्ण पदक जीता

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 12 अंक 292
नई दिल्ली, मंगलवार, 3 सितंबर, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

वैकल्पिक ईंधन वाले वाहनों पर घटे जीएसटी

राष्ट्रीय-10

सीबीआई ने संदीप घोष को किया गिरफ्तार

न्याय अपनी राह पर, कोलकाता के आरजी कर कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल पर कसा शिकंजा

सौगर सेनगुप्ता। कोलकाता

कोलकाता में सोमवार को आरजी कर मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष को गिरफ्तार करने के बाद अपने साथ ले जाते सीबीआई अधिकारी।

सुप्रीम कोर्ट में 5 सितंबर की सुनवाई से पहले बंगाल में सत्ता के लिए एक बड़ा झटका हो सकता है, केंद्रीय जांच ब्यूरो ने सोमवार को आरजी कर मेडिकल कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष को वित्तीय कदाचार के आधार पर गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद उन्हें केंद्रीय एजेंसी के निज़ाम पैलेस कार्यालय में लाया गया। ऑर्थोपेडिक सर्जन घोष पर न केवल वित्तीय कदाचार और जैव-चिकित्सा अपशिष्ट की अवैध बिक्री, अंग व्यापार चलाने और अपने एक समय के सहयोगी अख्तर अली द्वारा शरीर बेचने सहित अन्य अवैध कृत्यों का आरोप है। साथ ही उन पर सभी अवैध सिंडिकेट को नियंत्रित करने का भी आरोप लगाया गया है। जो बंगाल के अधिकांश सरकारी मेडिकल कॉलेजों में सक्रिय थे। घोष की गिरफ्तारी के साथ ही सीबीआई ने चिकित्सा संस्थान में वित्तीय अनियमितताओं को लेकर तीन और लोगों को गिरफ्तार किया।

मार्च 2023 में, अली, आर.जी. कर मेडिकल कॉलेज में एक गैर-चिकित्सा सहायक अधीक्षक थे। उन्होंने सतर्कता आयोग और यहां तक कि मुख्यमंत्री कार्यालय सहित अधिकारियों को एक पत्र लिखा जिसमें पूर्व प्रिंसिपल पर गंभीर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया गया जिसमें अवैध शरीर तस्करी और बायोमेडिकल अपशिष्ट निपटान शामिल था। सोमवार की गिरफ्तारी केंद्रीय एजेंसी द्वारा घोष को उनके कार्यकाल के दौरान अस्पताल में कथित वित्तीय अनियमितताओं की जांच के संबंध में एफआईआर में नामित करने के कुछ दिनों बाद हुई है। सीबीआई ने घोष की गिरफ्तारी आरजीकेएमसीएच की ऑन-ड्यूटी स्नातकोत्तर महिला डॉक्टर के बलात्कार और हत्या के खिलाफ लंबे समय से चल रहे आंदोलन के बीच की है। सीबीआई ने घोष से कई दिनों तक चले 150 घंटे से अधिक समय तक पूछताछ करने के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

आरजी कर बलात्कार और हत्या मामले के राष्ट्रीय सुर्खियों में आने के बाद गिरफ्तार किए गए यह दूसरे व्यक्ति हैं। इससे पहले महिला डॉक्टर से रेप और हत्या के आरोप में एक सिविक वॉलंटियर को गिरफ्तार किया गया था। घोष की गिरफ्तारी राज्य के राजनीतिक प्रतिष्ठान से उनकी निकटता के आधार पर महत्वपूर्ण हो जाती है। कथित तौर पर घोष ने कुछ साल पहले राज्य चुनाव के दौरान पैर की चोटों के लिए एक शीर्ष राजनेता का इलाज किया था।

दिलचस्प बात यह है कि राज्यव्यापी विरोध के बावजूद, बलात्कार और हत्या के मामले के कुछ ही दिनों के भीतर राज्य सरकार द्वारा घोष को कोलकाता के एक अन्य मेडिकल कॉलेज में पुरस्कार-पोस्टिंग के साथ स्थानांतरित कर दिया गया था, जिसके कारण मेडिकल बिरादरी में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुआ और उनकी बर्खास्तगी और गिरफ्तारी की मांग की गई। सीबीआई की गिरफ्तारी के अलावा घोष बड़ी मुसीबत में पड़ सकते हैं क्योंकि प्रवर्तन निदेशालय ने भी आरजीकेएमसीएच के अंदर कथित वित्तीय अनियमितताओं की जांच के लिए मनी लॉन्ड्रिंग का मामला दर्ज किया है। हाल ही में, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने घोष की सदस्यता निलंबित कर दी थी। सूत्रों ने बताया कि उनकी गिरफ्तारी पर चिकित्सा जगत और नागरिकों में व्यापक खुशी हुई क्योंकि पूरे राज्य में आंदोलनकारी जूनियर डॉक्टर नारे लगाते और गाने गाते हुए सड़कों पर उतर आए।

उल्लेखनीय है कि कोलकाता के एक अस्पताल में पिछले माह एक महिला चिकित्सक से कथित तौर पर दुष्कर्म और फिर उसकी हत्या की घटना के विरोध में यहां एक विशाल रैली में भाग लेने वाली प्रमुख फिल्मी हस्तियों और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं समेत लोगों ने महिला चिकित्सक के लिए न्याय की मांग को लेकर रातभर धरना दिया। धरना सोमवार को सुबह चार बजे तक जारी रहा। रविवार को हजारों लोग विरोध मार्च में शामिल हुए और रैली के अंत में वे मध्य कोलकाता के एस्प्लेनेड क्षेत्र में धरने पर बैठ गए। उन्होंने इस जघन्य अपराध की त्वरित जांच और अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए सरकार पर दबाव बनाने के वास्ते सोमवार की सुबह तक वहीं डटे रहने का संकल्प लिया।

'बुलडोजर न्याय' पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

राजेश कुमार। नई दिल्ली

'बुलडोजर न्याय' के खिलाफ दायर याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को अपराध के आरोपियों के घरों या संपत्तियों को ध्वस्त करने की प्रवृत्ति पर कड़ी आलोचना की और कहा कि वह ऐसे मुद्दों से निपटने के लिए दिशानिर्देश जारी करेगा। जस्टिस बीआर गवई और केवी विश्वनाथन की पीठ ने कहा, 'किसी का घर सिर्फ इसलिए कैसे गिराया जा सकता है क्योंकि वह आरोपी है? भले ही वह दोषी हो, फिर भी कानून द्वारा निर्धारित प्रक्रिया का पालन किए बिना ऐसा नहीं किया जा सकता है।'

हालांकि, उच्चतम न्यायालय ने यह स्पष्ट किया कि वह किसी भी अनधिकृत निर्माण या सार्वजनिक सड़कों पर अतिक्रमण को संरक्षण नहीं देगा। उत्तर प्रदेश की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने इस मामले में राज्य द्वारा पहले दायर हलफनामे का हवाला दिया। उन्होंने कहा कि हलफनामे में कहा गया है कि सिर्फ इसलिए कि किसी व्यक्ति पर किसी अपराध में शामिल होने का आरोप है, उसकी अचल संपत्ति को ध्वस्त करने का आधार कभी नहीं हो सकता। मेहता ने कहा कि राज्य ने कहा है कि किसी अचल संपत्ति का ध्वस्तीकरण केवल किसी प्रकार के उल्लंघन के लिए और संबंधित नगरपालिका कानून या क्षेत्र के विकास प्राधिकरणों को नियंत्रित करने वाले कानून में निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार हो सकता है। उन्होंने कहा कि किसी भी अचल संपत्ति को केवल इस आधार पर ध्वस्त नहीं किया जा सकता कि उस संपत्ति का मालिक या उस पर कब्जा करने वाला व्यक्ति किसी अपराध में शामिल था। पीठ ने कहा, 'यदि आप इस स्थिति को स्वीकार करते हैं, तो हम इसे दर्ज करेंगे और सभी राज्यों के लिए दिशा-निर्देश जारी करेंगे।' शीर्ष अदालत ने कहा, हम सार्वजनिक सड़कों पर किसी भी अनधिकृत निर्माण या अतिक्रमण को संरक्षण नहीं देंगे। यहां तक कि सार्वजनिक सड़कों पर बने मंदिरों को भी संरक्षण नहीं देंगे।' मेहता ने कहा कि इस मुद्दे पर राज्यों के साथ चर्चा की जाएगी ताकि इसका समाधान निकाला जा सके।

पीठ ने कहा, हालांकि यह कानून का सवाल है, लेकिन ऐसा देखा गया है कि इसका उल्लंघन अधिक किया जाता है। सॉलिसिटर जनरल ने कहा कि याचिकाकर्ताओं ने इस मुद्दे को इस तरह से पेश किया है जैसे कि मकानों को केवल इसलिए गिराया गया क्योंकि कुछ लोगों ने कोई अपराध किया था। मेहता ने कहा कि वह यह दिखा सकते हैं कि अधिकारियों ने तोड़फोड़ से काफी पहले ही नोटिस जारी किए थे। उन्होंने कहा, इस विवाद को मेरे (उत्तर प्रदेश) हलफनामे से खत्म किया जा सकता है, जो मैंने काफी समय पहले दाखिल किया था। इस मुद्दे पर दिशा-निर्देश तैयार करने की आवश्यकता पर बल देते हुए पीठ ने कहा कि यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि न तो कोई व्यक्ति किसी खामी का फायदा उठाए और न ही अधिकारी खामियों का फायदा उठाएं। याचिकाकर्ताओं में से एक की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता दुष्यंत दवे ने कहा, एक बयान दर्ज किया जाए कि पूरे देश में लोगों को बुलडोजर से न्याय नहीं दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि लगभग हर राज्य अब इसमें लिप्त हो रहा है और संपत्तियों को ध्वस्त कर रहा है। कुछ याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता सी यू सिंह ने कुछ अन्य राज्यों में संपत्तियों को ध्वस्त किए जाने का उल्लेख किया। पीठ ने कहा, हम पूरे देश के लिए दिशा-निर्देश तय करेंगे। शीर्ष अदालत ने कहा कि इन याचिकाओं में अपराध के आरोपी लोगों की अचल संपत्तियों को ध्वस्त किए जाने के बारे में शिकायतें उठाई गई हैं। पीठ ने कहा कि उत्तर प्रदेश ने इसका खंडन किया है और राज्य द्वारा एक हलफनामा दायर किया गया है, (शेष पृष्ठ 9)

भूस्खलन के चलते वैष्णो देवी जा रहीं दो तीर्थयात्रियों की मौत

पायनियर समाचार सेवा। जम्मू

जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में सोमवार को गुफा मंदिर तक जाने वाले हिमकोटि मार्ग पर बड़े पैमाने पर भूस्खलन की चपेट में आने से माता वैष्णो देवी जाने वाले कम से कम दो तीर्थयात्रियों की मौत हो गई और एक बच्चा घायल हो गया। घटना दोपहर करीब 2.15 बजे हिमकोटि इलाके में पंछी कॉलोनी के पास की बताई गई। तीर्थयात्री विशाल लोहे की छड़ की संरचना के नीचे दब गए क्योंकि यह बड़े शूटिंग पत्थरों के वजन के नीचे ढह गई थी। इलाके में बचाव अभियान चलाने के लिए तीर्थयात्रियों का यातायात कुछ देर के लिए रोक दिया गया। श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड (एसएमवीडीएसबी) की आपदा प्रबंधन टीमों को बचाव अभियान चलाने और घायलों को नजदीकी स्वास्थ्य देखभाल केंद्र में स्थानांतरित करने के लिए सक्रिय किया गया था। हालाँकि, तीर्थयात्रा ट्रैक के साथ पारंपरिक मार्ग से जारी रही। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार मृतक तीर्थयात्रियों की पहचान पंजाब के गुरदासपुर के ध्यानपुर गांव की सपना (27) और उत्तर प्रदेश के कानपुर की नेहा (23) के रूप में की गई है। घायल लड़की सानवी, जो कि मूल रूप से कानपुर की रहने वाली है, का अस्पताल में इलाज चल रहा था। (शेष पृष्ठ 9)

किसानों की आय बढ़ाने को केंद्र ने सात बड़े कार्यक्रमों का किया ऐलान

- कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के समग्र विकास के लिए करीब 14,000 करोड़ रुपए होंगे खर्च

नई दिल्ली में सोमवार को कैबिनेट के फैसलों के बारे में मीडिया को जानकारी देते केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव।

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

केंद्र सरकार ने किसानों की आय बढ़ाने के मकसद से सोमवार को कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के समग्र विकास के लिए लगभग 14,000 करोड़ रुपए के परिव्यय वाले सात बड़े कार्यक्रमों की घोषणा की। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने कृषि क्षेत्र से संबंधित सात बड़े कार्यक्रमों को मंजूरी दी, जिनमें 2,817 करोड़ रुपए का डिजिटल कृषि मिशन और फसल विज्ञान के लिए 3,979 करोड़ रुपए की योजना शामिल है। एक सरकारी बयान में कहा गया है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने किसानों के जीवनस्तर को बेहतर बनाने तथा उनकी आय बढ़ाने के लिए 13,966 करोड़ रुपए की कुल लागत वाली सात योजनाओं को मंजूरी दी। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मंत्रिमंडल में लिए गए इस निर्णय की संवाददाताओं को जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इन व्यापक कृषि कार्यक्रमों का उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना है।

इन कार्यक्रमों का ध्यान मुख्य रूप से कृषि क्षेत्र में अनुसंधान और शिक्षा, जलवायु बदलाव से तालमेल बैठाने, प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और डिजिटलीकरण के साथ बागवानी और पशुधन क्षेत्रों के विकास पर होगा। मंत्रिमंडल ने खाद्य एवं पोषण सुरक्षा कार्यक्रमों के लिए फसल विज्ञान को मंजूरी दी है और इसके लिए कुल 3,979 करोड़ रुपए का परिव्यय तय किया गया है। इस कार्यक्रम में छह बिंदुओं पर बल दिया गया है, जिनका उद्देश्य वर्ष 2047 तक जलवायु अनुकूल फसल विज्ञान और खाद्य सुरक्षा के लिए किसानों को तैयार करना है। ये छह बिंदु अनुसंधान और शिक्षा, पादप आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन, खाद्य और चारा फसल के लिए (शेष पृष्ठ 9)

स्वर्णिम कामयाबी

फ्रांस में चल रहे पैरालंपिक खेलों में पुरुषों के एकल एसएल3 बैडमिंटन मुकाबले में स्वर्ण पदक जीतने के बाद भारत के पैरा बैडमिंटन खिलाड़ी नितेश कुमार

छह घंटे की पूछताछ के बाद ईडी ने आप विधायक अमानतुल्लाह को किया गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली वक्फ बोर्ड में भर्ती से जुड़े धन शोधन मामले में प्रर्वतन निदेशालय ने आम आदमी पार्टी विधायक अमानतुल्लाह खान के छह घंटे की पूछताछ के बाद गिरफ्तार कर लिया। ईडी ने सोमवार को खान को राउज एवेन्यू की विशेष अदालत पेश करके दस दिन के हिरासत की मांग की। जांच एजेंसी ने दलील दी कि आप विधायक का मामले से जुड़े अन्य आरोपियों और सुबूतों के साथ आमना-सामना कराना जरूरी है। वहीं, अमानतुल्लाह खान ने अपनी गिरफ्तारी को चुनौती दी। मामले पर सुनवाई कर विशेष अदालत ने अपना निर्णय सुरक्षित रख लिया है। अमानतुल्लाह खान की ओर से पेश वकील ने मामले में उनकी गिरफ्तारी को चुनौती दी। एजेंसी ने राष्ट्रीय राजधानी के ओखला इलाके में खान के आवास पर तलाशी लेने के बाद आज सुबह 11 बजकर 20 मिनट पर उन्हें धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के प्रावधानों के तहत गिरफ्तार किया। ईडी ने अदालत को बताया कि तलाशी के दौरान खान से कुछ सवाल पूछे गए, लेकिन वह जवाब देने से बचते रहे और इसलिए उन्हें गिरफ्तार किया गया। ईडी ने कहा कि खान इस पूरे मामले में मुख्य आरोपी हैं। संघीय एजेंसी ने अदालत को बताया, अपराध की आय का इस्तेमाल संपत्ति खरीदने के लिए किया गया है और धन शोधन किया गया है। नकदी का भी इस्तेमाल किया गया है। एजेंसी को गुमराह करने की कोशिश की गई। एजेंसी ने खान पर सहयोग नहीं करने का (शेष पृष्ठ 9)

जाति जनगणना अहम, लेकिन चुनावी लाभ के लिए नहीं: संघ

पायनियर समाचार सेवा। पलक्कड़ (केरल)/ नई दिल्ली

ऐसे समय में जब कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्ष देश भर में जाति जनगणना कराने के लिए एनडीए सरकार पर दबाव डाल रहा है, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने सोमवार को कहा कि उसे जनगणना पर कोई आपत्ति नहीं है क्योंकि यह कल्याणकारी गतिविधियों के लिए उपयोगी हो सकती है, लेकिन उसने चुनावी लाभ के लिए इसके दुरुपयोग के प्रति भी चेताया। संघ ने यह भी कहा गया कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के उप-वर्गीकरण की दिशा में कोई भी कदम संबंधित समुदायों की सहमति के बिना नहीं उठाया जाना चाहिए। ये दावे करते हुए, आरएसएस प्रचार प्रमुख (मुख्य प्रवक्ता) सुनील अंबेकर ने पलक्कड़ में तीन दिवसीय सम्मेलन के बाद कहा, आरएसएस सोचता है कि निश्चित रूप से, सभी कल्याणकारी गतिविधियों के लिए विशेष रूप से ऐसे समुदायों या जातियों को लक्षित करने के लिए जो पीछे रह गए हैं - जिनके लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है - इसके लिए, यदि कभी-कभी सरकार को संख्याओं की आवश्यकता होती है, तो यह एक अच्छी तरह से स्थापित प्रथा है, वह (सरकार) पहले भी ऐसा डेटा ले चुकी है, और इसलिए वह इसे फिर से कर सकती है। लेकिन यह उन समुदायों और जातियों के कल्याण के लिए ही किया जाना चाहिए. इसे चुनाव के लिए राजनीतिक उपकरण के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। इसलिए हमने इसे सभी के लिए सावधानी के साथ सामने रखा है। उन्होंने कहा, एक हिंदू समाज के रूप में जाति और जाति संबंध संवेदनशील मुद्दे हैं। यह हमारी राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसलिए, इसे बहुत संवेदनशीलता से निपटाया जाना चाहिए न कि चुनाव या चुनावी प्रथाओं (शेष पृष्ठ 9)

सूचना प्रसारण मंत्रालय ने नेटफ्लिक्स के कंटेट प्रमुख को तलब किया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

सरकार ने वेबसीरीज 'आईसी-814 द कंधार हाईजैक' पर ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स के कंटेंट हेड को तलब किया है, जिसमें अपहर्ताओं के चित्रण को लेकर विवाद पैदा हो गया है और तर्क दिया गया है कि किसी को भी देश की भावनाओं के साथ खेलने का अधिकार नहीं है। आधिकारिक सूत्रों ने कहा कि सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने नेटफ्लिक्स इंडिया के कंटेंट प्रमुख को मंगलवार को तलब किया है और ओटीटी श्रृंखला के कथित विवादास्पद पहलुओं पर स्पष्टीकरण मांगा है, जिसमें 1999 में पाकिस्तान स्थित आतंकवादी संगठन हरकत-उल मुजाहिदीन द्वारा इंडियन एयरलाइंस की उड़ान के अपहरण को दर्शाया गया है। काठमांडू से दिल्ली जाने वाली इंडियन एयरलाइंस की उड़ान के अपहर्ताओं के चित्रण ने विवाद पैदा कर दिया है और दर्शकों के एक वर्ग ने अपराधियों के 'मानवीय' प्रक्षेपण पर आपत्ति जताई है।

एक अन्य आधिकारिक सूत्र ने कहा, किसी को भी इस देश के लोगों की भावनाओं के साथ खेलने का अधिकार नहीं है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता का हमेशा सम्मान किया जाना चाहिए। सूत्र ने विस्तार से बताए बिना कहा, क्या हमें किसी विदेशी व्यक्ति को हमारे सांस्कृतिक मूल्यों से खिलवाड़ करने की अनुमति देनी चाहिए। हैशटैग #BoycottNetfli&, #BoycottBollywood और #IC814 का उपयोग करते हुए, कई एक्स उपयोगकर्ताओं ने पोस्ट साझा करते हुए दावा किया कि फिल्म निर्माताओं ने कथित तौर पर एक निश्चित समुदाय से संबंधित आतंकवादियों को बचाने के लिए अपहर्ताओं के नाम बदलकर 'शंकर' और 'भोला' कर दिया।

भाजपा आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने कहा कि आईसी-814 विमान के अपहरणकर्ता खूंखार आतंकवादी थे, जिन्होंने अपनी मुस्लिम पहचान छिपाने के लिए उपनाम अपना लिया था। मालवीय ने एक्स पर पोस्ट किया, फिल्म निर्माता अनुभव सिन्हा ने उनके गैर-मुस्लिम नामों को आगे बढ़ाकर उनके आपराधिक इरादे को वैध बना दिया। दशकों बाद, लोग सोचेंगे कि हिंदुओं ने आईसी-814 का अपहरण कर लिया। मालवीय ने कहा, पाकिस्तानी आतंकवादियों, सभी मुस्लिमों, के अपराधों को सफेद करने का वामपंथी एजेंडा पूरा हुआ। यह सिनेमा की ताकत है, जिसका इस्तेमाल कम्युनिस्ट 70 के दशक से आक्रामक तरीके से करते रहे हैं। शायद पहले भी। उन्होंने कहा, यह न केवल लंबे समय में भारत के सुरक्षा तंत्र को कमजोर करेगा/उस पर सवालिया निशान लगाएगा, बल्कि दोष को धार्मिक समूह से भी हटा देगा, जो सभी रक्तपात के लिए जिम्मेदार है। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि जिन लोगों ने 'कश्मीर फाइल्स' जैसी फिल्मों को समाचार की सच्चाई के रूप में लिया, उन्हें नेटफ्लिक्स शो में आईसी 814 की घटनाओं को जिस तरह से दर्शाया गया है, उसमें गिरावट आ रही है। अब्दुल्ला ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा, अब अचानक वे स्क्रिप्ट में सटीकता और बारीकियां चाहते हैं।

मालीवाल हमला मामले में बिभव कुमार को जमानत

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल पर हमला मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सहयोगी बिभव कुमार को सोमवार को जमानत दे दी। न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां की पीठ ने निर्देश दिया कि कुमार को केजरीवाल के निजी सहायक के रूप में बहाल नहीं किया जाएगा और न ही मुख्यमंत्री कार्यालय में कोई आधिकारिक कार्यभार दिया जाएगा। (विस्तृत पृष्ठ 3)

सुरक्षित नोएडा : सेफ सिटी प्रोजेक्ट में जुड़े दो फीचर

भीड़ को हटाने और महिलाओं को मिलेगी विशेष सुरक्षा, शहर के 561 लोकेशन पर लगेंगे 2100 सीसीटीवी कैमरे

● परियोजना को लॉन्च करने से पहले जारी है कवायद, सभी पुलिस चौकियों में लगाई जा रही मानिटरिंग स्क्रीन

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

प्रतीकात्मक फोटो।

नोएडा शहर में सेफ सिटी परियोजना को लांच करने से पहले इस योजना में दो नए फीचर को जोड़ा जा रहा है। जिससे सड़क से भीड़ को तितर बितर करने और अकेली महिला या युवती को सुरक्षा दिया जा सके। इसके लिए सभी पुलिस चौकियों में एक मानिटरिंग स्क्रीन लगाई जाएगी। कैमरे की जद में आते ही स्क्रीन पर अलग-अलग रंग में ये शो हो जाएगा कि कहा पर भीड़ जमा है और कहा पर महिला अकेली खड़ी है। हालांकि सभी पोल के पास सेव अवर सोल भी लगाया जाएगा। इसमें लाल बटन दबाते ही चौकी में घंटी बजेगी। चौकी में लगने वाली इन स्क्रीन का लाइव डेटा कंट्रोल रूम में लगे स्क्रीन पर दिखेगा। जिससे दोनों तरफ से तेजी से कार्यवाही की सकेगी। प्राधिकरण के डीजीएम राजेश कुमार ने बताया कि इससे मोब लिंचिंग , भी? के कारण होने वाले उपद्रव को रोका जा सकेगा। साथ ही लेट नाइट शिफ्ट पूरी कर घर आ रही महिलाओं को सुरक्षा दी जा सकेगी। 24 घंटे मॉनिटरिंग की जाएगी। उन्होंने बताया यहां लगने वाले कैमरे एक साथ कई चेहरों को पढ़ सकेगा। उनका डेटा सेव कर सकेगा। इसलिए यदि उपद्रव होता है तो उपद्रवियों की पहचान हो सकेगी। प्राधिकरण अधिकारियों के मुताबिक शहर में सेफ सिटी प्रोजेक्ट के तहत 561 लोकेशन पर अतिरिक्त 2100 सीसीटीवी कैमरा लगाया जाएगा।

यह कैमरे नाइट विजन व फेस डिटेक्शन कैमरे होंगे, जो इंटीग्रेटेड सिक्योरिटी एंड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम (आइएसटीएमएस) के कैमरों से बिल्कुल अलग होंगे। मॉनिटरिंग के लिए अलग से कंट्रोल रूम भी बनाया जाएगा। इनका वाहनों के चालान से कोई संबंध नहीं होगा, लेकिन सुरक्षा के तहत वाहनों की नंबर प्लेट व उसमें बैठे लोग भी साफ तौर पर कैमरे की नजर से देखा जा सकेगा। बदमाशों का डाटा पुलिस के पास पहले से है। ऐसे में कोई भी बदमाश यदि इन कैमरों के पास गुजरता है तो उसकी लाइव लोकेशन और पूरा डाटा कंट्रोल रूम में दिखाई देगा। सेफ सिटी के कंट्रोल रूम सीधे पुलिस मुख्यालय में बने कंट्रोल रूम से जुड़े होंगे।

कोई भी सूचना मिलने पर तत्काल नजदीकी पुलिस स्टेशन, पुलिस चौकी, पीआरवी, डायल-112 को जानकारी दी जा सकेगी। इस योजना के तहत पुलिस कंट्रोल रूम की तर्ज पर थाने चौकी में भी मॉनिटरिंग स्क्रीन लगाई जाएगी। इन स्क्रीन को कंट्रोल रूम से एक्सेस भी दिया जाएगा, जो वहां पर दो ही घटनाओं पर अलग-अलग कलर में ब्लिंग करेगा। परियोजना के तहत शहर में सेव अवर सोल (एसओएस) भी लगाए गए है, जिसमे आपातकाल के समय आप तुरंत पुलिस को किसी भी घटना की जानकारी दे सकते है।

मोदीनगर में पाचवीं की छात्रा के साथ पड़ोसी ने किया रेप

पायनियर समाचार। गाजियाबाद।

गाजियाबाद के मोदीनगर की कॉलोनी के एक घर में घुसकर कक्षा पांच की छात्रा के साथ पड़ोसी युवक ने दुष्कर्म किया। विरोध करने पर आरोपी ने छात्रा को मारपीट कर घायल कर दिया। पुलिस ने दुष्कर्म, पॉक्सो एक्ट और एससीएसटी एक्ट में मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

नगर की एक कॉलोनी निवासी व्यक्ति की 12 साल की बेटी कक्षा पांच की स्टूडेंट है। बताया जा रहा है कि पिता बाहर गए थे और मां कमरे में सो रही थी। पड़ोसी युवक बंटी वर्मा अचानक घर में आ गया। आरोप है कि इसके बाद दूसरे कमरे में अकेली सो रही बच्ची को दबोच लिया। इसके बाद युवक ने बच्ची के साथ दुष्कर्म किया। दुष्कर्म का विरोध करने पर आरोपी ने छात्रा को मारपीट कर घायल कर दिया। चीख सुनकर मौके पर पहुंची बच्ची की मां को देखकर आरोपी फरार हो गया। बच्ची की मां ने बताया कि आठ माह पहले भी आरोपी ने बच्ची के साथ अश्लील हरकत की थी। उस समय कॉलोनी के लोगों ने समझौता करा दिया था।

नोएडा में चलती कार में गर्भवती के साथ गैंगरेप

नोएडा। गाजियाबाद के खोड़ा कॉलोनी की गर्भवती महिला के साथ 3 लोगों ने चलती कार में गैंग रेप किया। आरोपी महिला को नोएडा के सेक्टर-63 से झांसा देकर ले गए थे। दिल्ली पुलिस ने जीरो एफआईआर दर्ज करके विवेचना के लिए नोएडा भेजा। थाना सेक्टर-63 पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है। 20 साल की पीड़िता ने दर्ज कराई एफआईआर में बताया कि वह ब्वॉयफ्रेंड के साथ लिव-इन में रहती है। करीब 4 महीने प्रेग्नेंट है।

गाजियाबाद के मुख्य मार्गों पर नहीं चलेंगे ई-रिक्शा

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

● जाम और सड़क हादसे रोकने के लिए लगाई गई रोक, चलाने वालों का होगा चालान

गाजियाबाद के कई रूट पर ई-रिक्शा चलने पर पाबंदी लगा दी गई है। यह पाबंदी 2 सितंबर सोमवार से लागू हो गई। इन रूट पर ई-रिक्शा सुबह 7:00 से रात के 10:00 तक नहीं चलेंगे। इसके लिए पुलिस भी लगाई जा रही है। अगर ई-रिक्शा इस रूट पर चलते दिखाई दिए, तो उन पर चालान के साथ सीज किया जाएगा।

मुख्य मार्ग पर वाहनों की रफ्तार पर ब्रेक ना लगे और सड़क हादसों से बचा जा सके। इसीलिए यह पाबंदी लगाई गई है। गाजियाबाद में एडीसीपी ट्रैफिक पीयूष कुमार सिंह ने बताया कि 2 सितंबर सोमवार से कुछ रूट पर ई-रिक्शा के चलने पर पाबंदी लगाई गई है। जिन रूट पर ऐसा किया गया है उसमें पुराना बस अड्डा से डासना फ्लाईओवर तक है। जो आरडीसी फ्लाईओवर, पुलिस आयुक्त कार्यालय, कलेक्ट्रेट कट, हापुड़ चुंगी, पुलिस लाइन, गोविंदपुरम पुलिस चौकी पर ई रिक्शा का परिचालन सुबह 7.00 से रात्रि 10.00 बजे तक बंद रहेगा। एडीसीपी ट्रैफिक बताते हैं कि ई-रिक्शा का मुख्य उद्देश्य लिंक रोड पर चलने के लिए किया गया है। जैसे सोसायटी से मुख्य मार्ग तक लोगों को ला सके। लेकिन मुख्य मार्ग पर उनके चलने से वाहनों के रफ्तार पर ब्रेक लगता है। जाम लगता है। साथ ही सड़क हादसे भी होते हैं।

इस सड़क पर ई रिक्शा ना चलें, इसके लिए पहले से तैनात पुलिस बल तो रहेगा ही। साथ ही कुछ पॉइंट्स पर अलग से पुलिस बल तैनात किया जा रहा है।

साहिबाबाद मंडी में चला बुलडोजर

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

गाजियाबाद की साहिबाबाद मंडी के अंदर सोमवार को पुलिस प्रशासन के अधिकारियों ने जेसीबी मशीन के साथ किसानों के बैठने के लिए आवंटित की गई जमीन को कब्जा मुक्त कराया। दरअसल सरकार की तरफ से मंडी में 11 शेड किसानों के लिए बनाए गए थे, लेकिन उन शेड पर मंडी के ही दुकानदार और आढ़तियों ने कब्जा कर लिया था।

मंडी सचिव सुनील शर्मा ने बताया कि लंबे समय से यह कब्जा चल रहा था इसे खाली करने को लेकर कई बार नोटिस भी जारी किए गए। लेकिन कार्यवाही नहीं हुई। सोमवार को पुलिस प्रशासन पूरी तैयारी के साथ था। जेसीबी का पंजा लगातार चलता हुआ दिखाई दिया। जेसीबी ने अवैध चबूतरों के ऊपर बने टीन शेड को तोड़ा। मंडी में दुकानदारों ने भी कॉर्पोरेट किया। कुछ जमीन पहले ही खाली कर दी गई थी। लेकिन जिस जमीन पर कब्जा था, उस पर आज बुलडोजर कार्रवाई की गई है। कुल मिलाकर अब किसानों को बैठने के लिए उनकी जगह वापस दिला दी गई है। अब किसान मंडी में आकर अपनी जगह पर अपनी फसल को रखकर आसानी से बेच सकता है।

पुलिस भर्ती : दो युवकों को गड़बड़ी के आरोप में धरा

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

उत्तर प्रदेश में पुलिस भर्ती परीक्षा में इस बार सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम रहे। नोएडा में भी कुछ ऐसे ही इंतजाम देखने को मिले। जिसके चलते दो युवकों को दादरी पुलिस ने गिरफ्तार किया। यह लोग गड़बड़ी करके परीक्षा केंद्र में जाने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन बायोमेट्रिक चेकिंग के दौरान दोनों युवकों की गड़बड़ी सामने आ गई। पुलिस ने उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया।

पुलिस ने उन दोनों आरोपियों को रेलवे स्टेशन के पास से गिरफ्तार कर लिया है। 31 अगस्त को उत्तर प्रदेश पुलिस की दादरी मिहिर भोज कॉलेज में परीक्षा शुरू होने वाली थी। जिसको लेकर परीक्षार्थियों की परीक्षा केंद्र में एंट्री के दौरान दो युवकों की बायोमैट्रिक चैकिंग के दौरान गड़बड़ी मिली। उनकी जन्मतिथि दिए गए कागजातों से अलग आ रही थी। पुलिस द्वारा जानकारी करने पर पता चला कि इन लोगों के द्वारा जन्मतिथि बदलकर दोबारा से हाई स्कूल पास की गई थी। इस दौरान हाथरस निवासी पुष्पेंद्र और रोताश विहार निवासी अश्वनी के खिलाफ दादरी थाने में मुकदमा दर्ज किया गया। ड्यूटी पर तैनात उप निरीक्षक की तहरीर पर दोनों आरोपियों पर बीएनएस रजिस्टर कराया था।

ट्रेन की चपेट आने से दो मामलों में दो लोगों की मौत

नोएडा। जनपद के विभिन्न जगहों पर दो लोग ट्रेन की चपेट में आ गए। इस घटना में उनकी मौत हो गई है। पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह के मीडिया प्रभारी ने बताया कि थाना कासना क्षेत्र में एक 35 वर्षीय अज्ञात व्यक्ति ट्रेन की चपेट में आ गये। इस घटना में उसकी मौत हो गई। थाना कासना पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। उन्होंने बताया कि पुलिस शव की पहचान कराने का प्रयास कर रही है। उन्होंने बताया कि थाना दादरी रेलवे स्टेशन पर विशाल कुमार पुत्र धर्मेंद्र सिंह उम्र 24 वर्ष ट्रेन की चपेट में आ गए। उन्होंने बताया कि इस घटना में उनकी मौत हो गई है। मीडिया प्रभारी ने बताया कि जीआरपी पुलिस में तैनात उप निरीक्षक विपिन कुमार ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

अश्लील फोटो के नाम पर नगदी-गाड़ी की ठगी

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

कोतवाली दादरी क्षेत्र के सेक्टर जूं थर्ड में एक युवती से मिलने आए युवक के साथ युवती के अश्लील फोटो, वीडियो बनाकर वायरल करने की धमकी देकर 49 हजार रुपये और गाड़ी लेकर छोड़ा गया। इस मामले में युवती समेत अज्ञात के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई गई है।

पुलिस ने बताया कि मेरठ के जुलेढा गांव निवासी अंकुर शर्मा फेसबुक पर एक युवती से दोस्ती के बाद 29 अगस्त को मेरठ से ग्रेटर नोएडा मिलने आए थे। उन्होंने गाड़ी अंसल प्लाजा की पार्किंग में खड़ी कर ऑटो से नट की मडैया युवती से मिलने पहुंचे। जिसके बाद जूं सेक्टर की लाल बिल्डिंग के मकान नंबर 85 में लेकर पहुंचे। जहां तीन अज्ञात लोगों ने अंकुर शर्मा के कपड़े उतरवाए तथा युवती के साथ फोटो और वीडियो बनाकर उसे धमकाकर नगदी और गाड़ी ठग लिया।

रेलवे फाटक क्षतिग्रस्त करने वाला गिरफ्तार

नोएडा। मारीपत रेलवे स्टेशन के समीप के रेलवे फाटक को छोटा हाथी गाड़ी टक्कर मारकर तोड़ने वाले गाड़ी को कब्जे में लेकर पुलिस ने चालक को गिरफ्तार किया है । घटना की रिपोर्ट दर्ज कार्रवाई की गई है। आरपीएफ प्रभारी निरीक्षक एसके वर्मा ने बताया कि रविवार को रेलवे फाटक बंद करते समय छोटा हाथी से क्षतिग्रस्त करने वाले को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,

सम्मान कैपिटल लिमिटेड (CIN:L65922DL2005PLC136029) (पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के नाम से जाना जाता था) प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते अधोहस्ताक्षरी ने सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **दीपक जैन और आरती जैन** को **24.12.2021** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. HHLVAS00253188** की राशि **रू. 15,27,438.01 (रूपये पंद्रह लाख सत्ताईस हजार चार सौ अड़तीस और एक पैसा मात्र)** और **24.12.2021** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60 दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी।

धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **30.08.2024** को संपत्ति पर **आधिपत्य** कर लिया है ।

विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 15,27,438.01 (रूपये पंद्रह लाख सत्ताईस हजार चार सौ अड़तीस और एक पैसा मात्र) 24.12.2021** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **सम्मान कैपिटल लिमिटेड (पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के नाम से जाना जाता था)** के आधीन होगा।

उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण

आवासीय फ्लैट नंबर एसएफ-4, एमआईजी, दूसरी मंजिल, पीछे दाहिनी हाथ की ओर, जिसका कुल कवर्ड एरिया 700 स्क्वे. फीट यानी 65.03 स्क्वे. मीटर्स, छत के अधिकार के साथ, प्लॉट नंबर एमएम-43, पर निर्मित,"डीएलएफ अंकुर विहार", गाँव लोनी, परगना और तहसील लोनी, जिला गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश ।
और सीमा परिबध्द हैं:

पूर्व : प्लॉट नं. एमएम-44 — पश्चिम : फ्लैट नं. एसएफ-3 (एल.आई.जी)
उत्तर : प्लॉट नं. बी-2/20 — दक्षिण : सामान्य पैसेज और सीढियाँ उसके बाद फ्लैट नं. एस.एफ-1 (एम.आई.जी.)

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 30.08.2024 — सम्मान कैपिटल लिमिटेड
स्थान : गाज़ियाबाद — (पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के नाम से जाना जाता था)

ADDI INDUSTRIES LIMITED
CIN: L51109DL1980PLC256335
Registered Office: A-104, Third Floor, Okhla Industrial Area Phase – II, New Delhi-110020
Phone: 011-45025469, **email:atul.addi@gmail.com, addiind@gmail.com**
Website: www.addiindustries.com

INFORMATION REGARDING 42nd ANNUAL GENERAL MEETING TO BE HELD THROUGH VIDEO CONFERENCING (VC) / OTHER AUDIO VISUAL MEANS (OAVM), RECORD DATE AND FINAL DIVIDEND

Dear Members,

The 42nd Annual General Meeting ('AGM') of the members of **ADDI Industries Limited** ("the Company") will be held on **Monday, 30th September, 2024 at 9:00 A.M.** through Video Conference ('VC') / Other Audio Visual Means ('OAVM') facility in compliance with General Circular 10/2022 issued by the Ministry of Corporate Affairs (MCA) dated 28th Deccember,2022, SEBI circular No. SEBI/HO/CFD/PoD-2/PICIR/2023/4 dated 05th January, 2023 and SEBI Circular No. SEBI/HO/CFD/CFD-PoD-2/P/CIR/2023/167 dated 07th October, 2023 (hereinafter collectively referred to as "the Circulars") and all other applicable laws, to transact the business that will be set forth in the notice of the Meeting. In accordance with the aforesaid Circular(s), the Notice of 42nd AGM and Annual Report for the Financial Year 2023-24 will be sent only through electronic mode to those members, whose e-mail address is registered / available with the Company / Depository Participant(s). Shareholders holding shares in dematerialized mode are requested to register their email address and mobile numbers with their relevant depositories through their depository participants and shareholders holding shares in physical mode are requested to furnish details to the Company or Company's Registrar and Share Transfer Agent (RTA) at **addiind@gmail.com** or **beetalrta@gmail.com**. The Notice of the 42nd AGM and Annual Report 2023-24 will also be available on the Company's website at **www.addiindustries.com** and on the website of the Stock Exchange i.e. BSE Limited at **www.bseindia.com.**

The members will have an opportunity to cast their vote electronically on the businesses set out in the AGM Notice through remote e-voting / e-voting during the AGM. The detailed procedure for remote e-voting / e-voting during the AGM by Members holding shares in Physical mode and Members, who have not registered their e-mail address with the company, will be provided in the Notice of AGM.

Members may have note that the Board of Directors at its meeting held on 13th August, 2024 has recommended a final dividend of Rs. 1.25/- per equity share of the Face Value of Rs. 5/- each. The dividend, once approved by the Members in the ensuing AGM, will be paid on/or after 1st October, 2024 electronically to those shareholders who have updated their bank account details. For shareholders who have not updated their bank account details, dividend warrants / demand drafts will be sent to their registered address. Payment of dividend will be subject to deduction of Tax at Source (TDS) at applicable rates.

Members whose shareholding is in dematerialized mode are requested to notify any change in address or bank account details to their respective depository participant(s) Shareholders whose shareholding is in physical mode are requested to opt for the National Electronic Clearing System (NECS) mode to receive dividend on time in line with the Circulars. We urge shareholders to utilize the NECS for receiving dividends. Members who have not registered their e-mail address with the Company / Depository Participant(s) are requested to register their e-mail address as per Instructions given below for the purpose of obtaining e-voting User ID & Password, Notice of AGM and Annual Report 2023-24 and updation of Bank Account Details:

Physical Holding	Register/update the details in prescribed Form ISR – 1, and other relevant forms with RTA of the Company Beetal Financial Computer Services Private Limited at **beetalrta@gmail.com.**
Demat Holding	Please update e-mail address / Bank Account Details with your Depository Participants (DP).

In Terms of the Section 91 of the Companies Act 2013, the Company has fixed the record date 23rd September, 2024 for the purpose of determining the members entitled for receiving dividend for the financial year 2023-24 and the said notice is also available on the website of the Company at **www.addiindustries.com.**

For Addi Industries Limited
Sd/-
Taranjeet Kaur
Company Secretary, Membership No. 8991
Date : 02.09.2024
Place : New Delhi

PUBLIC NOTICE

Shri. Sandeep Sharma S/o Rajender R/o E-1/306, Shiv Ram Park, Nangloi Nilothi, West Delhi, Delhi-110041.he is Son of my client Shri Rajender S/o Shyam lal, R/o L-94, Shiv Ram Park, Gali No.15 Nangloi, West Delhi, Delhi- 110041.The said "SON" Shri. Sandeep Sharma his wife (Vineeta) and minor child have become disobedient and are harassing my said client for their greed from last several years. Therefore, my above said client Shri Rajender has severed all kinds of relationship with his "SON" Shri. Sandeep Sharma his wife and children have disowned them and debarred them from inheriting any kind of movable and immovable property owned by my above said client. Any person dealing with them will do so at their own risk.

VIPIN & ASSOCIATE ADVOCATE, Ch. No. 628, 6th floor Dwarka Courts, New Delhi-110075

PUBLIC NOTICE

The general public is hereby informed that my client, Sh. Ramesh S/o Maman and his wife Smt. Poonam, both R/o G-153, J.J. Camp Tigri, South Delhi, Delhi-110062 have terminated/ severed all relations with their son Sh. Sagar and his wife and childredn if any due to misconduct and chaos in his life. Both of my above named clients have also disowned and debarred his said son, son's wife and children if any from all movable and immovable properties. Anybody dealing with Sh. Sagar and his legal heirs will do at his/her/their own risk and responsibilities and my client will not be responsible for any act, deed or dealing involving Sh. Sagar.

Place: New Delhi, Date : 02.09.2024

ADEEB ARSHAD (Advocate)
Enrollment No. UP13235/22

PUBLIC NOTICE

My Client Sh. Bhushan Kumar S/o Sh. Ishwar Lal R/o H.No. A.21, Gali No.1, Shyam Nagar, Govind Pura, Krishna Nagar, Delhi-51 severed all his social relations with his son Yash S/o Sh. Bhushan Kumar R/o H.No. A.21, Gali No.1, Shyam Nagar, Govind Pura, Krishna Nagar, Delhi-51 due to his disobedient behaviour and harassment towards my client. My client disowned him from his all movable and immovable properties. My client shall not be responsible for any act and conduct done by above-said disowned person with any person in future.

Hridya Aggarwal (Advocate) Ch. No.K-155, Near Gate No.2, Tis Hazari Courts, Delhi-54

LOST & FOUND

I, Shashi Narula W/o Harish Narula, D-70, Near Central Bank of India Gulmohar Park Delhi-110049. I have Lost My Original documents is DDA Possession Letter, Demand Letter, NOC & other all pepers, of the DDA Built Shop No-2, CSC Niti Bagh, New Delhi First Floor, DDA File No F.-7(1)/89/IMPL.

सार्वजनिक नोटिस

आम जनता को यह सूचित किया जाता है कि श्री तनुज गुलाटी निवासी बीजी-6/298सी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063; प्लॉट नंबर 21,शिवाजी एन्क्लेव, नई दिल्ली-110027 के पूर्ण और वास्तविक मालिक हैं और ये प्लॉट उनके कब्जे में हैं। इस संपत्ति को बेचने का एकमात्र अधिकार उनके पास है। उपरोक्त उल्लिखित संपत्ति के संबंध में कोई अन्य व्यक्ति/पार्टी सौदा करने के लिए अधिकृत नहीं है।

सार्वजनिक सूचना

आम जनता को सूचित किया जाता है कि श्री श्याम किशोर यादव जो बिना छत और छत अधिकार के ऊपरी भूतल, प्लॉट नंबर ई-2/105, पुराना नंबर 105, क्षेत्रफल 37 1/2 वर्ग गज, ब्लॉक-ई-2, गली नंबर 3, शास्त्री नगर, दिल्ली के मालिक हैं, श्रीमती नीरू गोस्वामी द्वारा निष्पादित बिक्री विलेख दिनांक 21.12.2019 (दस्तावेज संख्या 12530) के माध्यम से मालिक है, और इसे मुथूट होमफिन (इंडिया) लिमिटेड (एमएचआईएल) द्वारा वित्तपोषित और बंधक किया जाना है। उक्त संपत्ति के संबंध में श्रीमती नीरू गोस्वामी के पक्ष में श्रीमती मनीषा शर्मा द्वारा निष्पादित मूल बिक्री विलेख दिनांक 04.10.2018 (दस्तावेज संख्या 11289)खो गई है/गुम हो गई है और उसी के लिए FIR No. 2076194/2024 दिनांक 31.08.2024 के तहत दिल्ली में खोए गए लेख/दस्तावेज के संबंध में दर्ज की गई है। SO No: 430/2014 दिल्ली पुलिस है। बैंक/एनबीएफसी की आवश्यकताओं का अनुपालन करने के लिए, हम यह सार्वजनिक सूचना देते हैं कि यदि किसी व्यक्ति के पास उक्त संपत्ति पर किसी भी प्रकार का दावा/अधिकार/स्वामित्व/हित/बंधक बनाने में कोई आपत्ति है तो वह आज से 7 दिनों के भीतर अपनी आपत्तियों के बारे में नीचे दिए गए पते पर लिखित रुप में सूचित कर सकता है। ऐसा न करने पर यह माना जाएगा कि उक्त संपत्ति सभी प्रकार के भार, ग्रहणाधिकार आदि से मुक्त है।

लुसेम लीगल एलएलपी
बी-93बी, द्वितीय तल,एसबीआई बैंक के सामने, सेक्टर 2, नोएडा, यूपी-201301, संपर्क **#0120-4269379**

PUBLIC NOTICE

It is hereby informed to the general public that Nikhil Negi & father Vijay Singh Negi had booked a residential flat Tower C-11, Upper Ground Floor, H.No-01, in the project being developed by Ms/ PRATEEK REALTORS INDIA PVT. LTD. Siddharth Vihar, Ghaziabad (hereinafter referred to as "the Company") with the name of "Grand Carnesia" at plot 4/bs-01 & 4/bs 05. That Mr. Vijay Singh Negi has unfortunately expired on 07th May, 2021 and Nikhil Negi S/o Late Vijay Singh Negi R/o Ward No.-6, Sainik Basti Nagar Ghar Rani-pokhari, Dehradun (Uttrakhand) 248145 have approached and applied to the Company being the legal heir of Late Vijay Singh Negi. In case there is/ are any other legal heirs of Vijay Singh Negi, the said person is required to approach the Company along with the relevant documents within 15 days from the publication of this notice. In case no name(s) is/ are received by the Company Nikhil Negi S/o Late Vijay Singh Negi R/o Ward No.-6, Sainik Basti Nagar Ghar Ranipokhari, Dehradun (Uttrakhand) 248145 will be registered as legal heir of Vijay Singh Negi and no objection would be accepted thereafter.

महाविद्यालय में सत्र 2024-25 हेतु कैन्टीन हेतु कुटेशन आमंत्रण

महाविद्यालय में कैण्टीन संचालन हेतु ऐसे व्यक्तियो से कुटेशन आंत्रित किए जाते हैं जिनको कि संबंधित क्षेत्र में कम से कम 10 वर्ष का अनुभव हो। इस विज्ञापन के प्रकाशित होने के सात कार्य दिवस की अवधि में महाविद्यालय कार्यालय में सीलबन्द लिफाफे में जमा कर सकते है । कैण्टीन संचालन हेतु सेवा शर्ते महाविद्यालय कार्यालय से दिनांक 07/09/2024 तक प्राप्त की जा सकती हैं।

सही/-
समन्वयक कैन्टीन समिति — **सही/-**
बी0एस0ए0 कॉलेज, मथुरा — **प्राचार्य**
बी0एस0ए0 कॉलेज, मथुरा

PUBLIC NOTICE

Information is given to general public at large that Muskan Madhesia & Om Prakash who is/are purchasing the Built-up Third Floor without Roof rights, Part of Prop. Bearing No. F-130, area meas. 50 sq. yds., out of total 104 sq. yds. Kh No. 82 & 83, Khata No. 28, Khatoni No. 138, Vill. Masjid Moth, now known as Gautam Nagar, New Delhi-110049 from Rajendra Kumar S/o Har Prasad who was the owner by virtue of Regd. GPA dated 07.12.1992 (Doc. No. 3675), ATS & Will executed by Joginder Singh Intend to mortgage the same against the financial assistance from Shubham Housing Development Finance Company Limited. Original ATS & Will is missing in favour of Rajendra Kumar S/o Har Prasad and same are not available with Seller. To comply the requirements of BANK/NBFC, we give this public notice that if any person(s) having any objection regarding ownership and/ or creating mortgage of the said property is/are hereby requested to intimate in writing to the undersigned within 07 days at below address.

NCR LAW ASSOCIATES (Advocate) & Consultants A-98, Sector-9, New Vijay Nagar, Ghaziabad, (U.P.)-201009

सार्वजनिक सूचना

बिहार बंधु कोआपरेटिव ग्रुप हाऊसिंग सोसाइटी लिमिटेड, फ्लैट न०3 पाकेट-5 DDA फ्लैट सैक्टर-12, द्वारका, नई दिल्ली-110078

DCS नियम 2007 की धारा 19(2) के अनुसरण करते हुए दिल्ली की जनता से जो कि DCS नियम 2007 की धारा 19 व 20 की सभी शर्तो को पूरा करती है, बिहार बंधु CGHS Ltd(Regd. No.940-GH) में त्रेतालिस(43) रिक्त सदस्यता जो कि सदस्यों के सोसाइटी में त्यागपत्र देने के कारण उत्पन्न हुई है, के लिए आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। इच्छुक व्यक्ति को, सोसाइटी आफिस-205 कृष्णा माल,प्लाट-5 सेक्टर-12 द्वारका नई दिल्ली-110078 से प्रात: 10 बजे से दोपहर 12:00 बजे के बीच नि:शुल्क आवेदन पत्र प्राप्त कर, उसे भरकर उसके साथ 200,110/- रुपये का (जिसमें अंशराशी,प्रवेश शुल्क,भूमि राशी शामिल है),बिहार बंधु कोआपरेटिव ग्रुप हाऊसिंग सोसाइटी लिमिटेड के नाम का पे आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट के साथ,इस सूचना के छपने के 4 दिनों के भीतर जमा करना होगा ।

सचिव-बिहार बंधु सी.जी.एच.एस लिमिटेड

PUBLIC NOTICE

Information is given to general public at large that our client Mr. Amit Chauhan s/o Mr. Umesh is the owner of Residential House area measuring 177 sq. yards, i.e. 148 sq. meters, khasra number 193, Village Asdullapur, Pargana Dadri, Tehsil and District- Gautam Budh Nagar UP by virtue of Gift Deed dated 31.08.2024 (Doc. No. 26200) registered in SR-Greater Noida. There is no Deed executed or no transaction executed in between khatauni and gift deed. There is no third party interest in respect of said property, and our client intend to mortgage the same against the financial assistance from AU Small Finance Bank Ltd. To comply the requirements of BANK/NBFC, we give this public notice that if any person(s) having any objection regarding ownership and/or creating mortgage of the said property is/are hereby requested to intimate in writing to the undersigned within 03 days at below address.

NCR LAW ASSOCIATES Advocates & Consultants A-98, Sector-9, New Vijay Nagar, Ghaziabad, (U.P.)-201009.

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,

सम्मान कैपिटल लिमिटेड (पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड जाना जाता था)ने सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 (2002 का 54) ("उक्त एक्ट") और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 (उक्त रूल्स) के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार, गारंटर और गिरवीकर्ता **ललित कुमार और देवेन्द्र पाठक** को कर्ज खाता नं. **HHLNOD00439390** के तहत दिनांक **18.09.2021** की सूचना में **26.06.2021** तक उल्लिखित राशि जो **रू.21,72,023.70 (रूपए इक्कीस लाख बहत्तर हजार तेईस और सत्तर पैसे मात्र)** है को उक्त सुविधा के संबंध में **27.06.2021** से भुगतान / वसूली तक अतिरिक्त ब्याज और दंडात्मक ब्याज के साथ, उक्त नोटिस की प्राप्ति की तारीख से 60 दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी ।

और जब कि बाद में, **आईएचएफएल** ने दिनांक **30.09.2021** के असाइनमेंट एग्रीमेंट के माध्यम से **आईएचएफएल** द्वारा कर्जदार / गारंटर / गिरवीकर्ता को दी गई सुविधाओं से उत्पन्न कर्जदार /गारंटर / गिरवीकर्ता द्वारा देय और देय ऋणों के संबंध में अपने सभी अधिकार, शीर्षक, ब्याज और लाभ अंतर्निहित प्रतिभूतियों के साथ **ईएआरसी ट्रस्ट - एससी 439 के ट्रस्टी** के रूप में **एडलवाइस एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड** को सौंप दिए हैं ।

इसके बाद में, **एडलवाइस एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड** ने **ईएआरसी ट्रस्ट - एससी 439** के ट्रस्टी के रूप में दिनांक **02.11.2023** के असाइनमेंट एग्रीमेंट के माध्यम से **आईएचएफएल** द्वारा कर्जदार / गारंटर / गिरवीकर्ता को दी गई सुविधाओं से उत्पन्न कर्जदार / गारंटर / गिरवीकर्ता द्वारा देय और देय ऋणों के संबंध में सिक्योरिटी रिसिप्ट धारको के लाभ के लिए **एआरसीआईएल-सीपीएस-IV, ट्रस्ट ("एआरसीआईएल")** के ट्रस्टी के रूप में अपनी क्षमता में कार्य करते हुए अपने सभी अधिकार, शीर्षक, ब्याज और लाभ अंतर्निहित प्रतिभूतियों के साथ **एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी (इंडिया) लिमिटेड** को सौंप दिए है । इसलिए, उक्त असाइनमेंट को ध्यान में रखते हुए, **एडलवाइस एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड** के स्थान पर अब **एआरसीआईएल** को रखा गया है और **एआरसीआईएल** कर्जदार / गारंटर / गिरवीकर्ता के खिलाफ सभी और किसी भी कार्यवाही को शुरू करने / जारी रखने और वित्तीय दस्तावेजों के तहत अधिकारों और लाभों को लागू करने की हकदार होगी, जिसमें कर्जदार / गारंटर / गिरवीकर्ता द्वारा प्राप्त की गई उक्त सुविधाओं के लिए निष्पादित और बनाए गए सुरक्षा हित को लागू करना भी शामिल है ।

एआरसीआईएल को उक्त धनराशि चुकता करने में कर्जदार / गारंटर / गिरवीकर्ता के विफल रहने पर एतद्द्वारा विशेषत: कर्जदार / गारंटर / गिरवीकर्ता और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, **एआरसीआईएल** के प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत उसे प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए **28.08.2024** पर, नीचे वर्णित सुरक्षित संपत्तियों पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है ।

विशेषत: कर्जदार / गारंटर / गिरवीकर्ता और सर्व सामान्य जनता को निचे उल्लेखित सुरक्षित संपत्तियों के साथ लेनदेन न करने के लिए आगाह किया जाता है और सुरक्षित संपत्तियों के साथ कोई भी लेनदेन **03.06.2024** तक **रू. 26,81,276.27 (रूपए छब्बीस लाख इक्यासी हजार दो सौ छिहत्तर और सत्ताईस पैसे मात्र)** की राशि के उक्त सुविधा के संबंध में **04.06.2024** से भुगतान / वसूली तक सभी आकस्मिक लागतों, शुल्कों और खर्चों के साथ संविदात्मक दर पर अतिरिक्त ब्याज के साथ **एआरसीआईएल** के शुल्क के अधीन होगा ।

नीचे उल्लिखित सुरक्षित संपत्तियों को छुड़ाने के लिए उपलब्ध समय के संबंध में कर्जदार / गारंटर / गिरवीकर्ता का ध्यान उक्त अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के प्रावधानों की ओर दिलाया जाता है ।

अचल संपत्ति का विवरण

संपत्ति का स्वामित्व: देवेन्द्र पाठक
यूनिट नं. ई-1206, बारहवीं मंजिल, टावर-ई, स्टार रामेश्वरम, राज नगर एक्सटेंशन, एनएच-58, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश – 201010.

प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 28.08.2024 — **एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी (इंडिया) लिमिटेड**
स्थान : गाज़ियाबाद — **(एआरसीआईएल-सीपीएस-IV ट्रस्ट के ट्रस्टी)**

PUBLIC NOTICE
In re:
M/S. ADRIA MEDICARE PRIVATE LIMITED
(CIN U85100DL2021PTC391818)
having its registered office at
W-4, West Patel Nagar, New Delhi-110008.

This is to bring to the notice of all concerned that Our Client Ms. Divya Bhasin wife of Shri P. Gupta of B-27, Vishal Enclave, New Delhi-110027 has initiated proceedings in the Hon'ble National Company Law Tribunal, New Delhi bearing No. CP-231/ND/2023 u/s 241-242 r/w Section 59 of Companies Act, 2013 against M/s. Adria Medicare Pvt. Limited, Dr. Anil Kumar Singh s/o Tellu Singh & others, which is pending adjudication. Apart from other prayers, our Client has also challenged her illegal removal from the Board of Directors of Adria Medicare Pvt. Limited and illegal transfer of her shares of Adria Medicare Pvt. Limited. Our Client has also filed a criminal complaint u/s 200 for commission of offences u/s 406, 468, 469, 471 etc. along with an application u/s 156 (3) of the Code of Criminal Procedure against Dr. Anil Kumar Singh s/o Tellu Singh & others which is pending adjudication before the Ld. Court of M.M-02/WEST/THC/Delhi.

We state on behalf and on the instructions of our Client that, any person/s or institution/s intending to enter into any agreement/transaction or creating any charge, title and interest in Adria Medicare Pvt. Limited and the concerns being run under Adria Medicare Pvt. Limited, shall be subject to the outcome of CP-231/ND/2023 pending in Hon'ble NCLT, New Delhi and subject to the rights, title and interest of our Client.

Date: 29.08.2024

Kumar Ayush, Advocate
Law Offices of Navin Kumar
1403-1405, 14th Floor, Tower-D,
Urbtech Trade Center, Sector-132, Noida-201301
Email: info@navinlaw.in | Ph. No: 0120-6025061

फॉर्म नं. आईएनसी-26

{कम्पनी (निगमन) नियम, 2014 के नियम 30 के अनुसरण में}

केंद्र सरकार (क्षेत्रीय निदेशक, उत्तरी क्षेत्र)

कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 13 की उप-धारा(4) और कंपनी (निगमन) नियम 2014 के नियम 30 के उप नियम (5) के खंड (ए) के मामले में

और

वोस्ट्रो डिजाइन एंड फैशन प्राइवेट लिमिटेड के मामले में, जिसका पंजीकृत कार्यालय, सी-198/4-ए, जी नं. 8, भजनपुरा, शाहदरा, दिल्ली-110053

..याचिकाकर्ता

एतद्द्वारा जनसामान्य को सूचित किया जाता है कि कम्पनी ने कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 13 के तहत कम्पनी के मेमोरेंडम ऑफ एसोसिएशन में परिवर्तन लाने हेतु पुष्टिकरण हेतु केन्द्र सरकार (क्षेत्रीय निदेशक) को आवेदन प्रस्तुत करने का प्रस्ताव किया है, यह विशेष प्रस्ताव असाधारण आम बैठक में कम्पनी को सक्षम करने हेतु 02 सितम्बर, 2024 को आयोजित बैठक में कम्पनी के पंजीकृत कार्यालय को "राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली" से "उत्तर प्रदेश राज्य" में स्थानांतरित करने हेतु पारित किया गया।

कोई भी व्यक्ति जिसका हित कम्पनी के पंजीकृत कार्यालय के प्रस्तावित संशोधन से प्रभावित होने की संभावना है, अपने हित के स्वरूप तथा विरोध के आधार के उल्लेखकारी शपथपत्र द्वारा समर्थित अपनी आपत्तियां निवेशक शिकायत प्रपत्र भरकर एमसीए-21 पोर्टल (www.mca.gov.in) पर कर सकता है अथवा क्षेत्रीय निदेशक, बी-2 विंग, द्वितीय तल, पर्यावरण भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली-110003 के पते पर इस सूचना के प्रकाशन के चौदह दिन के भीतर प्रेषित करवा सकता है अथवा पंजीकृत डाक से भेज सकता है, जिसकी एक प्रति आवेदक कम्पनी को इसके पंजीकृत कार्यालय पर भेजी जानी चाहिए।

वोस्ट्रो डिजाइन एंड फैशन प्राइवेट लिमिटेड
की ओर से
हस्ता/-
विनीता पाणिग्रही
निदेशक (डीआईएन 07264579)
दिनांक: 02.09.2024, स्थान: दिल्ली

PUBLIC NOTICE

It is to inform to the public at large that Mrs. Raj Rani Goyal had acquired Plot No. B-9, area measuring 100 sq. yrds., out of Khasra No. 597/1, situated at in the abadi of colony known as Sadh Nagar, Palam Colony, Gali No. 22, New Delhi, area of Village Palam Delhi vide GPA dt. 22.02.1988 executed by Mr. Trilok Chand and Mr. Radhey Shayam along with ATS & Will, Now Mrs. Raj Rani Goyal is the undisputed owner of the above said property.

OR

Any person / firm / institution / company having any claim or right in respect of the said Property by way of inheritance, share, sale, agreement, lease, license, gift, possession, legal heirs, partners or encumbrance howsoever or otherwise is hereby required to intimate in writing to the undersigned within 07 days from the date of publication of this notice of his/her/their share or claim, if any, with all supporting documents at below mentioned address. After expiration of notice period, the claims, if any, of such person shall be treated null and void and also treated as waived and not binding on our client.

Ajay Kumar Giri (Advocate) H No. 26/161, Basement, Vikram Vihar, Lajpat Nagar 4, New Delhi -110024

PUBLIC NOTICE

It is to informed to the public at large that one Sh. Vikas Goel S/o Late Virender Kumar Goel (PAN ARJPG2994H) (Aadhar 2239 3459 9862) who is the owner of Entire First Floor without roof rights of Property No. 40 measuring 200 sq. yds. in Block-E situated at Satya Wati Nagar, Ashok Vihar, Phase-III, Delhi, hereinafter referred to as "said property" having acquired the same by virtue of Relinquishment Deed dated 15.01.2018 executed by Seema Garg and Nidhi Mittal (Doc. No. 792) read with Rectification Deed dated 24.05.2023 (Doc. No. 8348) which is followed by Partition Deed (with Stamp Duty) (Doc. No. 1855). Previously the subject property was purchased by Shashi Goel vide Sale Deed regd. on 21.05.1999 executed by Gyan Chandra Gupta (Doc. No. 2610) who died on 17.10.2017 intestate leaving behind VikasGoel, Seema Garg and Nidhi Mittal as the only Class-I LRs. The said Property has been mortgaged by the owner with HDFC Bank Limited (our client). Further, It is hereby declared that title of the said Property, is absolutely valid, clear and marketable and there is no dispute / Litigation pending in any court of law, in respect of said Property. Whosoever, is having any objection to said mortgage OR any Person having any type of claim/right/title/interest over the said property may inform in writing, at the address mentioned below, about his objections, within 14 days from today, failing which it shall be presumed that the said property is free from all type of Encumbrances, lien etc.

S.C. VARSHNEY (Sr. Advocate) R-14/178, Raj Nagar, Ghaziabad-201 002, Mobile: 8882600727

पायनियर
नई दिल्ली, मंगलवार, 3 सितंबर, 2024

दिल्ली सरकार की सभी स्वास्थ्य योजनाओं में भ्रष्टाचार : सचदेवा

कहा, अस्पताल हों या मोहल्ला क्लीनिक सब घोटाले के केंद्र बन गए हैं

● नेता प्रतिपक्ष विजेन्द्र गुप्ता ने स्वास्थ विभाग के घोटालों की शिकायत एसीबी से की

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राजधानी में संवददाता सम्मेलन को संबोधित करते प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा, नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता व अन्य।

प्रदेश भाजपा ने दिल्ली सरकार की स्वास्थ्य योजनाओं जमकर हमला बोला है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि दिल्ली में स्वास्थ सेवाएं पूरी तरह चरमर्रा चुकीं हैं, चालू अस्पताल हों या निर्माणाधीन या फिर मोहल्ला क्लीनिक सब भ्रष्टाचार के केंद्र बन गए हैं। नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने स्वास्थ्य विभाग के घोटालों की शिकायत एसीबी से की है। उन्होंने दावा किया कि अब केजरीवाल सरकार के काले सच सामने आयेंगे। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज हों या केजरीवाल के अन्य मंत्री यह सब प्रेस कॉन्फ्रेंस के मंत्री हैं इनका प्रशासन से कुछ लेना देना नहीं है।

वीरेंद्र सचदेवा ने नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने सोवार को संवाददाता सम्मेलन में दावा किया कि सौरभ भारद्वाज के स्वास्थ विभाग की सभी परियोजनाएं विलम्ब से चल रहे हैं। मंत्री इसकी जिम्मेदारी लें इस्तीफा दें। दिल्ली सरकार के नये अस्पतालों के निर्माण की तो छोड़िए जिन अस्पतालों का अपग्रेडेशन होना है वह भी तय समय से पीछे चल रहे हैं।

सचदेवा ने कहा है मोहल्ला क्लीनिक एवं उनके डाक्टरों के प्रति पेशंट बिल, पैथोलॉजी टेस्ट एवं एक्स रे आदि सब भ्रष्टाचार के विषय बन चुके है। ऐसे स्कैम बिना मंत्री एवं मुख्यमंत्री की मौन स्वीकृति के सम्भव नहीं है।

विजेन्द्र गुप्ता ने स्वास्थ्य तंत्र की सुनियोजित भ्रष्टाचार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने बताया कि 24 स्वीकृत अस्पताल परियोजनाओं में से, जिनकी कुल लागत 5,590 करोड़ रुपये है, कई अभी तक अधूरी हैं और उनमें महत्वपूर्ण लागत से अधिक खर्च हुआ है। 7 आईसीयू अस्पतालों का मामला है, जिनमें 6,800 बिस्तर हैं और जिन्हें 1,125 करोड़ रुपये की लागत पर स्वीकृत किया गया था, लेकिन तीन साल बाद भी वे केवल 50फीसदी पूरे हुए हैं। गुप्ता ने कहा बहुउद्देशीय क्लीनिक परियोजना की भी जांच की गई, जिसमें भाजपा ने खुलासा किया कि 94 नियोजित बहुउद्देशीय क्लीनिकों में से केवल 52 ही बनाए गए हैं। इस कमी के बावजूद, लागत रहस्यमय रूप से 168.58 करोड़ रुपये से बढ़कर 220 करोड़ रुपये हो गई है, और इनमें से अधिकांश क्लीनिक निष्क्रिय पड़े हैं।

एक और मुद्दा जो उठाया गया वह स्वास्थ्य सूचना प्रबंधन प्रणाली परियोजना का था। पारदर्शिता के लिए यह महत्वपूर्ण प्रणाली आठ साल बाद भी लागू नहीं की गई है, जिसके परिणामस्वरूप 130 करोड़ रुपये की बर्बादी हुई है। गुप्ता ने कहा कि एलएनजेपी अस्पताल परियोजना में जहां केवल चार साल में लागत 487.66 करोड़ रुपये से रहस्यमय रूप से बढ़कर 1,125 करोड़ हो गई है।

नेता प्रतिपक्ष ने केंद्रीय धनराशि का उपयोग न कर पाने की विफलता का भी जिक्र किया। विशेष रूप से पीएम आयुष्मान भारत स्वास्थ्य बुनियादी ढांचा मिशन के तहत स्वीकृत 2,406 करोड़ रुपये का। दिल्ली एकमात्र राज्य/केंद्र शासित प्रदेश है जो इस योजना का लाभ नहीं उठा रहा है, जबकि स्वास्थ्य विभाग में गंभीर संसाधन संकट का सामना कर रहा है। केंद्र की योजना को लागू करने के बजाय, आप सरकार ने लैब सेवाओं को आउटसोर्स कर दिया।

ओखला अपशिष्ट जल संयंत्र में आर्टिफिशल झीलें बनेंगी : भारती

नई दिल्ली। जल बोर्ड के उपाध्यक्ष सोमनाथ भारती ने कहा कि ओखला अपशिष्ट जल शोधन संयंत्र मे कृत्रिम झीलें बनेंगी। इस झील के पानी का इस्तेमाल दोबारा इस्तेमाल किया जाएगा। आर्टिफिशियल झीलों में ओखला प्लांट्स का 15 -20 एमजीडी शोधित पानी भरा जाएगा। इससे आसपास के क्षेत्रों का भूजल स्तर ऊपर आएगा।

ट्यूबवेल्स से जमीन से पानी निकाला जाएगा और फिर उस पानी को आर ओ प्लांट्स लगाकर साफ कर सिस्टम में वापिस लाया जायेगा। इस तरह यमुना को साफ करने के साथ ही दिल्ली वालों को पर्याप्त पीने का शुद्ध पानी मिल पाएगा। भारती सोमवार को यमुना एक्शन प्लान-तीन के अंतर्गत विकसित किये जा रहे ओखला वेस्ट वाटर ट्रीटमेंट प्लांट का दौरा किया।

डीयू छात्रसंघ का चुनाव 27 सितंबर को होगा

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय ने सोमवार को घोषणा की कि वर्ष 2024-25 के लिए उसके छात्र संघ का चुनाव 27 सितंबर को होगा। दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के चुनाव के लिए नामांकन पत्र 17 सितंबर को दाखिल किए जा सकेंगे और मतों की गिनती 28 को होगी।

पिछले साल एबीवीपी ने अध्यक्ष सहित केंद्रीय पैनल के तीन पदों पर जीत हासिल की थी, जबकि कांग्रेस की छात्र शाखा नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया (एनएसयूआई) ने उपाध्यक्ष पद पर जीत दर्ज की थी।

मालीवाल हमला मामले में बिभव को जमानत

● पीठ ने निर्देश दिया कि कुमार को केजरीवाल के निजी सहायक के रूप मे बहाल नहीं किया जाएगा और न ही सीएम ऑफिस में कोई आधिकारिक कार्यभार दिया जाएगा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

बिभव कुमार (फाइल फोटो)

उच्चतम न्यायालय ने आम आदमी पार्टी (आप) की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल पर हमला मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सहयोगी बिभव कुमार को सोमवार को जमानत दे दी।

न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां की पीठ ने निर्देश दिया कि कुमार को केजरीवाल के निजी सहायक के रूप में बहाल नहीं किया जाएगा और न ही मुख्यमंत्री कार्यालय में कोई आधिकारिक कार्यभार दिया जाएगा। न्यायालय ने सभी गवाहों से पूछताछ पूरी होने तक कुमार के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास में प्रवेश पर भी रोक लगाई है।

कुमार ने 13 मई को केजरीवाल के आधिकारिक आवास पर मालीवाल पर कथित तौर पर हमला किया था। कुमार के खिलाफ 16 मई को भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई थी। कुमार को 18 मई को गिरफ्तार किया गया था।

उच्च न्यायालय ने उन्हें जमानत देने से इनकार करते हुए कहा था कि आरोपी काफी प्रभावशाली है और उन्हें राहत देने का कोई आधार नहीं बनता है। उसने कहा था कि इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि अगर याचिकाकर्ता को जमानत दी जाती है , तो गवाहों को प्रभावित किया जा सकता है या सबूतों के साथ छेड़छाड़ की जा सकती है।

अब केजरीवाल भी जल्द होंगे बाहर : सिसोदिया

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने 23 महीने बाद विजय नायर को मिली जमानत को सत्य की विजय बतया है। पार्टी नेताओं का कहना है कि पहले उच्चतम न्यायालय ने मनीष सिसोदिया को जमानत दी और अब विजय नायर को जमानत दी है। अब जल्द ही अरविंद केजरीवाल भी जेल से बाहर आएंगे। नायर को जमानत मिलने पर मनीष सिसोदिया ने एक्स पर कहा कि भाजपा के मनगढ़ंत शराब घोटाले के एक और गुब्बारा आज फूट गया। विजय नायर को 23 महीने जेल में रखा। इनका मकसद केजरीवाल को चुनावों में नहीं रोक सकते तो उनकी पूरी टीम गिरफ्तार करवाकर जेल में रखो।

पीएमएलए मामले में विजय नायर को बेल

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने कथित दिल्ली आबकारी नीति घोटाले से जुड़े एक धन शोधन मामले में आम आदमी पार्टी के पूर्व संचार प्रभारी विजय नायर को सोमवार को जमानत दे दी और कहा कि स्वतंत्रता अनुल्लंघनीय होती है। समन्वय पीठ द्वारा उल्लेखित जमानत नियम है, जेल अपवाद है के कानूनी सिद्धांत को स्वीकार किया। न्यायमूर्ति ऋषिकेश रॉय और न्यायमूर्ति एसवीएन भट्टी की पीठ ने कहा कि नायर धन शोधन मामले में पिछले 22 महीने से जेल में हैं जहां अधिकतम सजा सात साल की है। पीठ ने 12 अगस्त को नायर की जमानत अर्जी पर ईडी से जवाब मांगा था। एजेंसी ने 13 नवंबर, 2022 को नायर को गिरफ्तार किया था। नायर ने निचली अदालत के 29 जुलाई के आदेश को चुनौती दी थी जिसमें जमानत की याचिका को खारिज कर दिया गया था।

जमानत न्यायिक प्रक्रिया का हिस्सा है : अमित

नई दिल्ली। प्रदेश भाजपा प्रवक्ता और अधिवक्ता अमित गुप्ता ने कहा है कि विजय नायर और विभव कुमार को दी गई जमानत न्यायिक प्रक्रिया का हिस्सा है और इसका मामले के मेरिट और चार्जशीट से कोई संबंध नहीं है। न्यायिक प्रक्रिया के तहत, हर गिरफ्तार व्यक्ति जमानत का पात्र होता है। इसलिए, आप नेताओं को नायर और विभव को दी गई जमानत का जश्न नहीं मनाना चाहिए, क्योंकि उन्हें मुकदमे का सामना करना पड़ेगा।

चाकू घोपकर की पत्नी की हत्या शव कार में छोड़ा, हुआ गिरफ्तार

● वारदात के बाद भाग रहे आरोपी को गश्त कर रहे एक पुलिस अधिकारी ने पकड़ लिया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पश्चिमी दिल्ली के राजौरी गार्डन इलाके में 21 वर्षीय एक व्यक्ति ने चाकू घोंपकर अपनी पत्नी की हत्या कर दी और उसका शव अपनी कार में ही छोड़ दिया। उन्होंने बताया कि आरोपी की पहचान गौतम के रूप में हुई है और जब वह भागने की कोशिश कर रहा था तभी गश्त कर रहे एक पुलिस अधिकारी ने उसे पकड़ लिया।

पुलिस के अनुसार, गौतम देर रात संदिग्ध हालात में बिना कमीज पहने घूम रहा था तभी रात एक बजकर 20 मिनट पर ख्याला पुलिस थाने में तैनात हेड कांस्टेबल अजय ने उसे पकड़ लिया और पूछताछ की तो घटना का खुलासा हुआ। पूछताछ करने पर गौतम ने बताया कि उसने अपनी पत्नी मान्या की हत्या कर उसका शव कार में ही छोड़ दिया है। एक अधिकारी ने बताया कि मामले की पड़ताल की गई तथा पूछताछ जारी रखी जिसके बाद रघुबीर नगर निवासी गौतम ने पुलिस को बताया कि उसने मार्च में परिवार की सहमति के बिना शादी की थी।

अधिकारी ने बताया कि शादी के बाद भी वे अपने-अपने परिवार के साथ ही रह रहे थे और कभी-कभार मिलते थे। रविवार रात गौतम कार में राजौरी गार्डन इलाके के तितारपुर में मान्या से मिलने आया था। एक अन्य पुलिस अधिकारी ने बताया, रात करीब 11 बजे मान्या ने जोर देकर कहा कि दोनों को एक साथ रहना चाहिए और इस बात को लेकर कार में ही दोनों के बीच बहस हो गई।

जानबूझकर आप विधायकों के खिलाफ कार्रवाई : भारद्वाज

● बोले, वर्ष 2016 से अब तक एसीबी और सीबीआई की जांच के बावजूद एक भी सबूत पेश नहीं कर सकी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

आम आदमी पार्टी के विधायक अमानतुल्लाह खान की गिरफ्तारी को लेकर मंत्री सौरभ भारद्वाज ने प्रर्वनतन निदेशाल पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि जानबूझकर वक्फ बोर्ड में पैसे लेकर भर्ती करने का एक झूठा और आधारहीन कैस बनाया गया है और उसमें अमानतुल्लाह को फंसाया गया। वर्ष 2016 में यह मामला बनाया गया और पहले तो खूब शोर मचाया गया, कि भ्रष्टाचार हुआ है और एसीबी जांच कर रही है। बाद में अदालत ने इस मामले में खान को यह कहते हुए जमानत दे दी, कि जांच एजेंसी द्वारा प्रस्तुत किए गए दस्तावेजों से, तथ्यों से कहीं पर भी ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा है, कि पैसे लेकर वक्फ बोर्ड में किसी को कोई नौकरी दी गई है।

सौरभ भारद्वाज ने सोमवार को संवददाता सम्मेलन में कहा कि भाजपा ने विधायक को जबरदस्ती झूठे केस में फंसाने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी के सभी विधायकों, मंत्रियों को पीएमएलए एक्ट के तहत ही गिरफ्तार किया जाता है, क्योंकि इस एक्ट में इतने कड़े प्रावधान है कि गिरफ्तारी के बाद कम से कम 4-6 महीने तक गिरफ्तार व्यक्ति जेल में ही बंद रहेगा। चुनाव से ठीक कुछ महीने पहले इस प्रकार से आम आदमी पार्टी के विधायकों की गिरफ्तारी केवल इसलिए की जा रही है, ताकि वह चुनाव के वक्त अपने विधानसभा से गायब रहे और चुनाव हार जाएं।

भाजपा ने ईडी के कदम का स्वागत किया

नई दिल्ली। दिल्ली वक्फ बोर्ड में कथित घोटाले में ईडी ने अमानतुल्लाह खान को गिरफ्तार किया, जिसका भाजपा सांसद योगेन्द्र चंदोलिया, बांसुरी स्वराज, नेता प्रतिपक्ष और मीडिया प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर ने प्रवर्तन निदेशालय के इस कदम का स्वागत किया है। योगेन्द्र चंदोलिया ने कहा है कि आम आदमी पार्टी के विधायक और पार्षद भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। जब ये जांच के दायरे में आते हैं तो शोर मचाना शुरू कर देते हैं। अमानतुल्लाह खान को जांच एजेंसी गिरफ्तार किया तो शोर मचाना शुरू कर रहे हैं।

अमानतुल्ला की गिरफ्तारी भ्रष्टाचार का उदाहरण : देवेन्द्र

नई दिल्ली। प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि दिल्ली वक्फ बोर्ड की नियुक्तियों में अनियमितता और संपत्तियों के दुरुपयोग के मामले में आप विधायक और वक्फ बोर्ड के चेयरमैन अमानतुल्ला खान के निवास पर प्रवर्तन निदेशालय द्वारा छापेमारी के बार उन्हें हिरासत में लेना, आम आदमी पार्टी सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी की गहरी जड़ों का एक और उदाहरण दिल्ली की जनता के सामने उजागर हो गया है। देवेन्द्र यादव ने कहा कि ईमानदारी और पारदर्शिता की शपथ लेकर सत्ता में आई आम आदमी पार्टी सबसे भ्रष्ट, कमीशन-संचालित राजनीतिक पार्टी साबित हुई है।

शिकायत पर मटियाला में चार अवैध रंगाई इकाइयां सील

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना के आदेश पर मटियाला में चल रही चार अवैध रंगाई इकाइयों को सील कर दिया गया है। एलजी सक्सेना ने सोशल मीडिया एक्स पर एक नागरिक की शिकायत का संज्ञान लेने के बाद यह कार्रवाई की गई।

अवैध इकाइयां मटियाला विधानसभा क्षेत्र के बाहरी इलाके में गालिबपुर गांव में स्थित हैं। यह पाया गया कि इन इकाइयों से यमुना नदी में प्रदूषण हो रहा है और इनके लिए अवैध रूप से भूजल निकाला जा रहा है। नागरिक ने 29 अगस्त को सोशल मीडिया पर शिकायत करते हुए एक पोस्ट किया था जिसमें उपराज्यपाल के साथ-साथ गोपाल राय और सौरभ भारद्वाज सहित अन्य अधिकारियों और मंत्रियों को भी टैग किया था। इसके जवाब में राज निवास के आधिकारिक हैंडल ने एक्स पर शिकायत का संज्ञान लिया और आश्वासन दिया कि इसकी जांच की जाएगी और यदि आरोप सही पाए गए तो उचित दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

इसके बाद सक्सेना ने एमसीडी, दिल्ली पुलिस और डीपीसीसी के अधिकारियों को कार्रवाई का निर्देश दिया। संयुक्त निरीक्षण अभियान में रविवार को अवैध चार जींस रंगाई इकाइयों का पता चला। ये इकाइयां गैर-औद्योगिक क्षेत्र में एमसीडी और डीपीसीसी से आवश्यक अनुमति के बिना चल रही थीं।

पटाखा गोदाम में आग से एक की मौत

● सोनिया विहार की गली नंबर एक स्थित चौहान पट्टी अवैध रूप से चल रहा था कारखाना

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

सोनिया विहार में एक मकान में लगी आग।

उत्तर-पूर्वी दिल्ली के सोनिया विहार इलाके में सोमवार को पटाखों के एक गोदाम में आग लगने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि यह घटना सोनिया विहार की गली नंबर एक स्थित चौहान पट्टी में सुबह चार बजे हुई।

दिल्ली अग्निशमन सेवा के एक अधिकारी ने बताया कि दमकल विभाग की पांच गाड़ियों को मौके पर भेजा गया और आग पर काबू पाने में दो घंटे लगे। पुलिस ने बताया कि एक कमरे के अंदर से एक व्यक्ति का जला हुआ शव बरामद किया गया है। संभवत: यह शव गोदाम की देखभाल करने वाले का है जो परिसर में सो रहा था। पता चला कि 200 वर्ग गज के भूखंड के मालिक कृष्ण ने वजीराबाद में ने जावेद को किराए पर दिया था।

अधिकारी ने बताया कि एक कमरे में कुछ पटाखे रखे हुए थे। उन्होंने बताया कि जावेद इस परिसर का इस्तेमाल पटाखों को रखने के लिए करता था। उन्होंने बताया कि यह भी संदेह है कि गोदाम अवैध रूप से चल रहा था और संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। उन्होंने बताया कि जावेद को पकड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं तथा आगे की जांच जारी है।

चंद रुपयों के लिए युवक को चाकू मारकर की हत्या

नई दिल्ली। कल्याणपुरी इलाके में चंद रुपयों के लिए एक युवक की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। मृतक ही पहचान बाबूलाल के रूप में हुई है। वह परिवार के साथ इंद्रा कैंप में रहता था। पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर लिया है।

जानकारी के अनुसार, रविवार की दोपहर शौचालय जाते समय कुछ लड़कों ने उसके पैसे छीनने की कोशिश की, बाबूलाल ने विरोध किया तो लड़कों ने चाकू से हमला कर दिया, चाकू बाबूलाल के बाएं पैर की जांघ के पास लगा। बाबूलाल के बड़े भाई अमित सूचना पर वहां पहुंचा तो हमलावर भाग खड़े हुए। पीड़ित युवक को जीटीबी अस्पताल ले जाया गया जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

पूर्व इसरो वैज्ञानिक की पवन तकनीक से हासिल होगा कार्बन नेट जीरो का लक्ष्य

अर्चना ज्योति। नई दिल्ली

इसरो के पूर्व वैज्ञानिक राकेश अग्रवाल के नेतृत्व में एक टीम ने पवन ऊर्जा क्षेत्र में लागत प्रभावी ग्रीन एफिशिएंट गर्व (गाइडेड एयरफ्लो रोटेशनल वोर्टेक्स) तकनीक विकसित किया है, जो 2070 तक कार्बन नेट जीरो के लिए भारत के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को हासिल करने के लिए एक सकारात्मक समाधान पेश करती है।

बिट्स, गोवा द्वारा मान्य, 'ड्रैग कम लिफ्ट विंड टर्बाइन' अवधारणा पर आधारित इस ग्राउंडब्रेकिंग तकनीक को भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, रूस, न्यूजीलैंड और यूरोपीय देशों सहित कई प्रमुख न्यायालयों में पेटेंट कराया गया है।

वैज्ञानिक राकेश अग्रवाल ने बताया, यह तकनीक एक अद्वितीय डिज़ाइन का उपयोग करती है जो एक घूर्णी भंवर प्रभाव पैदा करती है, जो टर्बाइन ब्लेड द्वारा कैप्चर की गई पवन ऊर्जा की मात्रा को काफी बढ़ा देती है। इसके परिणामस्वरूप पारंपरिक टर्बाइनों की तुलना में पवन ऊर्जा का विद्युत ऊर्जा में रूपांतरण दर अधिक होती है।

संक्षिप्त समाचार

बारिश से क्रिकेट मैच ड्रा, दोनों टीमों को मिले दो अंक

दोनों टीमों के कप्तान, मोहन चतुर्वेदी, अनिल पासी के साथ टॉस करते हुए।

नई दिल्ली। 18वें हरि चंद मेमोरियल एसएच स्पोर्ट्स अंडर 17 क्रिकेट टूर्नामेंट के उद्घाटन मैच में भारी बारिश के चलते ग्लोबल अकादमी और सीसीयूए अकादमी के बीच हुआ मैच ड्रा घोषित किया गया और दोनों टीमों को दो-दो अंक मिले। मैच में अभय ने 52 रन, सिब्रिन 36 और ग्लोबल अकादमी के गेंदबाज हर्षित चौधरी, 3/12, पार्थ शर्मा, 2/23, ने विकेट लिए। टूर्नामेंट का उद्घाटन पूर्व भारतीय विकेट कीपर मोहन चतुर्वेदी, अनिल कुमार पासी और राजेन्द्र आर्य ने संयुक्त रूप से किया।

कड़कड़डूमा कोर्ट में गवाह पर हमला

नई दिल्ली। कड़कड़डूमा अदालत में सोमवार को एक आपराधिक मामले के गवाह पर आरोपी ने कथित तौर पर ब्लेड से हमला कर दिया। यह घटना उस समय घटी जब विशेष न्यायाधीश आलोक शुक्ला मामले की सुनवाई कर रहे थे। हमले के वक्त मौजूद एक सूत्र ने कहा, आरोपी ने गवाह के साथ तीखी नोकझोंक के बाद उस पर ब्लेड से हमला कर दिया। पीड़ित के चेहरे और गर्दन पर चोटें आईं, जिसके बाद अदालत परिसर में तैनात चौकी पुलिस ने उसे अस्पताल पहुंचाया। उन्होंने कहा, हमले के बाद कोर्ट रूम में खून के छींटे पड़े थे। आरोपी आपराधिक मामले में न्यायिक हिरासत में था।

गणेश चतुर्थी पर 25 गरीब लड़कियों की शाही शादी

नई दिल्ली। गणेश चतुर्थी के अवसर पर राजधानी में गरीब व वंचित लड़कियों की 7 सितंबर को शादी अंदाज में शादी होगी। राशि एंटरटेनमेंट अपनी 25वीं वर्षगांठ पर विवाह उत्सव आयोजित करने जा रहा है। यह कार्यक्रम राजधानी के निवाह एनएच 8 में होगा। इवेंट और विवाह उद्योग में एक प्रमुख नाम राशि एंटरटेनमेंट के डायरेक्टर राजीव जैन ने बताया कि विवाह समारोह सामुदायिक बंधनों को मजबूत करने का प्रयास है। जैन ने बताया 30 से अधिक दूल्हे बारात लेकर आएंगे और इसके साथ सामूहिक जय माला और कन्यादान समारोह देखने लायक होगा। इसके अलावा सभी जोड़ों को दैनिक जीवन के उपयोग की वस्तुएं भी दी जाएंगी। इस आयोजन में लाडली फाउंडेशन और बेटी फाउंडेशन के साथ कई कंपनियां मदद को आगे आई हैं।

राजधानी में बारिश के बाद कई इलाकों में जलभराव, लगा जाम

● दिल्ली पर मानसून मेहरबान, 2 दिन झमाझम बारिश का अनुमान, आईएमडी ने जारी किया यलो अलर्ट

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राजधानी में बारिश के दौरान गुजरते वाहन। (फाइल फोटो)

राष्ट्रीय राजधानी के कई इलाकों में सोमवार को सुबह बारिश हुई जिससे मौसम सुहावना हो गया है। भारतीय मौसम विभाग ने पूर्वानुमान जताया कि दिल्ली में मौसम एक बार फिर करवट लेने वाला है। आईएमडी ने अगले 24 घंटे के दौरान अलग अलग हिस्सों में हल्की से मध्यम बारिश का यलो अलर्ट जारी किया है। एनसीआर के शहरों में भी कमोबेश ऐसा ही मौसम रहने की संभावना है। मौसम विभाग ने 3 और 4 सितंबर को भी दिल्ली के साथ एनसीआर के शहरों में भी मौसम के खराब रहने का पूर्वानुमान जताया है।

मौसम विभाग ने दिल्ली में मंगलवार को भी गरज चमक और तेज हवाओं के साथ हल्की से मध्यम बारिश का यलो अलर्ट जारी किया है। मौसम विज्ञानियों का कहना है कि चार सितंबर को भी मौसम कमोबेश ऐसा ही रहेगा। आईएमडी ने चार सितंबर को विभिन्न हिस्सों में गरज चमक के साथ हल्की से मध्यम बारिश का पूर्वानुमान जताया है। इसको लेकर यलो अलर्ट भी जारी किया गया है। दो दिन आसमान में बादलों की आवाजाही रह सकती है।

मौसम विभाग ने चार सितंबर तक दिल्ली के साथ गाजियाबाद, नोएडा, ग्रेटर नोएडा, फरीदाबाद और गुरुग्राम समेत एनसीआर के अन्य शहरों में कमोबेश ऐसा ही मौसम रहने की बात कही है। इसके बाद 5, 6, 7 और 8 सितंबर को आसमान में बादलों की आवाजाही बने रहनेके साथ ही रुक-रुक कर हल्की बारिश या फुहारें पड़ने की संभावना है। हालांकि इसको लेकर किसी प्रकार का अलर्ट जारी नहीं किया गया है।

इस पूरे हफ्ते दिल्ली में अधिकतम तापमान 33 से 35 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। वहीं न्यूनतम तापमान के 24 से 26 डिग्री के बीच रहने का अनुमान है।

जलभराव से इन इलाकों में यातायात रहा प्रभावित

पुलिस ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि जलभराव के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग-48 के धौला कुआं से महिपालपुर की ओर और इसके दूसरी ओर के मार्ग पर यातायात प्रभावित हुआ है। एक अन्य पोस्ट में कहा कि हौज रानी रेड लाइट के पास जलभराव के कारण साकेत कोर्ट से मालवीय नगर की ओर जाने वाले मार्ग पर प्रेस एन्क्लेव रोड पर यातायात प्रभावित हुआ। जलभराव के कारण रिंग रोड पर डीएनडी से मूलचंद अंडरपास की ओर जाने वाले मार्ग पर, रोड नंबर 13 से ओखला एस्टेट रोड की ओर जाने वाले दोनों मार्गों पर, आउटर रिंग रोड के दोनों मार्गों पर, सफदरजंग से धौला कुआं की ओर जाने वाले मार्ग पर तथा बदरपुर से महरौली मार्ग पर यातायात प्रभावित हुआ। एमिटी स्कूल के पास एक पेड़ उखड़ जाने के कारण साकेत में बिड़ला विद्या निकेतन मार्ग पर यातायात प्रभावित हुआ।

पायनियर
नई दिल्ली, मंगलवार, 3 सितम्बर, 2024

ईवीएम के पहले रेंडमाइजेशन की प्रक्रिया पूरी

जिला निर्वाचन अधिकारी निशांत कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुई प्रक्रिया, सभी दलों के प्रतिनिधि रहे मौजूद

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम में ईवीएम के रेंडमाइजेशन के दौरान राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक करते डीसी निशांत कुमार यादव।

आगामी 5 अक्टूबर को विधानसभा आम चुनाव 2024 को निष्पक्ष एवं पारदर्शी रूप से संपन्न कराने के लिए राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के समक्ष ईवीएम का गुरुग्राम जिला की चारों विधानसभा का क्षेत्रवार रेंडमाइजेशन किया गया। इसकी अध्यक्षता जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी निशांत कुमार यादव ने की।

डीसी निशांत कुमार यादव ने कहा कि विधानसभा आम चुनाव के तहत जिला की चारों विधानसभा में कुल 1504 बूथ हैं। जिसके प्रथम चरण का सोमवार को ईसीआई की वेबसाइट पर रेंडमाइजेशन किया गया है। उन्होंने ईवीएम की रेंडमाइजेशन की जानकारी देते हुए बताया कि प्रथम चरण में रेंडमाइजेशन के तहत ईवीएम की तीनों यूनिट बैलेट यूनिट, कंट्रोल यूनिट व विविपेट का चारों विधानसभा क्षेत्र सोहना के लिए 292, पटौदी के लिए 259, गुरुग्राम के लिए 435 व बादशाहपुर के लिए 518 ईवीएम यूनिट्स सहित प्रत्येक विधानसभा में 20 प्रतिशत ईवीएम यूनिट्स का चिन्हीकरण कर लिया गया है। नामांकन प्रक्रिया पूरी होने उपरांत राजनीतिक दलों की मौजूदगी में ईवीएम का बूथ वार चिन्हीकरण करने के लिए रेंडमाइजेशन का दूसरा चरण आयोजित किया जाएगा।

एक बैलट पेपर पर नोटा समेत 16 उम्मीदवारों के नाम दर्ज होंगे: डीसी ने राजैनतिक दलों के प्रतिनिधियों को बताया कि एक ईवीएम यूनिट में बैलट यूनिट में नोटा सहित कुल 16 उम्मीदवार के नाम दर्ज होंगे। ऐसे में नामाकंन प्रक्रिया पूरी होने के उपरांत जिस विधानसभा क्षेत्र में उम्मीदवारों की संख्या 15 से ज्यादा हुई तो उक्त विधानसभा में सप्लीमेंट्री रेंडमाइजेशन में बैलट यूनिट की संख्या बढ़ाई जा सकती है। बैठक में प्रथम रेंडमाइजेशन के बाद सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को सभी विधानसभा की एक-एक प्रति भी उपलब्ध कराई गई। बैठक में बादशाहपुर के एसडीएम अंकित चोकसी, जिला परिषद के सीईओ जगनिवास, गुरुग्राम के एसडीएम रविंद्र कुमार, पटौदी के एसडीएम दिनेश, सोहना के एसडीएम होशियार सिंह, मानेसर के एसडीएम दर्शन यादव, नगर निगम के संयुक्त आयुक्त अखिलेश, सीटीएम कुंवर आदित्य विक्रम, डीआईओ विभू कपूर, जिला निर्वाचन कार्यालय से संतलाल, संबंधित विधानसभा के तहसीलदार व नायब तहसीलदार सहित राजनैतिक दलों प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

विकास की शहादत पर देश को गर्व: सैनी

- मुख्यमंत्री नायब सिंह ने शहीद राघव को अर्पित की श्रद्धांजलि, परिजनों को दी सांत्वना

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गांव दोहला में शहीद सैनिक विकास राघव को श्रद्धांजलि देते मुख्यमंत्री नायब सिंह।

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी सोमवार को सोहना के गांव दोहला में शहीद सैनिक विकास राघव को श्रद्धांजलि देने पहुंचे। मुख्यमंत्री ने जम्मू-कश्मीर में आतंकी मुठभेड़ के दौरान शहीद हुए शहीद विकास राघव को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शहीद विकास राघव की शहादत को नमन किया।

सीएम नायब सिंह सैनी ने शहीद विकास राघव के परिवार जनों से भी मुलाकात कर अपनी संवेदना व्यक्त की। मुख्यमंत्री नायब सैनी ने कहा कि शहीद विकास राघव ने देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया है और पूरे देश को शहीद विकास राघव की शहादत पर गर्व है। मुख्यमंत्री नायब सैनी ने कहा कि मां भारती की सेवा में कर्तव्य पालन के दौरान अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले शहीद जवानों के परिवार के साथ प्रदेश सरकार पूर्ण संवेदनशीलता के साथ खड़ी है।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि मोदी सरकार आतंकियों से सख्ती के साथ निपट रही है। देश की सीमा पर तैनात हमारे वीर जवान आतंकियों को मुंहतोड़ जवाब दे रहे हैं। नायब सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश मजबूत और सुरक्षित है। सैनी ने कहा कि आतंकियों के मंसूबे कभी भी पूरे होने वाले नहीं है। इस मौके पर सीएम सैनी के साथ खेल मंत्री संजय सिंह, पूर्व विधायक तेजपाल तंवर, भाजपा जिला अध्यक्ष कमल यादव, जिला महामंत्री रामबीर भाटी और महेश चौहान भी मौजूद रहे।

निर्धारित स्थानों पर ही लगाएं होर्डिंग-बैनर

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

- पटौदी विधानसभा में प्रचार सामग्री व जनसभा के लिए स्थान निर्धारित
- जनसभा का स्थान सुनिश्चित करने के लिए उम्मीदवारों को करना होगा आवेदन

पटौदी विधानसभा क्षेत्र में विधानसभा चुनाव-2024 के लिए जनसभा के आयोजन तथा प्रचार सामग्री लगाए जाने के लिए स्थानों का निर्धारण कर दिया गया है।

पटौदी विधानसभा क्षेत्र के निर्वाचन अधिकारी एवं एसडीएम दिनेश कुमार ने इन सभी स्थानों की सूची जिला निर्वाचन अधिकारी कार्यालय को भिजवा दी है। जिसके अनुसार पटौदी हलके में जनसभा के लिए हेलीमंडी अनाजमंडी, हेलीमंडी नगरपालिका कार्यालय के सामने पुरानी अनाजमंडी, पटौदी में गुरूग्राम रोड पर रामलीला मैदान, भोडाकलां रोड पर तहसील के सामने की नगरपालिका भूमि, होलिका मैदान, रेवाड़ी रोड पर बाल्मीकि चौपाल के साथ की नगरपालिका भूमि, पटौदी वार्ड 11 में मोती डूंगरी पार्क के साथ की जमीन, वार्ड 15 में रामजोहड़ के समीप की पालिका भूमि पर जनसभा का आयोजन किया जा सकता है।

पटौदी विधानसभा क्षेत्र में प्रचार सामग्री लगाने के लिए हेलीमंडी में मिर्जापुर रोड पर, केनरा बैंक के समीप, महचाना रोड पर, पीली धर्मशाला के समीप, शनिदेव मंदिर के नजदीक, एमएलए स्कूल और चितरकुंड जोहड़ के समीप नगरपालिका की भूमि पर प्रचार सामग्री लगाई जा सकती है। इसके अलावा गांव बलेवा में जोहड़ पर, बारोहेडी रहनवा गांव का सामुदायिक भवन, बासपदमका गांव का कम्यूनिटी सेंटर, बसतपुर में एससी चौपाल, भौकरकां में व्यायामशाला, भोड़ाकलां का ग्राम सचिवालय, भोडाखुर्द में एससी चौपाल, भूडका गांव का बस स्टैंड, बिलासपुर का मेन बस स्टैंड, बिलासपुर कलां का बस स्टैंड, बिनौला गांव का बरातघर, बहमणवास गांव की आम चौपाल, बृजपुरा में ग्राम सचिवालय, चंदला डूंगरवास में रामबाग के समीप, छावन का वृद्ध आश्रम, छिल्लरकी में जोहड़ के समीप, डाडावास में आंगनबाड़ी के नजदीक की पंचायत भूमि, दरापुर में ग्राम सचिवालय, दौलताबाद व देवलावास की व्यायामशाला, दिनोकरी, ढाणी कुंभावास, ढाणी चित्रसेन व ढाणी शंकरावाली में बस स्टैंड का स्थान होर्डिंग, बैनर आदि लगाने के लिए निश्चित किया गया है। इसके अलावा भी कई स्थानों को होर्डिंग, बैनर व जनसभाओं के लिए तय किया गया है।

मतदान को प्रेरित करने के लिए विवि में होंगे कार्यक्रम

- युवाओं में मतदान की अलख जगाएंगे यूथ आइकॉन्स, प्रशासन द्वारा जिला स्तर पर बनाया जाएगा ब्रांड एम्बेसडर

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

विधानसभा चुनाव में जिले में शत-प्रतिशत मतदान कराने के लिए स्वीप कार्यक्रम के नोडल अधिकारी एवं एडीसी हितेश कुमार मीणा के दिशा निर्देशन में विभिन्न प्रकार की जागरुक गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में जिला के प्रत्येक विश्वविद्यालय व महाविद्यालय में नवमतदाता जागरुकता गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा।

एडीसी हितेश कुमार मीणा ने इस संदर्भ में सम्बंधित अधिकारियों को विश्वविद्यालय व महाविद्यालय स्तर पर स्वीप कैलेंडर तैयार करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने बताया कि हमारा मतदान करने का अधिकार सौभाग्य हीं नहीं, बल्कि जिम्मेवारी भी है। जो हमारे लोकतंत्र के मार्ग को आकार देने का सहयोग करती है।

मतदान के लिए प्रेरित करते नजर आएंगे यूथ आइकॉन: एडीसी ने बताया कि नवमतदाता को मतदान के लिए प्रेरित करने के लिए यूथ आइकॉन्स को ब्रांड एम्बेसडर नामित किया जाएगा। जोकि कॉलेज कैंपस गतिविधियों सहित सोशल मीडिया समेत अन्य प्लेटफार्म पर युवाओं के बीच दिखाई देंगे। इसके लिए जिला प्रशासन द्वारा जल्द ही उनका जागरूकता संदेश भी सोशल मीडिया पर लॉन्च किया जाएगा।

रक्तदान शिविर में 125 यूनिट रक्त एकत्र

- सरपंच सुंदर लाल यादव के कार्यालय पर रोटरी क्लब ऑफ न्यू गुरुग्राम के सहयोग से लगाया गया शिविर

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

अपने कार्यालय में लगे शिविर में रक्त दान करते सरपंच सुंदर लाल यादव।

सेक्टर-82 स्थित सरपंच सुंदरलाल यादव के कार्यालय पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। सरपंच सुंदरलाल यादव के सहयोग से रोटरी क्लब ऑफ न्यू गुड़गांव की ओर से इस शिविर में 125 यूनिट रक्त दान हुआ। सरपंच सुंदर लाल यादव ने स्वयं भी रक्तदान करके लोगों को रक्तदान के लिए प्रेरणा दी।

शिविर में क्लब प्रेजीडेंट रोटेरियन डा. रामकुमार यादव, क्लब सचिव रोटेरियन राहुल अग्रवाल, को-स्पॉन्सरशिप प्रदेश संयोजक पंचायत राज प्रकोष्ठ भाजपा हरियाणा सरपंच सुंदर लाल यादव, को-स्पॉन्सर रोटेरियन संजय ककरालिया, प्रोजेक्ट चेयर रोटेरियन नरेश कुमार ने शिरकत की। इस शिविर को सफल बनाने में द मैजिक ऑफ रोटरी, रोटरी इंटरनेशनल व फिल्बी रियल एस्टेट का भी योगदान रहा। सरपंच सुंदर लाल यादव ने सभी संस्थाओं का इस नेक कार्य के लिए आभार जताया। उन्होंने कहा कि रक्तदान बहुत बड़ा दान होता है। इससे हम किसी का बचाने का काम करते हैं। रक्त की एक बूंद के बिना भी हमारा जीवन खतरे में पड़ जाता है। इसलिए हम सभी को स्वस्थ रहते हुए रक्त का दान जरूरत नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा कि समाजसेवा का कोई रूप नहीं होता। किसी को अपना रक्त देकर जीवन बचाना बहुत बड़ा काम होता है। क्लब प्रेजीडेंट रोटेरियन डा. राम कुमार यादव ने कहा कि रोटरी क्लब समाज की सेवा के कार्यों में सदैव अग्रणी रहता है।

विद्यार्थियों का दल कश्मीर संवाद यात्रा के लिए रवाना

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

जेसी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए के संचार एवं मीडिया तकनीकी विभाग के 10 विद्यार्थियों का दल कश्मीर संवाद यात्रा के लिए रवाना हुआ है। मीडिया छात्र संगठन एवं इंडियन मीडिया सेंटर के संयुक्त तत्वावधान में कश्मीर संवाद यात्रा में हरियाणा, पंजाब एवं हिमाचल प्रदेश से 100 सदस्य शामिल हैं। पत्रकारिता एवं समाज कार्य में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यावहारिक ज्ञान में दक्षता के लिए आयोजित कश्मीर संवाद यात्रा में विश्वविद्यालयों से 10 से 12 सदस्य चयनित किए गए हैं। आजादी के अमृत काल में 2 से 8 सितंबर तक 100 छात्रों का दल कश्मीर संवाद यात्रा हेतु कश्मीर जा रहा है। इस अध्ययन यात्रा में छात्राएं अधिक हैं। अध्ययन यात्रा के दौरान सभी छात्रों को कश्मीर के कुछ प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थान, विश्वविद्यालयों का भ्रमण कराएंगे।

जे.सी. बोस विश्वविद्यालय के संचार एवं मीडिया तकनीकी विभाग के अध्यक्ष डॉ.पवन सिंह ने बताया कि कश्मीर संवाद यात्रा में गत वर्ष भी हमारे विद्यार्थी शामिल रहे। इस वर्ष भी सहायक प्राचार्य डॉ.अखिलेश त्रिपाठी के नेतृत्व में समाज कार्य एवं पत्रकारिता के 10 विद्यार्थियों का दल रवाना हुआ है। उन्होंने बताया कि हिमाचल, पंजाब एवं हरियाणा की तरफ से प्रेम एवं आपसी भाईचारे का संदेश लेकर कश्मीर के समुदायों एवं छात्र-छात्राओं से संवाद स्थापित करेंगे, जो समाज व राष्ट्रहित के लिए अत्यंत आवश्यक है।

सूरजकुंड इंटरनेशनल स्कूल ने प्राप्त किया राष्ट्रीय स्कूल पुरस्कार-2024

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

सूरजकुंड इंटरनेशनल स्कूल, दयालबाग को राष्ट्रीय स्कूल अवार्ड 2024 से सम्मानित किया गया। दिल्ली में नेशनल स्कूल अवार्ड 2024 कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसमें विभिन्न राज्यों के स्कूलों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया एवं सभी ने अलग-अलग क्षेत्रों में पुरस्कार प्राप्त किया।

भारत के विभिन्न राज्यों में हरियाणा राज्य के सूरजकुंड इंटरनेशनल स्कूल ने सभी स्कूलों को पीछे छोड़ते हुए इको फ्रेंडली क्षेत्र में राष्ट्रीय स्कूल अवार्ड 2024 प्राप्त किया परन्तु सूरजकुंड इंटरनेशनल स्कूल एक अकेला ऐसा स्कूल रहा जिसने दो कैटेगरी में पुरस्कार प्राप्त किया। पहला पुरस्कार स्कूल को इको फ्रेंडली 2024 व दूसरा प्रधानाचार्या श्रीमती शुभ्रता सिंह को शिक्षा के क्षेत्र में उनकी उत्कृष्टता एवं प्रतिबद्धता के लिए दिया गया शिक्षा स्तर 2024 को ऊँचा उठाने में उनके उल्लेखनीय योगदान को प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जिसमें शिक्षकों और पूरे स्कूल समुदाय की कड़ी मेहनत की सराहना की गई । यह उपलब्धि शिक्षा में उत्कृष्ट के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। वास्तव में यह पुरस्कार शिक्षकों को प्रेरणा देने और सशक्त बनाने,सीखने के प्रति प्रेम को बढ़ावा देने और टीम के सामूहिक प्रयास को दर्शाता है जो हर शिक्षक की सफलता और भलाई को सुनिश्चित करता है।

संक्षिप्त समाचार

आरडब्ल्यूए के चुनाव में विजेता प्रवीण मलिक व उनका पैनल।

आरडब्ल्यूए के चौथी बार अध्यक्ष बने प्रवीण मलिक

गुरुग्राम। न्यू गुरुग्राम की सबसे बड़ी गेटेड सोसाइटी सारे होम्स में आरडब्ल्यूए का चुनाव शांतिपूर्ण संपन्न हुआ। कुल मतदान 77 प्रतिशत रहा, जिसने चौथी बार प्रवीण मलिक तो भारी बहुमत से आर.डब्ल्यू.ए अध्यक्ष चुना गया। प्रवीण मलिक को 249 वोट प्राप्त हुए और प्रतिद्वंद्वी को 56 वोट मिले। प्रवीण मलिक के पैनल से पूरी टीम ने विजय प्राप्त की। विनोद मुंशी को सचिव, भूपेन्द्र नेगी को उपाध्यक्ष व नीरज लांबा को कोषाध्यक्ष चुना गया। यहां बताया गया कि 2016 में बिल्डर भाग गया था। 2019 में इंसोल्वेंसी हो गई थी। कई कार्य अधूरे थे, लेकिन 2017 में जब आर.डब्ल्यू.ए का गठन हुआ तो प्रवीण मलिक के नेतृत्व में सोसाइटी ने ठीक से संचालन होने लगा। बिजली, वाटर सप्लाई कनेक्शन, सरकारी बस सुविधा, सोसाइटी का रखरखाव, सभी अनिवार्य कॉम्प्लिएंसेस को पूरा किया। 2021 में प्रवीण मलिक से स्वेच्छा से चुनाव नहीं लड़ा। वर्ष 2022 में मध्यवर्ती चुनाव हुए तो लोगों ने फिर से प्रवीण मलिक और उनकी टीम पर विश्वास जताते हुए उनको प्रचंड बहुमत से चुना। इस टीम ने सोसाइटी की कायापलट कर दी।

मौका मिला तो बिजली-पानी समस्या सुलझाऊंगा: रफेल

पटौदी। सोमवार को रफेल जावेद पटौदी ने कहा कि अगर मेवात की

रफेल जावेद पटौदी

जनता ने मुझे मौका दिया तो मैं मेवात के लिए पानी की मांग करूंगा। मेवात में सबसे ज्यादा पानी की समस्या है जो हर इंसान की बुनियादी जरूरत है। साथ में बिजली की समस्या भी है उसपर भी काम करेंगे। ये दोनों ही मेवात की बुनियादी समस्याएं हैं जिस पर कोई काम नहीं करता। मैं सबसे पहले बुनियादी समस्याओं पर काम करूंगा। मुझे नूंह की जनता ने मौका दिया तो मैं नूहं में सेक्टर और इंडस्ट्रीज लाने की कोशिश करूंगा, क्योंकि सेक्टर आने से नूहं का ज्यादा विकास होगा और इंडस्ट्रीज आने से मेवात की बेरोजगारी खत्म हो जाएगी। भाजपा पूरे देश में विकास करना चाहती है और नूहं को एक विकसित जिला बनाना चाहती है।

डीसी ने दिए चुनाव के सफल संचालन के निर्देश

फरीदाबाद। उपायुक्त विक्रम सिंह ने कहा कि सही प्रशिक्षण लेने के उपरांत कार्य के बेहतर क्रियान्वयन के लिए कमी की गुंजाइश बहुत ही कम होती है। जिला निर्वाचन अधिकारी विक्रम सिंह ने आज स्थानीय अमृता अस्पताल के ऑडिटोरियम में विधानसभा चुनाव-की प्रक्रिया से जुड़े सहायक रिटर्निंग अधिकारी, सेक्टर ऑफिसर्स, प्रजाइडिंग ऑफिसर और सहायक प्रजाइडिंग ऑफिसर को चुनाव के सफल संचालन के निर्देश दिए। विक्रम सिंह ने प्रैजाइडिंग अधिकारी को मतदान केंद्र पर सामान्य निगरानी में बिजली, पेयजल, रैम्प सहित निर्वाचन आयोग की हिदायतों के अनुसार अन्य मूलभूत सुविधाओं की चेकिंग करना, मतदान प्रक्रिया का प्रबंधन करना, चुनाव अधिकारियों की गणना और भारत निर्वाचन आयोग की हिदायतों के अनुसार प्रबंध करने बारे में विस्तृत जानकारी दी। वहीं सहायक प्रैजाइडिंग अधिकारी द्वारा प्रैजाइडिंग अधिकारी के साथ सहायता करना, मतदान प्रक्रिया में सहायता प्रदान करना, मतदान केंद्र की सुरक्षा और क्रियान्वयन में सहायता करने के लिए प्रशिक्षित किया गया।

'सफाई कार्य से संबंधित डाटा अपलोड करने में तेजी लाएं'

- निगम आयुक्त डा. नरहरि सिंह बांगड़ ने अधिकारियों को दिए निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

नगर निगम आयुक्त डा. नरहरि सिंह बांगड़ ने अधिकारियों से कहा कि शहरी स्थानीय निकाय विभाग द्वारा संचालित ठोस कचरा प्रबंधन निगरानी पोर्टल पर सफाई कार्य से संबंधित डाटा अपलोड करने के कार्य में और अधिक तेजी लाई जाए। उन्होंने कहा कि जून, जुलाई व अगस्त माह के सफाई कार्य से संबंधित बिलों की अदायगी एजेंसियों को अपलोड किए गए डाटा के हिसाब से ही की जाएगी तथा भविष्य में भी डाटा के हिसाब से ही अदायगी होगी।

निगमायुक्त ने उक्त निर्देश सोमवार को नगर निगम गुरुग्राम, नगर परिषद सोहना व पटौदी जाटौली मंडी तथा नगर पालिका फरुखनगर के अधिकारियों के साथ आयोजित वर्चुअल बैठक में दिए। उन्होंने कहा कि हालांकि अभी तक काफी डाटा पोर्टल पर अपलोड किया गया है, लेकिन जो डाटा शेष रह गया है, उसे भी जल्द से जल्द अपलोड करना सुनिश्चित किया जाए।

सभी संयुक्त आयुक्त अपने-अपने जोन से इस कार्य को अपनी देख-रेख में करवाएं। इसी प्रकार सोहना, पटौदी तथा फरुखनगर के अधिकारी भी जल्द से जल्द कार्य पूर्ण करना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि पोर्टल पर डाटा अपलोड करने संबंधी किसी भी प्रकार के सहयोग या सहायता के लिए आईटी मैनेजर गिरिराज व निगम की स्वच्छ भारत मिशन शाखा के कर्मचारी धर्मेन्द्र से संपर्क करें। इस मौके पर अतिरिक्त निगमायुक्त डा. बलप्रीत सिंह व डा. सुभिता ढाका, एडिशनल म्युनिसिपल कमिश्नर वाईएस गुप्ता, संयुक्त आयुक्त प्रदीप कुमार, अखिलेश यादव, सुमन भांखड़ व विजय यादव सहित नगर निगम गुरुग्राम, नगर परिषद सोहना व पटौदी जाटौली मंडी तथा नगर पालिका फरुखनगर के अधिकारीगण उपस्थित थे।

पुलिस ने फरीदाबाद सीमा पर लगाए इंटरस्टेट नाके

फरीदाबाद। पुलिस आयुक्त ओमप्रकाश नरवाल के दिशा निर्देश पर चुनाव में सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर पुलिस द्वारा फरीदाबाद बॉर्डर पर संदिग्ध व्यक्तियों और वाहनों की निगरानी रखने के लिए इंटर स्टेट नाके लगाए गए हैं। इसके साथ ही अर्धसैनिक बल के साथ मिलकर एनआईटी, बल्लभगढ़ व सेन्ट्रल जोन में फ्लैग मार्च निकालकर आमजन को चुनाव के दौरान शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए जागरूक किया जा रहा है। चुनाव में कानून व शांति व्यवस्था कायम रखने के लिए फरीदाबाद पुलिस द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं।

अमित पहलवान बने हिन्दू वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष

गुरुग्राम। पटौदी खंड के गांव कारोला से अमित पहलवान पिछले कई वर्षों से समाजसेवा व राजनीति में सक्रिय हिन्दू वाहिनी संगठन में प्रदेश महासचिव को अब राष्ट्रीय अध्यक्ष अश्वनी मिश्रा व राष्ट्रीय महासचिव मास्टर सुरेन्द्र चौहान के नेतृत्व में क्षेत्रीय कार्यालय पर प्रदेश उपाध्यक्ष रवि चौहान की अध्यक्षता में हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया। समस्त पदाधिकारियों ने उनको पुष्प गुच्छ व माला पहना कर उनका स्वागत किया। नवीन दायित्व की शुभकामनाएं दी। राष्ट्रीय महासचिव मास्टर सुरेंदर चौहान ने उनको शॉल भेंटकर उनका अभिनंदन किया।

शिविर में प्रशिक्षण ले रहीं सराय ख्वाजा की छात्राएं

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

- ट्रेनिंग कैंप में भाग लेते हुए सोलो डांस, ग्रुप डांस, ग्रुप सोंग, लक्की स्टार आदि में कर रही उत्कृष्ट प्रदर्शन

हरियाणा रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा कुरुक्षेत्र के गीता ज्ञान संस्थान में आयोजित किए जा रहे छः दिवसीय राज्य स्तरीय जूनियर रेडक्रॉस प्रशिक्षण शिविर में राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सराय ख्वाजा, की जूनियर रेडक्रॉस और सैंट जॉन एंबुलेंस ब्रिगेड सदस्य छात्राएं विभिन्न् गतिविधियों के बारे में गहन प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

प्राचार्य रविन्द्र कुमार मनचंदा के मार्गदर्शन में यह प्रशिक्षण प्राप्त किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि प्रत्येक वर्ष राज्य स्तरीय शिविर हरियाणा राज्य की रेड क्रॉस सोसायटी की शाखा द्वारा देश के विभिन्न प्रांतों में आयोजित किया जाता है जिस में सामान्यत: राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सराय ख्वाजा की जूनियर रेडक्रॉस सदस्य टीम को प्रतिभागिता के लिए सुअवसर प्राप्त होता हैं। जूनियर रेडक्रॉस सदस्य एवं विद्यालय परिवार ने प्रतिभागिता कर रहे छात्राओं और अध्यापकों की अच्छी तैयारी करवाई जाती है तथा उन्हें शिविर में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए उत्साहवर्धन किया जाता हैं। विद्यालय की जूनियर रेडक्रॉस काउंसलर और प्राचार्य रविंद्र कुमार मनचंदा ने कहा कि विद्यालय की पांच जूनियर रेडक्रॉस सदस्य छात्राएं और अंग्रेजी प्राध्यापिका अर्चना गीता ज्ञान संस्थानम कुरुक्षेत्र में स्टेट रेडक्रॉस ट्रेनिंग कैंप में प्रतिभागिता करते हुए सोलो डांस, ग्रुप डांस, ग्रुप सोंग, लक्की स्टार आदि में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं।

वजीराबाद के लोग नवीन गोयल के समर्थन में हुए लामबंद

- खोली वाले बाबा को भाजपा नेता ने नमन करके लिया आशीर्वाद

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

वजीराबाद में जनसंवाद कार्यक्रम में ग्रामीणों से समर्थन मांगते नवीन गोयल।

वजीराबाद के कम्युनिटी सेंटर में व्यापार प्रकोष्ठ भाजपा, हरियाणा के प्रदेश संयोजक एवं गुरुग्राम विधानसभा से भावी प्रत्याशी नवीन गोयल का जनसंवाद कार्यक्रम यादगार बन गया। कार्यक्रम में नवीन गोयल का ऐतिहासिक स्वागत किया। नवीन गोयल को लोग बाहर से कंधों पर बिठाकर कम्युनिटी सेंटर में मंच तक लाए। युवाओं ने पुष्पवर्षा की गई। हजारों की संख्या में ग्रामीणों द्वारा इस ऐतिहासिक स्वागत के लिए नवीन गोयल ने वजीराबाद की सरदारी, युवाओं के जोश, नारी शक्ति के आशीर्वाद के लिए आभार जताया।

मंच पर भी लोगों ने फूलों की बरसात की। भारत माता के जयकारे, नवीन गोयल के जयकारे लगाते हुए वजीराबाद के ग्रामीणों ने कार्यक्रम को भव्य बना दिया। इस अवसर पर आरडब्ल्यूए पदाधिकारियों, बड़े-बुजुर्गों ने पगड़ी पहनाकर स्वागत किया। बड़ी माला से ग्रामीणों ने उनका स्वागत किया। खोली वाले बाबा के जयकारे लगवाते हुए नवीन गोयल ने कहा कि वजीराबाद में उन्हें जो सम्मान और आशीर्वाद दिया है, उसे वे कभी भूलेंगे नहीं। इस सम्मान को कई गुणा बढ़ाकर गांव को सम्मान देंगे। वजीराबाद का जिसे साथ मिला है, वह कभी पीछे नहीं रहा। गांव के बड़े, बुजुर्गों को नमन करते हुए नवीन गोयल ने कहा कि गांव का उन्हें पूर्ण साथ चाहिए। उनके आशीर्वाद से, युवाओं के सहयोग से वे विधानसभा पहुंचकर गुरुग्राम की हर उस समस्या से निजात दिलाने का काम करेंगे जिसके कारण लोग वर्षों से परेशानी झेल रहे हैं।

जजपा विधायक व सांगवान भाजपा में शामिल

भाजपा नेताओं ने देवेन्द्र बबली, सुनील सांगवान और संजय कबलाना को पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराई

- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बड़ौली व सह प्रभारी ने किया स्वागत
- दादरी व फतेहाबाद में बदलेंगे समीकरण

शिखा शर्मा। चंडीगढ़

हरियाणा की गठबंधन सरकार में विकास एवं पंचायत मंत्री रहे देवेंद्र बबली तथा गुरुग्राम की भोंडसी जेल के पूर्व अधीक्षक व कई जजपा नेता सोमवार को भाजपा में शामिल हो गए।

कार्यक्रम के दौरान भाजपा राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह, राष्ट्रीय सचिव ओम प्रकाश धनखड़, प्रदेशाध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली, हरियाणा चुनाव सह प्रभारी बिप्लब कुमार देब और भाजपा राष्ट्रीय मीडिया सह प्रभारी संजय मयूख मौजूद रहे। भाजपा नेताओं ने देवेन्द्र बबली, सुनील सांगवान और संजय कबलाना को भारतीय जनता पार्टी का पटका पहनाकर व सदस्यता की पर्ची देकर भाजपा की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण करवाई और उनका पार्टी में स्वागत किया। राष्ट्रीय महामंत्री अरूण सिंह ने कहा कि आज भाजपा का सदस्यता दिवस का शुभारंभ हो रहा है। ऐसे मौके पर पूर्व मंत्री देवेंद्र बबली, संजय कबलाना और सुनील सांगवान अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल हुए इन सभी का पार्टी में स्वागत है। उन्होंने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने थोड़े से समय में ही जनता के हितों के लिए 126 काम किए हैं। त्रिपुरा के पूर्व सीएम एवं हरियाणा विधानसभा चुनाव के सह प्रभारी बिप्लब कुमार देब ने कहा जिस विश्वास के साथ देवेंद्र बबली, सुनील सांगवान और संजय कबलाना ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की है निश्चित ही आगामी चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में पूर्ण बहुमत के साथ विजयी होंगे।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली ने भी भाजपा में शामिल हुए तीनों नेताओं का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि भाजपा विश्व की सबसे बड़ी पार्टी है। पूर्व मंत्री देवेंद्र बबली, संजय कबलाना जिनका अपना जनाधार है। राजनीतिक पार्टियों में अलग-अलग पदों पर रहे हैं और चुनाव भी लड़ा है। उन्होंने कहा कि सुनील सांगवान के पिता भी विधायक एवं मंत्री रहे हैं और आज सरकारी नौकरी छोड़कर भाजपा में शामिल हुए हैं मैं इन सभी नेताओं और कार्यकर्ताओं का अभिनंदन करता हूं। मोहन लाल बड़ौली ने कहा कि विधानसभा चुनाव इतिहास रचने वाला चुनाव होगा।

हरियाणा में 300 पार हुए डेंगू के मामले

- पंचायत विभाग अलर्ट, गांवों में फॉगिंग करने के निर्देश
- पंचायत विभाग ने सीईओ जिला परिषद, डीडीपीओ व बीडीपीओ को लिखा पत्र

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

प्रदेश में डेंगू के डंक का कहर बढ़ना शुरू हो गया है। शहरी क्षेत्रों के साथ गांवों में भी डेंगू ने दस्तक दे दी है। प्रदेश में डेंगू के मामलों का आंकड़ा 358 के पार पहुंच गया है। लिहाजा, विकास एवं ग्राम पंचायत विभाग ने गांवों मे फोगिंग करने के निर्देश जारी किए हैं।

विकास एवं पंचायत विभाग के महानिदेशक ने सभी मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद, जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी और खंड विकास एवं पंचायत अधिकारियों को पत्र लिखकर निर्देश जारी किए हैं कि अगस्त माह में वर्षा होने के चलते जगह-जगह जलभराव होने से मच्छरों का प्रकोप बढ़ रहा है। इसलिए डेंगू व मलेरिया बीमारियों की रोकथाम के लिए फॉगिंग कराई जाए। पंचायत विभाग के महानिदेशक की ओर से स्पष्ट हिदायत दी गई कि फॉगिंग कार्य में किसी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। सीईओ जिला परिषद, परिषद सदस्यों और खंड विकास अधिकारी ब्लाक समिति सदस्यों के साथ समन्वय बनाकर फोगिंग कार्य को प्राथमिकता के आधार पर करवाएं।

प्रदेश भर में 6841 गांव और 6200 ग्राम पंचायतों में खाली प्लाट और गलियों व नालियों मे पानी जमा होने से डेंगू व मलेरिया के मामलों में बढ़ोतरी हो रही है। वहीं प्रदेश में डेंगू के मामलों के बढ़ते ग्राफ को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग भी अलर्ट हो गया है। स्वास्थ्य विभाग की ओर से शहरों के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में फोगिंग की जा रही है। स्वास्थ्य विभाग की ओर से डेंगू की रोकथाम को लेकर चेकिंग अभियान भी चलाया जा रहा है। कूलर, घरों के फ्रीज, एसी, गमले व छतों पर पानी जमा के सैंपल भरे जा रहे हैं। यही नहीं लोगों का डेंगू व मलेरिया बचाव को लेकर जागरूक भी किया जा रहा है।

नौएडा मेट्रो रेल कॉरपोरेशन लिमिटेड
(भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)
खण्ड तृतीय, तृतीय तल, गंगा शॉपिंग कॉम्पलेक्स, सैक्टर-29, नौएडा 201301, गौतमबुद्ध नगर, यू.पी., फोन: 0120-2210603/04/05

रूचि की अभिव्यक्ति आमंत्रण सूचना

1. ईओआई संख्या: **NMRC/EOI/PD/341/2024 dated 03.09.2024**
पीपीपी मॉडल पर प्लॉट एफसी-04, सैक्टर 94, नौएडा (ओखला पक्षी अभयारण्य मेट्रो स्टेशन के पास) के संपत्ति विकास और वाणिज्यिक उपयोग के लिए रूचि की अभिव्यक्ति

एनएमआरसी ने उक्त कार्य के लिए अनुभवी डेवलपर्स से रूचि की अभिव्यक्ति आमंत्रित की है। ईओआई को एनएमआरसी की वेबसाईट **www.nmrcnoida.com** पर **03.09.2024** को अपलोड किया जायेगा। इच्छुक डेवलपर्स एनएमआरसी की वेबसाईट से दस्तावेज डाउनलोड कर सकते हैं। ईओआई में संशोधन, यदि कोई हो, वेबसाईट पर अपलोड किया जायेगा।

ईओआई की प्री-सबमिशन मीटिंग 18.09.2024 को 11:00 बजे एनएमआरसी मुख्यालय में होगी।

एनएमआरसी मुख्यालय में भौतिक प्रारूप में ईओआई जमा करने की अंतिम तिथि 03.10.2024 को 15:00 बजे तक है।

कार्यकारी निदेशक, एनएमआरसी लिमिटेड

किसानों की शिकायतों के निवारण के लिए समिति गठित

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने शंभू सीमा पर प्रदर्शन कर रहे किसानों की शिकायतों के सौहार्दपूर्ण निवारण के लिए पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति नवाब सिंह की अध्यक्षता में सोमवार को एक समिति का गठन किया। इसके साथ ही न्यायालय ने कहा कि किसानों के प्रदर्शन के मुद्दे को राजनीतिक रंग नहीं दिया जाना चाहिए।

न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां की पीठ ने समिति को निर्देश दिया कि एक सप्ताह के अंदर वह अपनी पहली बैठक बुलाए। उसने समिति से यह भी कहा कि वह आंदोलनकारी किसानों से संपर्क साधे और उनसे तत्काल पंजाब और हरियाणा के बीच शंभू सीमा से ट्रैक्टर और ट्रॉली आदि हटाने को कहा जाए ताकि आम यात्रियों को राहत मिले।

इसमें कहा गया है कि पंजाब और हरियाणा दोनों सरकारें समिति को सुझाव देने के लिए स्वतंत्र होंगी। किसान अपनी उपज के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की कानूनी गारंटी सहित कई मांगों को लेकर आंदोलन कर रहे हैं।

कांग्रेस की केंद्रीय चुनाव समिति ने टिकटों पर किया मंथन

- किसी भी समय जारी हो सकती है हरियाणा में पहली सूची

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा कांग्रेस में विधानसभा टिकटों को लेकर मचे घमासान के बीच सोमवार की शाम केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में हरियाणा को लेकर मंथन किया गया। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की उपस्थिति में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष

मल्लिकार्जुन खड? के नेतृत्व में हुई बैठक में कांग्रेस स्क्रीनिंग कमेटी के अध्यक्ष अजय माकन व हरियाणा प्रभारी दीपक बाबरिया के अलावा हरियाणा से नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र हुड्डा, प्रदेशाध्यक्ष उदयभान ने भाग लिया। खास बात यह रही कि कमेटी का सदस्य होने के बावजूद कुमारी सैलजा व रणदीप सुरजेवाला शामिल नहीं हुए।

कांग्रेस स्क्रीनिंग कमेटी पहले भी चार बार बैठक कर चुकी है। अंतिम बैठक में पैनल तैयार होने के बाद कुमारी सैलजा, रणदीप सुरजेवाला तथा अजय यादव द्वारा हाईकमान को अपनी सूची भेज दी गई। जिसके बाद कांग्रेस की पहली सूची को दो दिन के लिए टाल दिया गया।

सोमवार को हुई बैठक के बाद अब पहली सूची जारी करने को लेकर रास्ता साफ हो गया है। माना जा रहा है कि कांग्रेस की पहली सूची मंगलवार को आ सकती है। कांग्रेस दो से तीन चरणों में सूची जारी कर सकती है।

TECHNO ELECTRIC & ENGINEERING COMPANY LIMITED
CIN: L40108UP2005PLC094368
Registered Office: C-218, Ground Floor (GR-2), Sector-63, Noida, Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh, India, 201307, Phone No: (0120) 2406030
Corporate Office: 1B, Park Plaza, South Block, 71, Park Street, Kolkata-700 016
Phone No: (033) 4051 3000, Fax No: (033) 4051 3326
Website: www.techno.co.in, E-mail: desk.investors@techno.co.in

NOTICE OF THE 19TH ANNUAL GENRAL MEETING TO BE HELD THROUGH VIDEO CONFERENCING ("VC") OR OTHER AUDIO VISUAL MEANS ("OAVM"), REMOTE E-VOTING INFORMATION, BOOK CLOSURE AND DIVIDEND

NOTICE is hereby given that the 19th Annual General Meeting of the Members of **Techno Electric & Engineering Company Limited** will be held on **Thursday, the September 26, 2024 at 3.30 p.m.** through VC/OAVM to transact the businesses as set out in the Notice convening the Meeting (the "Notice") in compliance with the relevant provisions of the Companies Act, 2013 (as amended) (the "Act") and Rules made thereunder and the SEBI (Listing Obligations and Disclosure Requirements) Regulations, 2015 (amended) (the "Listing Regulations") and in compliance with Ministry of Corporate Affairs(MCA) circular dated 05th May, 2022 and SEBI circular dated 13th May, 2022 and such other applicable MCA and SEBI circulars (collectively referred to as the "relevant circulars") to transact the business as set out in the notice of the Meeting.

Dispatch of Notice and Annual Report via e-mail:
In accordance with the said Circulars, the Notice convening the AGM alongwith the Annual Report Including Audited Financial Statements for the financial year ended **March 31, 2024** has been sent only through e-mails to those Members whose e-mail addresses are registered with the Company or the Registrar and Share Transfer Agent (the "RTA"), i.e., M/s. Niche Technologies Private Limited or the Depository Participant(s) and holding equity shares of the Company as on August 16, 2024. The Notice and the Annual Report are available on the websites of the Company viz., www.techno.co.in and of the Stock Exchanges where the Equity Shares of the Company are listed viz., www.nseindia.com and www.bseindia.com. The Notice shall also be available on the e-Voting website of the agency engaged for providing e-Voting facility i.e. National Securities Depository Limited (NSDL) viz., www.evoting.nsdl.com.

Participation at the AGM:
Pursuant to Section 108 and other applicable provisions, if any, of the Act, Rule 20 of the Companies (Management and Administration) Rules, 2014 and Regulation 44 of the Listing Regulations, the Company has engaged the services of NSDL to provide remote e-Voting facility and e-Voting facility during the AGM to all the eligible Members to enable them to cast their votes electronically in respect of the businesses to be transacted at the Meeting. The manner and Instructions to cast votes through remote e-Voting as well as through e-Voting system during the Meeting have been provided alongwith the Notice.

Manners of casting votes through remote e-voting and e-voting during AGM:
The businesses set out in the Notice shall be transacted through e-voting only. The Members, whose names appear in the Register of Members or in the Register of Beneficial Owners maintained by the Depositories as on Thursday, September 19, 2024 being the cut-off date shall be entitled to avail the e-Voting facility. Once vote(s) on Resolution(s) are cast by any Member, the same cannot be changed subsequently. The remote e-Voting period will commence on **Sunday, September 22, 2024 (9:00 A.M. IST) and will end on Wednesday, September 25, 2024 (5:00 P.M. IST)**. Thereafter the module of remote e-voting shall be disabled by NSDL. A person who is not a member, as on the cut-off date, i.e. **Thursday, September 19, 2024** should treat the Notice for Information purpose only.
Members attending the AGM, who have not cast their votes by remote e-Voting, shall be eligible to exercise their voting rights during the AGM through e-Voting system via www.evoting.nsdl.com. Members who have exercised their voting rights by remote e-Voting prior to the AGM may also attend the AGM through VC or OAVM but shall not be entitled to cast their votes again during the AGM.
Any person, who acquires equity shares of the Company and becomes a Member after despatch of the Notice of the AGM and holds shares as on the cut-off date, i.e.,Thursday, September 19, 2024 may obtain the login Id and password for e-Voting, by sending a request to NSDL at evoting@nsdl.co.in. Members who are already registered with NSDL for remote e-Voting can use their existing User Id and Password for e-Voting.
All documents referred to In the Notice and the Explanatory Statement thereto shall be made available for Inspection by the Members of the Company, without payment of fees, upto and including the date of the AGM. Members desirous of inspecting the same may send their requests at desk.investors@techno.co.in from their registered e-mail addresses mentioning their names and folio numbers /demat account numbers.

Book Closure Notice for AGM and Record Date for Dividend Payment:
NOTICE is hereby also given that pursuant to Section 91 of the Act and Rules made thereunder and Regulation 42 of the Listing Regulations, the Register of Members and the Share Transfer Registers of the Company shall remain closed from **Friday, September 20, 2024 to Thursday, September 26, 2024 (both days inclusive)** for the purpose the AGM.
Further the Dividend on Equity Shares for the financial year ended March 31, 2024, as recommended by the Board, if declared at the AGM, will be paid, subject to deduction of tax at source to:
a) those Members whose names appear in the Register of Members of the Company at the end of business hours on **Friday, September 13, 2024.**
b) those 'Beneficial Owners' entitled thereto, in respect of shares held in demat mode, whose names shall appear in the statements of beneficial ownership at the end of business hours on **Friday, September 13, 2024**, as furnished by respective Depositories, viz. National Securities Depository Limited (NSDL) and Central Depository Services (India) Limited (CDSL).

Manner for registering KYC including Bank details for receiving Dividend:
For members holding shares in physical mode SEBI vide its circular dated 03rd November, 2021 had mandated registration of PAN, KYC details and nomination. Members holding Shares in physical form are, therefore requested to submit their PAN, KYC details including Bank details and nomination details to our RTA at nichetechpl@nichetechpl.com. A copy of such form can be downloaded from the website of the Company at www.techno.co.in or from the website of RTA nichetechpl.com. Non availability of the KYC documents/details RTA on or after 01st April, 2024 will result in freezing of the physical folios. Members holding shares in the physical mode are also requested to dematerialized their shareholding at the earliest.
Members holding shares in dematerialized mode are requested to update their complete details with their depository participant to avoid delay in receiving in Dividend.

Tax on Dividend:
Members are requested to refer the Notice of AGM regarding complete details and procedure to be followed in regards to Tax on Dividend.
In case of any queries/grievances relating to e-Voting, Members may refer to "Frequently Asked Questions on e-Voting (For Shareholders).pdf" and "e-Voting Manual - Shareholder.pdf" available at the "Download" section of NSDL e-Voting website, i.e. www.evoting.nsdl.com or call at 022 4886 7000 or contact Ms. Pallavi Mhatre, Manager of NSDL at Telephone Nos.: (022) 24994360 / (022) 24994545 or at e-mail id: evoting@nsdl.co.in or at NSDL, 'Trade World', 'A' Wing, 4th Floor, Kamala Mills Compound, Lower Parel, Mumbai - 400013. For any further assistance, you may contact Mr. Jyotirmoy Banerjee, Investor Relations Manager at Telephone No.: (033) 22895796.

Manner of registering/e-mail address:
Please keep your updated mail id registered with the RTA/your depository participant to receive timely communication. For member who have not yet updated their e-mail address the process of registration is provided below:
Physical Holding:- Members holding shares in physical mode and who have not yet registered /updated their e-mail address with the Company are requested to register/update the same by submitting duly filled and signed Form ISR 1 with the RTA Niche Technology Private Limited at nichetechpl@nichetechpl.com.
Demat Holding:- Members holding shares in dematerialized mode are requested to register/update their e-mail address with the relevant depository participants.

For Techno Electric & Engineering Company Limited
Sd/-
Place: Kolkata — Niranjan Brahma
Date: 02.09.2024 — Company Secretary & Compliance Officer

फैक्टरी के प्रदूषण से दुखी लोग डीसी से मिले

- मानक टबरा में स्टाईलैम फैक्ट्री पर जहरीला पानी खेतों में छोड़ने का आरोप
- पशुओं में फैल रही बीमारी, धान की फसल हुई खराब
- खेत में जाने वाले किसान हो रहे चर्म रोग का शिकार

उपायुक्त को ज्ञापन सौंपते ग्रामीण।

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

पंचकूला जिले के रामगढ़-रायपुररानी मार्ग पर स्थित गांव मानक टबरा के निकट चल रही स्टाईलैम प्लाईवुड पर जहरीला पानी खेतों में छोड़ने का आरोप लगाते हुए मानक टबरा के किसान आज जिला उपायुक्त से मिले और उद्योग समूह के खिलाफ शिकायत दी। जिला उपायुक्त ने प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारियों को इस मामले में कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

मानक टबरा के किसान विक्रम, कृष्ण गोपाल, रणधीर, महावीर वालिया अरुण शर्मा, कुलदीप पोसवाल ने जिला उपायुक्त डॉ.यश गर्ग को दिए ज्ञापन में कहा कि स्टाईलैम फैक्ट्री द्वारा अपने उत्पाद तैयार करते समय केमिकल का इस्तेमाल किया जाता है। उद्योग प्रबंधकों द्वारा केमिकल युक्त पानी को खुले में बहाया जा रहा है। बारिश का फायदा उठाते हुए यह पानी उद्योग के साथ लगते खेतों में छोड़ा जा रहा है। जिससे किसानों की धान की फसल बर्बाद हो गई है। उन्होंने बताया कि वह जब अपने खेत में जाते हैं तो पैरों में खुजली व चर्म रोग हो रहे हैं। जो पशु

प्रदूषित पानी से खराब हुई फसल।

उस खेत में चला जाता है कि या धोखे से बरसाती पानी समझकर केमिकल युक्त पानी पी लेता है तो वह भी बीमार पड़ जाता है। ग्रामीणों ने बताया कि उद्योग प्रबंधकों द्वारा बरसात का फायदा उठाते हुए बगैर ट्रीट किया हुआ पानी यहां छोड़ा जा रहा है। इस बारे में प्रबंधकों को बार-बार कहने पर भी कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। ग्रामीणों के अनुसार जब इस उद्योग के विस्तार को लेकर जनता दरबार लगाया गया था तो उस समय भी उनके द्वारा विरोध किया गया था। विरोध के बावजूद प्रशासन की मिलीभगत से यहां उद्योग का विस्तार किया गया और आज जल प्रदूषण के कारण लोगों का जीना मुश्किल हो गया है। किसानों ने बताया कि अगर प्रशासन द्वारा इस मामले में कोई कार्रवाई नहीं की गई तो वह उद्योग के बाहर धरना देंगे और रामगढ़ से रायपुर रानी की तरफ जाने वाले मार्ग पर यातायात अवरूद्ध किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जिला उपायुक्त ने उनकी समस्या को सुनकर संबंधित विभागीय अधिकारियों को जांच के आदेश दिए हैं।

हिंदुस्तान ऑटो फाइनेंस लिमिटेड
CIN: L65910DL1980PLC010617
पंजीकृत कार्यालय: केबिन नंबर डीए-8, द्वितीय तल, विकास मार्ग, शकरपुर, नई दिल्ली-110092
ईमेल: **hindaf1980@gmail.com**, वेबसाइट: **www.hindaf.in**

44वीं वार्षिक आम बैठक, रिमोट ई-वोटिंग की सूचना और बुक क्लोजर की सूचना

इसके द्वारा सूचित किया जाता है कि हिंदुस्तान ऑटो फाइनेंस लिमिटेड के सदस्यों की 44वीं वार्षिक आम बैठक ("एजीएम") सोमवार, 30 सितंबर, 2024 को सुबह 11:00 बजे कंपनी के पंजीकृत कार्यालय में एजीएम आयोजित नोटिस में निर्धारित व्यवसायों को पूरा करने के लिए आयोजित की जाएगी।

वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए वार्षिक रिपोर्ट, जिसमें एजीएम की सूचना, उपस्थिति पर्ची और प्रॉक्सी फॉर्म शामिल है, उन सदस्यों को भेज दी गई है, जिनके ईमेल उनके डिपॉजिटरी प्रतिभागियों के पास रविवार, 01 सितंबर, 2024 तक पंजीकृत हैं। एजीएम की सूचना के साथ वार्षिक रिपोर्ट की भौतिक प्रति उन सदस्यों को अनुमत मोड द्वारा भेजी गई है, जिन्होंने अपना ई-मेल पता पंजीकृत नहीं किया है। एजीएम की सूचना के साथ वार्षिक रिपोर्ट का ईमेल और प्रेषण सोमवार, 02 सितंबर, 2024 को पूरा हो गया है। एजीएम आयोजित सूचना के साथ वार्षिक रिपोर्ट कंपनी की वेबसाइट www.hindaf.in मेट्रोपॉलिटन स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड की वेबसाइट और सेंट्रल डिपॉजिटरी सर्विसेज (इंडिया) लिमिटेड (सीडीएसएल) की वेबसाइट www.evotingindia.com पर उपलब्ध है।

जिन शेयरधारकों की ईमेल आईडी कंपनी/आरटीए या संबंधित डीपीएस के साथ पंजीकृत नहीं हैं, वे hindaf1980@gmail.com पर ई-मेल भेजकर अस्थायी रूप से अपनी ईमेल आईडी कंपनी के साथ पंजीकृत करवा सकते हैं और उसके बाद निर्देशित अस्थायी पंजीकरण प्रक्रिया का पालन कर सकते हैं ताकि वित्तीय वर्ष 2023-24 की वार्षिक रिपोर्ट के साथ-साथ एजीएम की सूचना प्राप्त हो सके, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ एजीएम में भाग लेने के निर्देश शामिल हैं। हालांकि, ईमेल आईडी के स्थायी पंजीकरण के लिए, सदस्यों से अनुरोध है कि वे अपने संबंधित डीपीएस से संपर्क करें और डीपीएस द्वारा बताई गई प्रक्रिया का पालन करें।

कंपनी अधिनियम, 2013 ("अधिनियम") की धारा 91 के प्रावधानों और उसके तहत तैयार लागू नियमों और सेबी (सूचीबद्धता दायित्व और प्रकटीकरण आवश्यकताएं) विनियम, 2015, ("सूचीबद्धता विनियम") के विनियम 42 के अनुसार, कंपनी के सदस्यों का रजिस्टर और शेयर हस्तांतरण बुक मंगलवार, 24 सितंबर, 2024 से बंद रहेंगी और कंपनी की 44वीं एजीएम के उद्देश्य से सोमवार, 30 सितंबर, 2024 (दोनों दिन सम्मिलित) को समाप्त होंगी।

कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 108 तथा संशोधित कंपनी (प्रबंधन एवं प्रशासन) नियम, 2014 के नियम 20 तथा लिस्टिंग विनियमों के विनियम 44 के अनुसार, सदस्यों को एजीएम के आयोजन स्थल के अलावा किसी अन्य स्थान से इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग प्रणाली ('रिमोट ई-वोटिंग') का उपयोग करके एजीएम की सूचना में निर्धारित प्रस्तावों पर अपना वोट डालने की सुविधा प्रदान की गई है, जिसे सेंट्रल डिपॉजिटरी सर्विसेज इंडिया लिमिटेड (सीडीएसएल) द्वारा प्रदान किया जाता है तथा इस तरह के मतदान के माध्यम से कारोबार का संचालन किया जा सकता है। सदस्यों के मतदान अधिकार कट-ऑफ तिथि अर्थात सोमवार, 23 सितंबर, 2024 को कंपनी की चुकता इक्विटी शेयर पूंजी में उनके द्वारा धारित इक्विटी शेयरों के अनुपात में होंगे। कोई भी व्यक्ति जो कट-ऑफ तिथि को कंपनी का सदस्य है, वह एजीएम में रिमोट ई-वोटिंग या बैलट पेपर के माध्यम से मतदान करके एजीएम की सूचना में निर्धारित सभी प्रस्तावों पर वोट डालने के लिए पात्र है।

रिमोट ई-वोटिंग की अवधि शुक्रवार, 27 सितंबर, 2024 को प्रातः 09:00 बजे से प्रारम्भ होकर रविवार, 29 सितंबर, 2023 को सायं 05:00 बजे समाप्त होगी। इस अवधि के दौरान सदस्य अपना वोट इलेक्ट्रॉनिक रूप से डाल सकेंगे। इसके पश्चात रिमोट ई-वोटिंग मॉड्यूल सीडीएसएल द्वारा निष्क्रिय कर दिया जाएगा तथा उक्त तिथि एवं समय के पश्चात रिमोट ई-वोटिंग की अनुमति नहीं दी जाएगी। एक बार सदस्य द्वारा प्रस्ताव पर वोट डाल दिए जाने के पश्चात उसे बाद में इसे बदलने अथवा पुनः वोट डालने की अनुमति नहीं होगी। मतदान की विस्तृत प्रक्रिया एजीएम नोटिस में उल्लिखित की गई है।

एजीएम में बैलेट पेपर के माध्यम से मतदान की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाएगी तथा जिन सदस्यों ने रिमोट ई-वोटिंग द्वारा अपना वोट नहीं डाला है, वे एजीएम में बैलेट पेपर के माध्यम से अपने अधिकार का प्रयोग कर सकेंगे। जिन सदस्यों ने वार्षिक आम बैठक से पहले रिमोट ई-वोटिंग द्वारा अपना वोट डाल दिया है, वे भी वार्षिक आम बैठक में भाग ले सकेंगे, लेकिन उन्हें दोबारा वोट डालने का अधिकार नहीं होगा।

कोई व्यक्ति जो एजीएम की सूचना भेजे जाने के बाद शेयर प्राप्त करता है और कंपनी का सदस्य बन जाता है तथा कट-ऑफ तिथि तक शेयर धारण करता है, वह helpdesk.evoting@cdslindia.com पर अनुरोध भेजकर लॉगिन आईडी और पासवर्ड प्राप्त कर सकता है। हालांकि, यदि वह रिमोट ई-वोटिंग के लिए सीडीएसएल के साथ पहले से ही पंजीकृत है, तो वह वोट डालने के लिए अपने मौजूदा यूजर आईडी और पासवर्ड का उपयोग कर सकता है।

निदेशक मंडल ने मेसर्स अंजू बंसल एंड एसोसिएट्स की प्रोपराइटर, प्रैक्टिस में कंपनी सचिव (कॉप संख्या 17594) सीएस अंजू बंसल को 'रिमोट ई-वोटिंग' प्रक्रिया और एजीएम में मतदान की निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से जांच करने के लिए जांचकर्ता के रूप में नियुक्त किया है। एजीएम के परिणाम अध्यक्ष या उनके द्वारा अधिकृत किसी अन्य व्यक्ति द्वारा घोषित किए जाएंगे और एजीएम के समापन से दो दिनों के भीतर जांचकर्ता की रिपोर्ट के साथ मेट्रोपॉलिटन स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड को प्रस्तुत किए जाएंगे और कंपनी की वेबसाइट www.hindaf.in पर भी पोस्ट किए जाएंगे।

ई-वोटिंग के बारे में किसी भी प्रश्न या शिकायत के मामले में, आप अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न ("एफएक्यू") और ई-वोटिंग मैनुअल देख सकते हैं जो www.evotingindia.com पर सहायता अनुभाग के अंतर्गत उपलब्ध है या 022- 23058542/43 पर संपर्क करें। ई-वोटिंग से संबंधित शिकायतों के मामले में, कृपया श्री राकेश दलवी, वरिष्ठ प्रबंधक, 25वीं मंजिल, ए विंग, मैराथन फ्यूचरएक्स, मफतलाल मिल्स कंपाउंड, एनएम जोशी मार्ग, लोअर परेल (ई), मुंबई-400013, ईमेल: helpdesk.evoting@cdslindia.com या उपरोक्त नंबर से संपर्क करें

कृते हिंदुस्तान ऑटो फाइनेंस लिमिटेड
हस्ता/-
ऋषभ अग्रवाल
(कंपनी सचिव एवं अनुपालन अधिकारी)

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 02 सितंबर, 2024

हरियाणा एनवायरमेंटल सोसाइटी ने किया पौधरोपण

कुरुक्षेत्र। हरियाणा एनवायरमेंटल सोसायटी का धर्मनगरी कुरुक्षेत्र को हरा भरा करने का अभियान निरंतर जारी है। रविवार को भी एचईएस की टीम ने कुरुक्षेत्र के रतगल गुरुद्वारा के निकट अनेकों स्थानों पर पौधारोपण किया।

THE PIONEER CLASSIFIEDS

CHANGE OF NAME

I, Khushboo Agrawal Wife of Nishant Kumar, currently residing at Flat No 1-A-111, G C Grand, Vaibhav Khand, Indirapuram, Ghaziabad-201014, U.P. that my name is wrongly written in the old passport, I hereby change my name from Khushaboo Agraval to Khushboo Agrawal.
PD(720)A

I, Vinod Sharma S/o Sh. Puran Chand Sharma, R/oRZD47A Street no. 6Raj Nagar Part2 Palam Colony, New Delhi-110077, state that both the names Vinod Kumar Sharma and Vinod Sharma are of the same person and I shall thereafter be known as Vinod Sharma for all purposes.
PD(721)A

इंडियन ओवरसीज बैंक
जीएलए इंजीनियरिंग कॉलेज - अजहाई शाखा
(पता: जीएलए इंजीनियरिंग कॉलेज - अजहाई, अजहाई खुर्द
फोन नं. और ई-मेल: iob1999@iob.in)

वित्तीय आस्तियों के प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम 2002 (सरफेसी अधिनियम) की धारा 13(2) के अंतर्गत प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 (नियम) के नियम 3(1) के साथ पठित

1. चूंकि अधोहस्ताक्षरी सरफेसी अधिनियम के तहत इंडियन ओवरसीज बैंक के प्राधिकृत अधिकारी हैं और धारा 13(12) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए नियम 3 के साथ पठित उक्त अधिनियम की धारा 13(2) के तहत डिमांड नोटिस जारी किया है, जिसमें नीचे सूचीबद्ध उधारकर्ताओं/बंधककर्ताओं/गारंटरों (जिन्हें आगे "उक्त उधारकर्ता" के रूप में संदर्भित किया गया है) से नोटिस में उल्लिखित राशि को नोटिस की प्राप्ति की तारीख से 60 दिनों के भीतर, नीचे दिए गए विवरण के अनुसार चुकाने के लिए कहा गया है।
2. उक्त नोटिस डाक अधिकारियों द्वारा बिना वितरित किए वापस कर दिए गए हैं / उधारकर्ताओं/बंधककर्ताओं/गारंटरों द्वारा विधिवत रूप से स्वीकार नहीं किए गए हैं। "इसलिए बैंक अत्यधिक सावधानी बरतते हुए मांग नोटिस का प्रकाशन कर रहा है। अतः, नीचे हस्ताक्षरकर्ता ने उक्त अधिनियम के अनुसार उक्त उधारकर्ताओं/बंधककर्ताओं/गारंटरों के अंतिम ज्ञात पतों के परिसर में इन नोटिसों को चिपकाया है। उक्त नोटिस की प्रतियां नीचे हस्ताक्षरकर्ता के पास उपलब्ध है और उक्त उधारकर्ताओं/बंधककर्ताओं/गारंटरों यदि चाहें तो किसी भी कार्य दिवस पर सामान्य कार्यालय समय के दौरान नीचे हस्ताक्षरकर्ता से उक्त प्रतियां प्राप्त कर सकते हैं।
3. उपर्युक्त पृष्ठभूमि के विरुद्ध, एक बार फिर उक्त उधारकर्ताओं/बंधककर्ताओं/गारंटरों को इस नोटिस के प्रकाशन की तिथि से 60 दिनों के भीतर इंडियन ओवरसीज बैंक को ऋण और अन्य दस्तावेजों के तहत नीचे दी गई/देय राशि का भुगतान करने के लिए नोटिस दिया जाता है। ऋण की उचित चुकौती के लिए सुरक्षा के रूप में, संबंधित पक्षों द्वारा निम्नलिखित परिसंपत्तियों को इंडियन ओवरसीज बैंक के पास नीचे दिए अनुसार गिरवी रखा गया है।

क्र. सं.	उधारकर्ताओं/बंधककर्ताओं/गारंटरों का नाम एवं पता	कुल बकाया दिनांक 06.05.2024 तक (रु. में)	सुरक्षित आस्तियों का विवरण	मांग सूचना की तिथि
1.	1. चिराग अग्रवाल पता: न्यू आदर्श नगर, गुरुकुल रोड, वृन्दावन बांगर, मथुरा - 281121 2. सुरेश चंद अग्रवाल, पता: आदर्श कॉलोनी गली नं. 2, पुलिस क्वार्टर के पीछे, वृंदावन, मथुरा-281121 3. नीरजा अग्रवाल, पता: मकान नं. 325 रामेश्वर धाम राधानिवास वृन्दावन मथुरा 281121	रु. 22,75,038.78	प्लॉट नं. 17, मौजा वृंदावन बांगर, मोहल्ला राधा निवास, वृंदावन के अंतर्गत, तहसील और जिला मथुरा, क्षेत्रफल 153.43 वर्ग मीटर चौहद्दी: पूरब में - कठिया बाबा पश्चिम में - कठिया बाबा दक्षिण में - रोड 15 फीट चौड़ी और प्लॉट नं. 16ए और 18	15.05.2024

*उपरोक्त तिथि से भुगतान की तिथि तक अनुबंधित दरों/शेषों पर अतिरिक्त ब्याज के साथ देय होगा।
4. यदि उक्त उधारकर्ता/बंधककर्ता/गारंटर उपर्युक्त अनुसार इंडियन ओवरसीज बैंक को भुगतान करने में विफल रहते हैं, तो इंडियन ओवरसीज बैंक उपरोक्त सुरक्षित परिसंपत्तियों के विरुद्ध सरफेसी अधिनियम और नियमों की धारा 13(4) के अंतर्गत पूरी तरह से उक्त उधारकर्ता/बंधककर्ता/गारंटर के जोखिम, लागत और परिणामों पर कार्यवाही करेगा।
5. इसके अलावा, उधारकर्ता/बंधककर्ता/गारंटर का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (8) के प्रावधानों की ओर आकर्षित किया जाता है, जो सुरक्षित परिसंपत्तियों को छुड़ाने के लिए उनके पास उपलब्ध समय के संबंध में है।
6. उक्त उधारकर्ता/बंधककर्ता/गारंटर को सरफेसी अधिनियम के तहत सुरक्षित परिसंपत्तियों को स्थानांतरित करने से प्रतिबंधित किया गया है, चाहे वह बिक्री, पट्टे या अन्यथा भारतीय ओवरसीज बैंक की पूर्व लिखित सहमति के बिना हो।
कोई भी व्यक्ति जो अधिनियम या नियमों के प्रावधानों का उल्लंघन करता है या उल्लंघन के लिए उकसाता है, वह अधिनियम की धारा 29 के तहत दिए गए कारावास और/या जुर्माने के लिए उत्तरदायी होगा।

दिनांक: 31.08.2024
स्थान: मथुरा
हस्ता/- प्राधिकृत अधिकारी,
इंडियन ओवरसीज बैंक

भारत की आर्थिक प्रगति

प्रधानमंत्री का जोर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जोर देकर कहा है कि पिछले दशक में भारत की 90 प्रतिशत आर्थिक प्रगति दुनिया की औसत 35 प्रतिशत से बहुत अधिक है। आर्थिक प्रगति के मामले में भारत एक सितारे की तरह चमक रहा है जो वैश्विक चुनौतियों से निपटने में उसकी शक्ति का प्रतीक है। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने एक बयान में इसी बात पर जोर दिया। उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था की शानदार प्रगति को रेखांकित करते हुए कहा कि जहां पिछले दशक में विश्व अर्थव्यवस्था में 35 प्रतिशत विस्तार हुआ, वहीं भारत की अर्थव्यवस्था में 90 प्रतिशत वृद्धि हुई। इस साहसी दावे से न केवल भारत की आर्थिक दृढ़ता और तेज विकास परिलक्षित होता है, बल्कि इससे भारतीय प्रगति के आयामों के गहन मूल्यांकन और यह देखने का अवसर भी मिलता है कि भविष्य के लिए इसका क्या अर्थ होगा। प्रधानमंत्री मोदी का दावा भारत के तेज आर्थिक बदलाव का एक कालखंड प्रदर्शित करता है जिसमें प्रमुख सुधारों, विदेशी निवेश में वृद्धि तथा बढ़ते मध्य वर्ग को स्थान मिला है। भारत ने पिछले दशक में महत्वपूर्ण ढांचागत सुधारों पर अमल किया है जिनमें वस्तु एवं सेवाकर-जीएसटी, 'इन्साल्वेंसी एंड बैंकरप्टसी कोड'-आईबीसी तथा अनेक डिजिटल वित्तीय समावेशन पहलें शामिल हैं। इन सुधारों ने बिजनेस प्रक्रियाओं को सहज बनाया है, टैक्स वसूली में सुधार किया है तथा भारत में 'बिजनेस सुगमता सूचकांक' को आगे बढ़ाया है जिससे अर्थव्यवस्था निवेशकों के लिए और आकर्षक हो गई है। भारत की युवा और बढ़ती जनसंख्या इस आर्थिक विस्तार में महत्वपूर्ण संचालक शक्ति है। इस 'जनसंख्या लाभांश' ने घरेलू मांग तथा आर्थिक वृद्धि को बढ़ाया है।

भारत में 'डिजिटल क्रांति' ने विभिन्न क्षेत्रों को बदल दिया है जिनमें वित्त, खुदरा व्यापार व सेवायें शामिल हैं। डिजिटल भुगतान, ई-कामर्स तथा 'फिनटेक' की वृद्धि ने नए आर्थिक अवसर प्रदान किए है तथा औपचारिक अर्थव्यवस्था की प्रगति हुई है। इसके उलट इसी कालखंड में विश्व अर्थव्यवस्था की 35 प्रतिशत वृद्धि की ज्यादा धीमी गति विभिन्न चुनौतियों के कारण थी जिसमें भू-राजनीतिक तनाव, व्यापार युद्ध व वैश्विक महामारी का प्रभाव शामिल हैं। भारत की प्रगति तथा वैश्विक औसत में भिन्नता देश की तुलनात्मक दृढ़ता तथा उभरती आर्थिक महाशक्ति की क्षमता प्रकट करती है। लेकिन यह उल्लेख महत्वपूर्ण है कि वैश्विक आर्थिक प्रगति असमान रही है। जहां विकसित अर्थव्यवस्थाओं की वृद्धि दर धीमी रही, वहीं भारत समेत उभरते बाजारों ने विस्तार में सर्वाधिक योगदान दिया। लेकिन इन सकारात्मक वृद्धि आंकड़ों के बावजूद भारत को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जो इसके भावी आर्थिक रास्ते को प्रभावित कर सकती हैं। उच्च बेरोजगारी दर, आय असमानता तथा कृषि क्षेत्र में जारी संघर्ष महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। इसके साथ ही बढ़ते संरक्षणवाद तथा भू-राजनीतिक अस्थिरता के कारण वैश्विक आर्थिक परिवेश निरंतर अनिश्चित होता जा रहा है जिससे टिकाऊ वृद्धि के लिए खतरा पैदा होता है। ऐसे में भारत सरकार को लगातार सुधार जारी रखने के साथ ही ढांचागत चुनौतियों को भी संबांधित करना चाहिए। समावेशी वृद्धि, रोजगार सृजन को बढ़ावा तथा ढांचागत संरचना एवं शिक्षा में निवेश सुनिश्चित करना दीर्घकालीन आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। पिछले दशक में भारत की शानदार प्रगति से यह संकेत मिलता है कि उसका भविष्य उज्जवल है। लेकिन भविष्य के इस रास्ते में कुछ बाधायें भी बनी हुई हैं जिनका समय रहते समाधान होना चाहिए।

संसदीय गरिमा में गिरावट

लोकसभा की वर्तमान बहसों में तथ्यात्मक भयानक गलतियों के साथ ही भ्रामक आरोप शामिल हैं। ऐसे में अच्छी तरह तैयारी करने वाले ज्ञानवान प्रतिनिधियों की जरूरत रेखांकित होती है।

कुमार चेलप्पन
(लेखक, द पायनियर के विशेष संवाददाता हैं)

लोकसभा की वर्तमान बहसों में तथ्यात्मक भयानक गलतियों के साथ ही भ्रामक आरोप शामिल हैं। ऐसे में अच्छी तरह तैयारी करने वाले ज्ञानवान प्रतिनिधियों की जरूरत रेखांकित होती है। कहावत है कि 'संसद लोकतंत्र का मंदिर है', लेकिन अब यह मजाक बन गई है। हालांकि, दुनिया भर में यह कहावत उन स्थानों में भी प्रचलित है जहां लोकतंत्र का नामोनिशान नहीं रह गया है। भारत में कम्युनिस्ट, द्रविणवादी व यहां तक कि माओवादी भी अपने राष्ट्रवादी विचारों के बावजूद इसका प्रयोग करते हैं। भारत की लोकसभा में हाल में होने वाली बहसें अनेक प्रकार से चिन्ता का विषय बन गई हैं। इ दृष्टिकोण से विदेश में संसदीय बहसों की परंपरा को देखा जा सकता है। निसंदेह ब्रिटेन में दो बार प्रधानमंत्री रह चुके बेंजामिन डिज़राइली व विलियम ग्लैडस्टोन इस शब्दावली का प्रयोग करते रहे। 12 वर्ष तक प्रधानमंत्री रहे इन विद्वानों को राजनीतिक विज्ञान के छात्र कभी भूल नहीं सकते हैं।

डिज़राइली 1868 में प्रधानमंत्री रहे तथा 1874-1880 तक वे विपक्ष के नेता रहे। ग्लैडस्टोन उनके समकालीन थे और दोनों के संबंध बड़े विरोधाभासी थे। हालांकि, उनके बीच शाब्दिक बहसें कभी-कभी संसदीय गरिमा के सभी स्तर पार कर जाती थीं, पर उनके नेतृत्व वाली कंजरवेटिव व लेबर पार्टियों ने कभी किसी विषय पर विचार-विमर्श में अपने शब्दों की सीमा नहीं तोड़ी। बताया जाता है कि डिज़राइली ने संसद में एक बार कहा था, 'यदि ग्लैडस्टोन टेम्स नदी में गिर जाएं तो यह एक दुर्भाग्य होगा। लेकिन यदि कोई उनको बाहर निकाल ले तो मेरे विचार से यह एक विभीषिका होगी।' इसी प्रकार ब्रिटिश राजनीति के 'ग्रांड ओल्ड मैन'-जीओएम कहे जाने वाले ग्लैडस्टोन ने कहा था कि जीओएम का अर्थ 'गाड्स ओनली मिस्टेक' यानी ईश्वर द्वारा की गई एकमात्र गलती होना चाहिए।

'दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र' कहे जाने वाले भारत का अतीत बहुत गरिमापूर्ण रहा है। भारतीय संसद और उसमें होने वाले विचार-विमर्श पर गौर करते हुए श्यामा प्रसाद मुखर्जी, महावीर त्यागी व पीलू मोदी जैसे लोगों के नाम याद आते हैं। उस समय भारतीय संसद में होने वाली बहसें और चर्चा देश के संसदीय लोकतंत्र के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय हैं। उन दिनों न टेलीवीजन था और न सदन की कार्रवाई के सजीव प्रसारण की कल्पना की जा सकती थी। लेकिन अब स्थिति पूरी तरह बदल गई है। लोकसभा और राज्यसभा की कार्यवाहियों का जीवन्त प्रसारण लोकसभा टीवी-एलएसटीवी और राज्यसभा टीवी-आरएसटीवी द्वारा पूरे संसद सत्र में लगातार किया जाता है। दोनों सदनों के संयुक्त सत्र को राष्ट्रपति के अभिभाषण के बाद इस पर धन्यवाद प्रस्ताव पर होने वाली लोकसभा की बहस देख कर बहुत दु:ख होता है। इस बहस को देख कर मेरे दिमाग में यह विचार आता है कि जैसे विपक्षी दीर्घाओं में अच्छे नेताओं या अच्छे वक्ताओं का अकाल पड़ गया है। वर्तमान समय में नेहरू-गांधी परिवार के बाद कांग्रेस के एक सबसे मजबूत नेता माने जाने वाले के.सी. वेणुगोपाल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में दस साल चली सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा था कि देश भर में हुई ट्रेन दुर्घटनाओं में 2.5 लाख लोग मारे गए। हालांकि, कांग्रेस से भाजपा में आए तथा उस समय सदन की अध्यक्षता कर रहे जगदंबिका पाल ने इन तथ्यों की जांच कराने का आश्वासन दिया, पर 'केरल के चाणक्य' कहे जाने वाले के.सी. वेणुगोपाल अपनी बात पर डटे रहे और उन्होंने जोर देकर कहा कि पिछले दस साल में ट्रेन दुर्घटनाओं में 2.5 लाख लोग मारे गए। जब कांग्रेस नेता के इस आरोप पर एक वरिष्ठ रेलवे अधिकारी से पूछा गया तो उन्होंने जोरदार ठहाका लगाया। इस प्रकरण से स्पष्ट होता है कि लोकसभा में सत्ता पक्ष या विपक्ष के अनेक नेता सांसद के रूप में पूर्णत: अयोग्य हैं तथा अपनी सीटों पर बैठने लायक नहीं हैं। एक दलित संगठन वीसीके के थोल थिरूमावलन ने केन्द्र पर आरोप लगाया कि तमिलनाडु के कल्लाकुरुची में हुए शराब कांड की हालिया त्रासदी में 63 निरपराध लोगों की जान चली गई।

यदि थिरुमावलन स्वयं को आबंटित कम से कम 15 मिनट राहुल गांधी द्वारा उनको प्रस्तुत भारतीय संविधान पढ़ने में लगाते तो वे इस भयानक गलती से बच सकते थे। संविधान की सातवीं अनुसूची क अनुसार शराब के उत्पादन, वितरण एवं बिक्री का विशेषाधिकार केवल राज्य सरकारों के पास है। उम्मीद रहती है कि जब कोई सांसद संसद में महत्वपूर्ण विषय पर बोलने के लिए आएगा तो वह थोड़ा होमवर्क जरूर करेगा। यह बात खासकर सदन के दोनों सदनों के संयुक्त अधिवेशन में राष्ट्रपति द्वारा दिए अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर होने वाली बहस के बारे में खासकर लागू होती है। इस परिदृश्य में आंध्र प्रदेश के अराकू चुनाव क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाली आदिवासी नेता गुम्मा तनुजा रानी का संबोधन राहत देने वाला लगता है। उन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र में आदिवासियों के लिए शिक्षा व्यवस्था में मौजूद कमियों के बारे में अपने दिल की बातें रखीं। उन्होंने कहा कि अच्छे शिक्षकों की अनुपस्थिति के कारण आदिवासी छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिल पा रही है। भारत के पास अपने दर्जनों संचार उपग्रह हैं। यदि वह इनमें से प्रत्येक के एक या दो ट्रांसपोंडरों का प्रयोग आदिवासी शिक्षकों को शिक्षा देने के लिए करे तो देश को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने वाले अनेक शिक्षक मिल सकते हैं। तनुजा रानी जैसे सांसदों के शब्द केवल सदनों के रिकार्ड तक सीमित नहीं रहने चाहिए। विज्ञान एवं तकनीकी तथा मानव संसाधन विकास मंत्रियों को इसरो अध्यक्ष के साथ बैठक कर एक कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए ताकि आदिवासी स्कूलों में उपग्रहों के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था की जा सके। पंजाब से कांग्रेस सांसद अमरिंदर सिंह राजा वडिंग ने राज्य तथा पूरे देश में किसानों की लगातार पीड़ा की बात कही। उनका संबोधन इस बात का प्रमाण है कि हमारे कृषि मंत्रालय और कृषि मंत्री किसान समुदाय द्वारा झेली जा रही कठिनाइयों का समाधान निकालने में सफल नहीं हुए हैं। भारत में हम कहीं भी जाएं, किसान अपनी कठिनाइयां बताते मिलेंगे। उनको सिंचाई के लिए समुचित पानी नहीं मिलता है, उनको बैंकों से आसानी से कर्ज नहीं मिलता है तथा इसके साथ ही उनको कृषि उत्पादों की मार्केटिंग सुविधायें पाने में कठिनाइयों का अनुभव करना पड़ता है। किसी भी शोध छात्र को अपनी इस थीसिस के लिए पीएचडी मिल सकती है कि भारत के राजनेताओं ने कैसे किसानों को लगातार गरीबी में फंसाए रखा है और इस कारण उनको आत्महत्या जैसे अत्यन्त दु:खद कदम उठाने पड़े हैं।

विडंबना है कि देश में किसानों तथा शिक्षा क्षेत्र की ऐसी महत्वपूर्ण समस्यायें उठाने और उनके समाधान तलाशने के बजाय हमारे अनेक सांसद अपने राजनीतिक व चुनावी स्वार्थों के लिए अनेक भावनात्मक व निरर्थक मुद्दे उठा कर संसद का समय बरबाद करते हैं। उनको लगता है कि संसदीय कार्यवाही के सजीव प्रसारण के चलते ऐसी गतिविधियों से वे अपने लिए वोटबैंक तैयार करने का काम करते हैं। इसे देखते हुए 'सनातन धर्म' पर विपक्ष के नेता राहुल गांधी की महत्वहीन टिप्पणियां संसद के समय की बरबादी के सिवा और कुछ नहीं हैं। सत्तारूढ़ दल को समझना चाहिए कि राहुल गांधी स्वयं को प्रासांगिक बनाए रखने के लिए ऐसे कुछ बयान देते रहते हैं। हालांकि, उनकी यह आदत व्यापक रूप से मानवीय प्रकृति के एक आयाम को ही परिलक्षित करती लगती है। इस मानव प्रकृति को परिभाषित करते हुए प्रबंधन गुरु शिव खेड़ा कहते हैं कि दुनिया में तीन प्रकार के लोग होते हैं। कुछ लोग काम करते हैं और चीजों को बदलते हैं। दूसरे प्रकार के लोग ऐसे हैं जो चीजों को बदलते या काम होते देखते हैं। इसके साथ ही तीसरे प्रकार के लोग ऐसे होते हैं जो चीजों को बदलते या काम होते देख कर आश्चर्य प्रकट करते हैं। ऐसा लगता है कि हमारे नेता विपक्ष पहली दो श्रेणियों वाले लोगों में शामिल नहीं हैं।

आंतरिक शक्ति का संवर्धन

रवि वलूरी
(लेखक रेल विभाग से संबंधित हैं)

युगों पहले एक नौसिखिया ज़ेन छात्र ज्ञान के मंदिर में प्रशिक्षु था। अफ़सोस की बात है कि उसका दिमाग इतना मज़बूत नहीं था और वह अस्थिर रहता था; इतना कि उसका दिमाग और आत्मा मठ में सिखाई जाने वाली मात्र साँस लेने की प्रथाओं और ध्यान तकनीकों से संतुष्ट नहीं थे। ज्ञान की पंखुड़ियाँ प्रकट हुईं घमंड की स्थिति में, ज़ेन छात्र ज्ञान के एक और मंदिर में पहुँचा जहाँ उसने नाटकीय ढंग से टिप्पणी की कि, मानव मन, शाक्य मुनि बुद्ध और अन्य संवेदनशील प्राणी, वास्तव में मौजूद नहीं हैं। मठ का पुजारी चुपचाप यह विस्फोट सुन रहा था लेकिन कुछ देर तक कुछ नहीं बोला। और फिर अचानक और बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से उसने अपने बेशकीमती बांस के पाइप से शिष्य को मारा जिससे छात्र क्रोधित हो गया। ज़ेन गुरु ने दयालुतापूर्वक शिष्य से पूछा कि अगर कुछ भी मौजूद नहीं है, तो उसके क्रोध और अहंकार का दौर कहाँ से आया? शिष्य कुछ क्षण के लिए असमंजस में पड़ गया और फिर ज़ेन मास्टर के चरणों में गिरकर क्षमा मांगने लगा।

समझदार गुरु ने कुछ शर्तों के साथ उस नन्हे बच्चे को स्वीकार कर लिया। नौसिखिए को मन को खोखला और खाली रखने के मूल सिद्धांत को याद रखना चाहिए। भगवान कृष्ण की बांसुरीभगवान कृष्ण और उनकी बांसुरी के बारे में एक दिलचस्प दृष्टांत है। ऐसा माना जाता है कि वे एक बगीचे में जाते थे और सभी वनस्पतियों और जीवों से फुसफुसाते थे, मैं तुमसे प्यार करता हूँ। एक स्वर में, वनस्पतियों और जीवों ने भगवान कृष्ण के प्रति अपने शुद्ध और शुद्ध स्नेह का आदान-प्रदान किया। ऐसा हुआ कि एक दिन, एक जीवंत भगवान कृष्ण बगीचे में एक बांस के पेड़ के पास पहुंचे। भगवान ने यह भयावह समाचार सुनाया कि उन्हें बांस के पौधे का जीवन समाप्त करना होगा। खबर फैलते ही पूरा बगीचा स्तब्ध रह गया; हालाँकि कई पौधे और पेड़ मन ही मन खुश थे कि उन्हें यातना से बचा लिया गया। बांस ने कुछ देर तक खबर पर विचार किया और फिर सुस्ती से जवाब दिया, भगवान, आपके

और मेरे पास कोई विकल्प नहीं है। ब्रह्माण्ड के स्वामी की वेदी पर मैं अपना जीवन बलिदान करने को तैयार हूँ।" यह सुनकर भगवान कृष्ण मुस्कुराये। शल्य चिकित्सा की सटीकता के साथ, उन्होंने बांस के पौधे पर प्रहार किया। जल्द ही बांस भगवान कृष्ण के लिए बांसुरी में बदल गया। वनस्पति और जीव, सभी गोपियाँ और गोपिकाएँ अब बांस के प्रति लालची हो गई थीं, कि अपने नए अवतार में यह हमेशा अविभाज्य रहेगा, हमेशा भगवान कृष्ण के हाथों में रहेगा। उल्लासित बांस की बांसुरी भगवान कृष्ण की विजयी संपत्ति बन गई। तुम्हारे बारे में ऐसा क्या उल्लेखनीय था, कि तुम चुने गए? बांसुरी का सामना करने वाला एक निरंतर प्रतिध्वनि था। गुरु की इच्छा के लिए मेरी विलक्षण आत्मसमर्पण के अलावा कुछ नहीं; भगवान का एक साधन बनने के लिए तैयार, बांसुरी का प्रतिध्वनि था। शास्त्रीय महाकाव्य महाभारत में कई वीर पात्र हैं। लेकिन महारथी धनुर्धर अर्जुन प्रमुख रूप से खड़े हैं। ऐसा क्यों है?

सुदर्शन क्रिया जैसी श्वांस तकनीकें मन को खोखला और खाली बनाने में मदद करती हैं। दार्शनिक ओशो ने कहा है कि एक परिपक्व मन वह है जो परम को जानने की असंभवता को समझता है और इस समझ के साथ एक नया आयाम, अस्तित्व का आयाम होता है।

अर्जुन सखा, नर है जिसके माध्यम से नारायण ने दिव्य दिव्य गीत - भगवद गीता को प्रकट किया। यह अर्जुन की भगवान के प्रति अटूट भक्ति थी जिसने उसके चरित्र को इतना मजबूत और एरोबिक बनाया। उसने भगवान की सभी आज्ञाओं का ईमानदारी से पालन किया। केवल आंतरिक शक्ति और एक परिपक्व मन ही किसी व्यक्ति को हमारी आंतरिक ऊर्जा के स्रोत से संपर्क स्थापित करने के लिए रूपांतरित कर सकता है। यह प्रामाणिक समर्पण की प्रक्रिया के माध्यम से संभव है। सुदर्शन क्रिया जैसी श्वास तकनीकें मन को खोखला और खाली बनाने में मदद करती हैं। दार्शनिक ओशो ने कहा, एक परिपक्व मन वह है जो परम को जानने की असंभवता को समझता है, और इस समझ के साथ एक नया आयाम, अस्तित्व का आयाम होता है।

आप की बात

राष्ट्रपति की चिन्ता

राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, बस बहुत हो चुका, मैं निराश और डरी हुई हूं। देश की महामहिम राष्ट्रपति द्वारा अपनी मनोदशा को इस चिन्ताजनक ढंग से व्यक्त करना किसी भी सभ्य समाज के लिए हजार बार सोचने को मजबूर करती है कि महिलाओं के प्रति अत्याचार को कैसे रोका जाए? राष्ट्रपति ने महिलाओं के प्रति अत्याचार को विकृति के रूप में परिभाषित किया है। कोलकाता के एक मेडिकल कॉलेज में 9 अगस्त को एक ट्रेनी डॉक्टर के साथ हुई रेप और हत्या के बाद पूरे देश में आक्रोश है। यदि देश की बेटियां देश के शिक्षित व सभ्य परिवेश में भी सुरक्षित नहीं है तो सुदूर व दुर्गम क्षेत्रों के बारे में क्या कहा जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के प्रति अत्याचार और भी भयानक होते हैं क्योंकि इन क्षेत्रों तक मीडिया की ज्यादा पहुंच नहीं है। अत्याचार महिलाओं ही नहीं बच्चों पर भी लगातार हो रहे हैं। समाचारों की सुर्खियां रोज दिल दहलाने वाली होती हैं। देश की राष्ट्रपति की चिंता पर केंद्र सरकार और राज्य सरकारों को अति गंभीरता से सोचना चाहिए। निर्भया कांड के बाद संसद ने विशेष सत्र में इस स्थिति पर विचार किया था। अब यह सोचने का समय आ गया है कि पिछले लगभग दस साल में महिला सुरक्षा की क्या स्थिति है।

- **वीरेंद्र कुमार जाटव,** दिल्ली

न्यायालयों पर बोझ

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहस है कि देश के न्यायालयों पर बढ़ते मुकदमों पर त्वरित न्याय हमारे लिए एक चुनौती है। इसे दूर करने के प्रयास होने चाहिए साथ ही स्थगन संस्कृति भी बदलने की कोशिश की जानी चाहिए। सही बात है कि तारीख पर तारीख की लम्बी प्रक्रिया भी न्याय में देरी का एक प्रमुख कारण है। फास्ट ट्रैक कोर्ट तथा न्यायाधीशों एवं विधि स्टाफ बढ़ाकर भी इसे दूर किया जा सकता है। न्याय में देरी होने से फरियादी के लिए इन्साफ का महत्व ही घट जाता है। दोषी को लम्बी प्रक्रिया से सजा तक पहुँचने में बढ़ते समय का लाभ मिलता है। अगर जल्दी निर्णय हो जाए तो फरियादी को लाभ होगा, उसके समय और धन की बर्बादी घटेगी और दोषी को सजा शीघ्र मिलने से बढ़ते अपराधों में भी तेजी से कमी आ सकती है। इससे न्यायालयों पर बढ़ते मुकदमों का बोझ भी कम होगा। दुनिया की सर्वाधिक जनसंख्या 140 करोड़ वाले देश भारत में बढ़ती जनसंख्या के अनुरूप जिला न्यायपालिका के विस्तार की आवश्यकता है। यदि अपराधी को तुरन्त सजा न मिले तो इससे अनेक लोगों में अपराध करने की प्रवृत्ति भी बढ़ती है। उम्मीद करनी चाहिए कि नये कानूनों के समुचित क्रियान्वयन से भी लाभ होगा।

-**शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

हेमा कमेटी रिपोर्ट

हेमा कमेटी रिपोर्ट से मलयालम फिल्म उद्योग में महिलाओं के अकूत शोषण का पता चला है। अभिनेत्रियों व महिला कलाकारों द्वारा निर्देशकों, निर्माताओं और फिल्म फाइनेंसरों पर गंभीर यौन शोषण के आरोप लगाए जा रहे हैं। यौन उत्पीड़न मामलों के विरूद्ध आवाज उठाने से तमिल फिल्म जगत में भी उथलपुथल पैदा हो रही है। अतीत में कई महिला कलाकारों की रहस्यमय तरीके से मौत हुई। महिला कलाकारों व निर्माताओं के बीच कास्टिंग काउच जैसे मुद्दों पर मतभेद रहे हैं। हेमा समिति के खुलासे के बाद मलयालम मूवी आर्टिस्ट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष मोहनलाल से इस्तीफा तो अवश्य ले लिया गया है, किन्तु इस दिशा में सरकार की ओर से और आगे कार्रवाई की अपेक्षा है। केरल तथा तमिलनाडु सरकार को हेमा कमेटी रिपोर्ट तथा अन्य आरोपों पर स्वत: ही गोपनीय जांच शुरू कर दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करनी चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता है तो पहले से ही संकट का सामना कर रहा क्षेत्रीय या भाषाई सिनेमा उद्योग और संकट मे पड़ जाएगा। मलयालम व तमिल सिनेमा के साथ अन्य प्रदेशों के फिल्म उद्योग में न्यायोचित व्यवस्था स्थापित करने की जरूरत है ताकि महिला शोषण की आशंका समाप्त हो सके।

- **युगल शर्मा,** फरीदाबाद

पलक का प्रदर्शन

इंदौर की अंतरराष्ट्रीय गोताखोर पलक ने एक बार फिर अपनी जीत से इतिहास रच दिया है। सिंगापुर में 30 अगस्त से एक सितंबर तक आयोजित अंतरराष्ट्रीय सिंगापुर नेशनल एक्वेटिक चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए पलक ने छह इवेंट खेल में शानदार प्रदर्शन करते हुए तीन स्वर्ण पदक, एक रजत पदक और एक कांस्य पदक हासिल किया है। शाबाश पलक! इस विशिष्ट रिकॉर्ड ने पलक को सबकी पलकों पर बिठा दिया है। यह न केवल इंदौर, बल्कि पूरे भारत के लिए गर्व का विषय है कि बेटियां न सिर्फ पढ़ाई में बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में एक के बाद एक नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है। बेटियों ने सिद्ध कर दिया है कि यदि उन्हें पर्याप्त अवसर व सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाए तो वह हर उच्च शिखर को छूने में सक्षम है। पलक की उपलब्धि से देश भर की बेटियों का आत्मविश्वास नई ऊंचाइयों पर पहुंचेगा। पलक की उपलब्धि ओलंपिक व पैरालंपिक में मिली उपलब्धियों के अलावा एक और उल्लेखीय योगदान है।

- **विभूति बुपक्या,** खाचरोद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

मानव-वन्यजीव संघर्ष की घटनाओं पर हर हाल में लगाएं अंकुशः मुख्यमंत्री

● प्रभावित जिलों में वन टीम बढ़ाने लगातार कॉम्बिंग करने मॉनीटरिंग व जन जागरुकता फैलाने के दिए निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सीएम योगी ने वन मंत्री और अधिकारियों के साथ की उच्च स्तरीय बैठक

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के विभिन्न जिलों में हाल के दिनों में घटित मानव-वन्यजीव संघर्ष की घटनाओं का संज्ञान लेते हुए सोमवार को एक उच्च स्तरीय बैठक की। बैठक में उन्होंने विभागीय मंत्री और संबंधित विभाग के अधिकारियों को मानव-वन्यजीव संघर्ष की घटनाओं को रोकने, उनकी मॉनीटरिंग करने एवं घटनाओं के बढ़ने के कारणों पर मंथन करने के निर्देश दिये ताकि इन पर अंकुश लगाया जा सके। सीएम योगी के निर्देश के बाद मानव-वन्यजीव संघर्ष की घटनाओं को लेकर कई जिलाधिकारी सक्रिय हो गये और आनन-फानन में टीम बनाकर कॉम्बिंग एवं गांव-गांव में जाकर जन जागरुकता फैलाने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बैठक में कहा कि पिछले कुछ दिनों से प्रदेश के विभिन्न जिलों से आदमखोर भेड़िये या तेंदुए द्वारा हमले की सूचना आ रही है। उन्होंने इन घटनाओं को नियंत्रित करने, वन्यजीव को पकड़ने एवं आवश्यकतानुसार आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिये। उन्होंने प्रभावित जिलों में प्रशासन, पुलिस, वन विभाग, स्थानीय पंचायत, राजस्व विभाग द्वारा व्यापक जन जागरूकता पैदा करने एवं लोगों को सुरक्षा के उपायों के बारे में भी बताने के आदेश दिये। बैठक के बाद वन मंत्री और संबंधित अधिकारी हरकत में आ गए। वन मंत्री ने बहराइच, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, पीलीभीत, बिजनौर सहित अन्य जिलों में तत्काल वन विभाग के अतिरिक्त कर्मचारियों की तैनाती के निर्देश दिये। साथ ही ज्वाइंट पेट्रोलिंग बढ़ाने का आदेश दिया। इसके अलावा वरिष्ठ अधिकारियों को जिलों में कैंप करने, जनप्रतिनिधियों से सहयोग लेने एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जहां लाइट की समस्या हो, वहां पेट्रोमैक्स की व्यवस्था करने का आदेश दिया। बता दें कि उत्तर प्रदेश पहला राज्य है, जिसने मानव-वन्यजीव संघर्ष को आपदा घोषित किया है। इसके जरिये वन्य जीवों के हमले में घायल लोगों अथवा असमय काल-कवलित हुए लोगों के परिवारीजनों को हर सम्भव सहायता उपलब्ध कराई जा रही है।

मानव-वन्यजीव संघर्ष से प्रभावित बहराइच जिलाधिकारी मोनिका रानी, सीतापुर जिलाधिकारी अभिषेक आनंद और लखीमपुर खीरी जिलाधिकारी दुर्गा शक्ति नागपाल ने अपने-अपने जिले में पुलिस, वन विभाग, स्थानीय पंचायत और राजस्व विभाग को आवश्यक दिशा निर्देश जारी किये। इसमें रेंज स्तर पर वन क्षेत्रों में गश्त के साथ जंगल से सटे ग्रामीण क्षेत्रों में गश्त के लिए कार्य योजना के अनुसार वन कर्मियों की टीम रोजाना गश्त करें, इसकी सूचना रजिस्टर पर अंकित करें। आरक्षित वन क्षेत्रों से लगे ग्रामों में मानव वन्य जीव संघर्ष को रोकने के लिए बैठकों का आयोजन किया जाए एवं वन्य जीवों से सावधानी बरतने के लिए ग्रामीणों को सजग किया जाए।

कम्प्रेस्ड बायोगैस उत्पादन में यूपी देश में नंबर वन

● नितिन गडकरी ने की योगी सरकार के प्रयासों की तारीफ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/नई दिल्ली

कम्प्रेस्ड बायोगैस (सीबीजी) उत्पादन के क्षेत्र में देश में पहले स्थान पर कायम उत्तर प्रदेश की इस उपलब्धि पर केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने सोमवार को योगी सरकार की खुले मन से प्रशंसा की। उन्होंने भरोसा जताया की मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सीबीजी के साथ ही अतिरिक्त ऊर्जा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करेगा। केन्द्रीय सड़क, परिवहन एवं राज्य मार्ग मंत्री नितिन गडकरी सोमवार को राजधानी दिल्ली के द्वारका में यशोभूमि कन्वेन्शन सेन्टर में आयोजित इन्डिया बायो एनर्जी एवं टेक एक्पो-2024 का शुभारंभ करने पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने उत्तर प्रदेश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण (यूपिनेडा) के स्टाल का भी अवलोकन किया।

सीएनजी आधारित ट्रेक्टर के लिए दिया सुझाव

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी कार्यक्रम का उद्घाटन करने के बाद यूपीनेडा के स्टाल पर भी पहुंचे। यहां पर प्रमुख सचिव, ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा नरेन्द्र भूषण ने उनका स्वागत किया। नितिन गडकरी को जब बताया गया कि कम्प्रेस्ड बायोगैस उत्पादन के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश पूरे भारत वर्ष में सर्वप्रथम है, तो वह बहुत प्रभावित नजर आए और उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और यूपीनेडा के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने यूपीनेडा के स्टाल एवं प्रर्दशित कम्प्रेस्ड बायोगैस उत्पादन तथा बायो ऊर्जा के क्षेत्र में किए गए कार्यों की भी सराहना की। इस दौरान नितिन गडकरी द्वारा महेन्द्रा मोटर्स से संपर्क कर सीएनजी आधारित ट्रेक्टर हेतु नीति निर्धारण के लिए सुझाव भी दिया। प्रमुख सचिव, ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा नरेन्द्र भूषण द्वारा भारत एवं विश्व में बायो ऊर्जा के क्षेत्र में कार्य कर रहे विकासकर्ताओं के समक्ष उत्तर प्रदेश जैव ऊर्जा नीति-2022 की विशेषताओं एवं दिए जाने वाले प्रोत्साहन के साथ-साथ बायो ऊर्जा के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश की उपलब्धियों से अवगत कराया गया तथा उद्यमियों को उत्तर प्रदेश में इस क्षेत्र में अधिकाधिक निवेश किए जाने हेतु आमंत्रित किया गया।

कन्नौज बलात्कार मामला

आरोपी पूर्व ब्लॉक प्रमुख के डीएनए नमूने का मौके से एकत्र डीएनए नमूने से मिलान

कन्नौज (भाषा)। उत्तर प्रदेश के कन्नौज जिले में 15 वर्षीय लड़की से बलात्कार के आरोप में गिरफ्तार पूर्व ब्लॉक प्रमुख नवाब सिंह यादव के डीएनए नमूने का मिलान घटनास्थल से एकत्र किए गए नमूने से हो गया है। यह जानकारी एक अधिकारी ने सोमवार को एक रिपोर्ट के हवाले से दी। समाजवादी पार्टी (सपा) का पूर्व ब्लॉक प्रमुख नवाब सिंह यादव एक निजी शिक्षण संस्थान का प्रबंधन करता था और उस पर नौकरी दिलाने के बहाने नाबालिग लड़की के साथ बलात्कार करने का आरोप है। पुलिस क्षेत्राधिकारी (कन्नौज सदर) कमलेश कुमार ने सोमवार को बताया कि यादव के डीएनए नमूने का मिलान मामले में एकत्र किए गए डीएनए नमूने से हो गया है। यादव से एकत्र नमूना 17 अगस्त को आगरा स्थित फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला (एफएसएल) भेजा गया था। पुलिस अधीक्षक (कन्नौज) अमित कुमार आनंद ने कहा, मौके से एकत्र किए गए फोरेंसिक साक्ष्य को एफएसएल को भेजा गया था। एफएसएल की रिपोर्ट आ गई है और बलात्कार की पुष्टि हुई है। उन्होंने कहा कि आगे की कार्वाई की जा रही है। सोलह अगस्त को चिकित्सकों के एक दल ने अदालत के आदेश के बाद यादव से डीएनए नमूना एकत्र किया था। नमूना जिला जेल में एकत्र किया गया था। कुमार ने पहले कहा था कि अदालत की सुनवाई के दौरान, यादव ने अपना डीएनए नमूना देने पर सहमति व्यक्त की।

भेड़ियों ने फिर किए हमले, ढाई साल की बच्ची की मौत

भाषा। बहराइच, सीतापुर

उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले की महसी तहसील में आतंक का पर्याय बने भेड़ियों के हमले जारी हैं। रविवार रात संदिग्ध रूप से इन भेड़ियों के अलग-अलग हमलों में ढाई साल की एक बच्ची की मौत हो गई जबकि एक बुजुर्ग महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। इसके अलावा पड़ोसी सीतापुर जिले में भी भेड़ियों के हमले की आशंका है। खास बात यह है कि भेड़िए अब नए इलाकों में हमले कर रहे हैं। बहराइच की जिलाधिकारी मोनिका रानी ने सोमवार को मौके पर पहुंचकर संवाददाताओं को बताया कि भेड़िए के हमले में ढाई वर्षीय अंजलि की मौत हो गई तथा एक महिला घायल हो गई। जुलाई से अब तक इस हिंसक वन्य जीव के हमलों के कारण अब तक आठ लोगों की मौत हो चुकी है। ग्रामीणों ने बताया कि महसी तहसील क्षेत्र के हरदी थाना इलाके में गरेठी गुरुदत्त सिंह के नव्वन गरेठी मजरे में एक-दो सितंबर की रात घर में मां के साथ सो रही ढाई साल की बच्ची अंजलि को भेड़िया उठा ले गया। चीख सुनने पर परिजन उसके पीछे भागे, लेकिन कोई पता नहीं चल सका। तलाश करने पर गांव से एक किलोमीटर की दूरी पर अंजलि का क्षत-विक्षत शव पाया गया। भेड़िया बच्ची के दोनों हाथ खा गया।

दूसरी घटना हरदी थाना क्षेत्र के बाराबिगहा के मौजा कोटिया में हुई। यहां कमला देवी (70) सोमवार सुबह घर में लेटी थी, तभी दरवाजे की रस्सी तोड़कर भेड़िया भीतर घुसा और हमला कर उन्हें घायल कर दिया। परिजनों के शोर मचाने पर भेड़िया कमला देवी को छोड़कर भाग गया। गंभीर रूप से घायल कमला देवी को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। महिला की गर्दन, मुंह और कान पर चोटें आई हैं। उसकी हालत स्थिर बताई जा रही है। पुलिस अधीक्षक वृंदा शुक्ल ने अस्पताल पहुंच कर घायल महिला के इलाज का जायजा लिया है। जिलाधिकारी मोनिका रानी ने बताया कि महसी तहसील के गरेठी गांव में भेड़िए के हमले की यह पहली घटना है। उन्होंने बताया कि हमलावर भेड़िए अब नए गांवों में हमले कर रहे हैं। चार पांच दिन के अंतराल पर यह घटनाएं हो रही हैं। मोनिका रानी के अनुसार जिन गांवों में पहले घटना हुई है वहां और आसपास के गांवों में बड़ी संख्या में पुलिस, प्रशासन, पीएसी, वन विभाग के कर्मियों को तैनात किया गया है। चार भेड़िए पकड़े भी गए हैं। जिलाधिकारी ने कहा कि इस संबंध में लोगों को लगातार जागरुक किया जा रहा है कि वह दरवाजे बंद करके या घरों की छतों पर सोएं, खुले में ना सोएं तथा विशेष रूप से सचेत रहें। मोनिका रानी ने कहा,अभी तक दो भेड़ियों के हमलावर होने की बात सामने आ रही है। लेकिन संख्या को लेकर भी वन विभाग विशेष रूप से अपनी जानकारी एकत्र कर रहा है। जांच पूरी होने पर सही संख्या बताई जा सकती है। गौरतलब है कि बहराइच के महसी तहसील क्षेत्र में मार्च से ही इंसानों पर भेड़ियों के हमले हो रहे हैं। बरसात के मौसम में 17 जुलाई से हमले बढ़े हैं और हमलों में सात बच्चों सहित आठ लोगों की मौत हो चुकी है तथा 30 से अधिक लोग हमलों में घायल हुए हैं। इस क्षेत्र में विभिन्न विभागों, गैर-सरकारी संगठनों और ग्रामीणों की 100 के करीब टोलियां रात भर जागकर गश्त करती हैं। पीएसी के 200 जवान, पुलिस व वन विभाग के कई जवान भेड़िए पकड़ने व ग्रामीणों की सुरक्षा में जुटे हैं। सीतापुर के हरगांव थाना क्षेत्र के परसेहरा शरीकपुर गांव में कथित भेड़िए के हमले से दहशत फैल गई। एक सितंबर की देर रात हुए कथित हमले में महिला और तीन अन्य लोग घायल हो गए। सोमवार को वन विभाग की टीम ने हमला करने वाले जानवर के नमूने और पैरों के निशान एकत्र किए।

आदमखोर भेड़ियों को पकड़ने के लिए रंग-बिरंगी गुड़ियों का भी इस्तेमाल

भाषा। बहराइच। उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में पिछले कुछ महीनों से ग्रामीणों पर हमला कर रहे आदमखोर भेड़ियों को पकड़ने के लिए वन विभाग बच्चों की पेशाब में भिगोई गई रंग-बिरंगी गुड़ियों का इस्तेमाल कर रहा है। इन टेडी डॉल को दिखावटी चारे के रूप में नदी के किनारे भेड़ियों के आराम स्थल और मांद के पास लगाया गया है। टेडी डॉल को बच्चों की पेशाब से भिगोया गया है, ताकि इनसे बच्चों जैसी गंध आए और भेड़िए इनकी तरह खींचे चले आएं। प्रभागीय वनाधिकारी अजीत प्रताप सिंह ने सोमवार को पीटीआई-भाषा को बताया, हमलावर भेड़िए लगातार अपनी जगह बदल रहे हैं। अमूमन ए रात में शिकार करते हैं और सुबह होते-होते अपनी मांद में लौट जाते हैं। ऐसे में ग्रामीणों और बच्चों को बचाने के लिए हमारी रणनीति है कि इन्हें भ्रमित कर रिहायशी इलाकों से दूर किसी तरह इनकी मांद के पास लगाए गए जाल या पिंजरे में फंसने के लिए आकर्षित किया जाए।

भाजपा सांसद कंगना रनौत के खिलाफ आम आदमी पार्टी कार्यकर्ताओं ने किया प्रदर्शन

● किसानों को बलात्कारी और हत्यारा कहने का किया जोरदार विरोध

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भाजपा सांसद कंगना रनौत द्वारा किसानों पर की गई अमर्यादित टिप्पणी के विरोध में आम आदमी पार्टी किसान प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष अशोक कमांडो के नेतृत्व में बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं ने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। प्रदेश कार्यालय पर सुबह से ही कार्यकर्ता इकठ्ठे होने लगे। कार्यकर्ताअ पैदल मार्च के लिए पार्टी कार्यालय से निकले तभी कुछ दूरी पर भारी संख्या में तैनात पुलिस बल ने सभी को बैरिकेटिंग लगाकर रोक लिया। कार्यकर्ताओं ने भाजपा और कंगना के खिलाफ नारेबाजी की इस दौरान कार्यकर्ताओं और पुलिस में धक्का मुक्की और झड़प हुई। बाद में पुलिस ने सभी को गिरफ्तार कर इको गार्डन पार्क ले गई.

किसान प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष अशोक कमांडो ने कहा कि कंगना रनौत बददिमाग़ है, भाजपा को उसे संसद में नहीं पहुंचाना चाहिए था कंगना किसानों को बलात्कारी और हत्यारा कह रही है, भाजपा को कंगना पर एक्शन लेना चाहिए। कंगना रनौत का बयान निंदनीय और अमर्यादित है। प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा अपने ऐसे बद्दिमाग नेताओं सांसदों का बचाव कर रही है। उन्होंने कहा किसान आंदोलन में साढ़े सात सौ किसानों की मौत हो गई। भाजपा किसानों को कभी खालिस्तानी, कभी पाकिस्तानी, कभी आतंकवादी और अब हत्यारा और बलात्कारी बता रही है, भाजपा किसान विरोधी है। जिला अध्यक्ष इरम रिजवी ने कहा कि कंगना रनौत जैसी महिला को संसद में नहीं पहुंचना चाहिए जिसे देश के बारे में कुछ पता ही नहीं है। अपने आकाओं को खुश करने के लिए देश के अन्नदाताओं की बड़ी आबादी पर अमर्यादित बयानबाजी कर रही है इससे पहले भाजपा नेत्री प्रज्ञा साध्वी भी अमर्यादित बयानबाजी कर चुकी है, भाजपा शीर्ष नेतृत्व अपने ऐसे नेताओं के खिलाफ कार्यवाही न कर उनके बयानों को मौन स्वीकृत देता रहता है जो देश समाज के लिए अच्छा नहीं है। प्रदेश प्रवक्ता संजीव निगम ने कहा कि कंगना रनौत के बयान से देश का किसान आक्रोशित है। इसलिए कंगना रनौत को लोकसभा की सदस्यता से बर्खास्त किया जाना चाहिए। विरोध प्रदर्शन में प्रमुख रूप से प्रदेश प्रवक्ता एवम अयोध्या प्रभारी संजीव निगम, किसान प्रकोष्ठ से प्रदेश महासचिव नीरज छोकर, प्रदेश संगठन मंत्री राम गुप्ता , ईरम रिजवी जिला अध्यक्ष लखनऊ, अरविंद उपाध्याय पूर्वांचल प्रभारी,रंजना तिवारी, इस्मा जहीर पश्चिमी प्रांत प्रभारी, परवेज चौधरी बुंदेलखंड प्रभारी लखनऊ जिलाधक्ष गोविंद कुमार, अर्चना गौतम, राम उजागिर, कौशल शर्मा, नितिन शर्मा कैप्टन विजेंद्र चौधरी कल्याण सिंह फौजी सत्येंद्र कुमार सर्वेंद्र फौजी हरपाल सिंह संजीव बालियान जसवीर मलिक हुकम सिंह प्रधान जिला अध्यक्ष बुलंदशहर मौजूद रहे।

पिछड़ों व दलितों के साथ लूट कर रही है भाजपाः अखिलेश

● सपा मुखिया ने कहा, हाईकोर्ट के फैसले बाद भी 69000 शिक्षक भर्ती के पीडीए अभ्यर्थियों को उनका अधिकार नहीं दे रही सरकार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार की भेदभावपूर्ण और गलत नीतियों से हर वर्ग आक्रोशित है। भाजपा पिछड़ों, दलितों के आरक्षण के साथ लूट कर रही है। भाजपा की नीति पीडीए विरोधी है। सरकार नौजवानों, किसानों, कर्मचारियों का शोषण कर रही है।

अखिलेश यादव ने कहा कि हाईकोर्ट के फैसले के बाद भाजपा 69000 शिक्षक भर्ती के पीडीए अभ्यर्थियों को उनका हक और अधिकार नहीं दे रही है। शिक्षक भर्ती अभ्यर्थियों को लेकर भाजपा की नीयत साफ नहीं है। अपने हक और आरक्षण को बचाने के लिए शिक्षक अभ्यर्थी लम्बे समय से लगातार संघर्ष कर रहे है। यादव ने कहा कि कई वर्षों की लम्बी लड़ाई के बाद शिक्षक अभ्यर्थियों को हाईकोर्ट से न्याय मिला लेकिन सरकार उनका हक नहीं देना चाहती है। भाजपा सरकार मामले को उलझाये रखना चाहती है। मुख्यमंत्री और सरकार के अन्य लोग शिक्षक अभ्यर्थियों की झूठी दिलासा दे रहे हैं। हाईकोर्ट के निर्णय पर अभ्यर्थियों के पक्ष में फैसला लेने के बजाय वे उसे लटकाये रखना चाहते है। अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार लगातार असंवैधानिक कार्य कर रही है। भाजपा सरकार संवैधानिक संस्थाओं को कमजोर कर रही है। इसका रवैया तानाशाही पूर्ण है। यह सरकार नौजवानों को अपमानित कर रही है। मामला 69000 शिक्षक अभ्यर्थियों का हो, शिक्षामित्रों या अन्य कर्मचारी व नौजवानों का हो, भाजपा सरकार ने सभी के साथ अन्याय किया है। अपने हक के लिए लोकतांत्रिक ढंग से मांग करने वालों पर सरकार पुलिस से लाठियां बरसाती है। 69 हजार पदों पर आरक्षण की मांग कर रहे अभ्यर्थियों और शिक्षामित्रों को न जाने कितनी बार लाठियों से पीटा गया है। हिरासत में लिया गया और अपमानित किया गया, लेकिन उनकी मांगे नहीं मानी गयी। यादव ने कहा कि सरकार के खिलाफ जनता का आक्रोश बढ़ता जा रहा है। आने वाले विधानसभा उपचुनाव और 2027 के आम विधानसभा चुनाव में जनता भाजपा को सत्ता से हटाकर उसके अहंकार को तोड़ देगी।

मुख्यमंत्री आवास योजना

बसोड़ व धरकार जातियों को भी किया गया सम्मिलित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने बताया कि उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत बांसफोर, बसोड़ एवं धरकार जातियों (अनुसूचित जाति) को भी उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के अत्यंत पिछड़ी होने के दृष्टिगत मुख्यमंत्री आवास योजना-ग्रामीण की पात्रता की प्राथमिकता श्रेणी मे सम्मिलित किया गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार इन अनुसूचित जाति के उत्तर प्रदेश में पात्र परिवारों की संख्या 10423 बतायी गयी है, जो प्रदेश के 27 जनपदों में हैं, जिनमें बांसफोर की संख्या 413, बसोड़ की संख्या 5029 व धरकार की संख्या 4981 है। उप मुख्यमंत्री ने बताया कि सड़कों के किनारे बांस का कार्य करके जीवन यापन करने वाली बांसफोर जाति तथा इसी कार्य से जुड़ी धरकार व बसोड़ जातियों को उनकी निर्धनता के दृष्टिगत मुख्यमंत्री आवास योजना -ग्रामीण की पात्रता की प्राथमिकता श्रेणी में सम्मिलित किया गया है।

ड्यूटी में लापरवाही बरतने के आरोप में 26 चिकित्सकों की बर्खास्तगी के निर्देश

● उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने प्रमुख सचिव को दिए निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

ड्यूटी से लगातार अनुपस्थित रहने और कर्तव्यों के प्रति लापरवाही बरतने के आरोप में स्वास्थ्य विभाग ने सोमवार को बड़ी कार्रवाई की है। उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने प्रमुख सचिव को निर्देश जारी कर 26 चिकित्सकों को एक माह का नोटिस जारी करते हुए शासकीय सेवा से तत्काल बर्खास्त करने को कहा है। डिप्टी सीएम का कहना है कि चिकित्सीय कार्य में लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी। उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक का कहना है कि प्रदेश की जनता को उच्च कोटि की स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। इनमें किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जिन चिकित्सकों को बर्खास्त करने के निर्देश जारी किए गए हैं, उनमें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, कोंच, जालौन के चिकित्साधिकारी डॉ. प्रशांत पाठक, मुख्य चिकित्साधिकारी, बरेली के अधीन चिकित्साधिकारीगण डॉ. इमरान खान एवं डॉ. सुरभि गुप्ता, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, चिल्लौन्सा, मैनपुरी के चिकित्साधिकारी डॉ. अनुज कुमार, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, ,समान किशनी, मैनपुरी के चिकित्साधिकारी डॉ. राजकुमार, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, कालपी, जालौन के चिकित्साधिकारी डॉ. यासमून अख्तर सिद्दिकी, मुख्य चिकित्साधिकारी, सिद्धार्थनगर के अधीन चिकित्साधिकारीगण डॉ. प्रवीन आनंद, डॉ. नेहा सिन्हा, डॉ. ज्योत्सा ओझा, मुख्य चिकित्साधिकारी, ललितपुर के अधीन चिकित्साधिकारीगण डॉ. शुभांशु शिवहरे, डॉ. विवेक कुमार गौतम, डॉ. मोहम्मद हासिम, मुख्य चिकित्साधिकारी, बलिया के अधीन चिकित्साधिकारीगण डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. पूजा सिंह, मुख्य चिकित्साधिकारी, बस्ती के अधीन चिकित्साधिकारी डॉ. आमोद कुमार सरोज, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, कुसमुरा, मैनपुरी के चिकित्साधिकारी डॉ. मोहम्मद सलीम, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, जगतपुर, रायबरेली के चिकित्साधिकारी डॉ. धीरेंद्र कुमार, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, मटका, रायबरेली के चिकित्साधिकारी डॉ. प्रियंका सोनी, मुख्य चिकित्साधिकारी, रायबरेली के अधीन चिकित्साधिकारी डॉ. शुभेंद्र कुमार मौर्या, मुख्य चिकित्साधिकारी, मथुरा के अधीन चिकित्साधिकारीगण डॉ. त्रिशाला भदकारिया (पैथॉलोजिस्ट), डॉ. अभय गर्ग, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, सिरसागंज, फिरोजाबाद के चिकित्साधिकारी डॉ. अमित कुमार सिंह, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, आनंदपुर जारखी, फिरोजाबाद के चिकित्साधिकारी डॉ. अनुज कुमार गौतम, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, खैरगढ़, फिरोजाबाद के चिकित्साधिकारी डॉ. संजीव कुमार, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, बछगांव कोटला, फिरोजाबाद के चिकित्साधिकारी डॉ. हिमांशी सागर एवं मुख्य चिकित्साधिकारी फिरोजाबाद के अधीन डॉ. सृष्टि सिंह शामिल हैं।

दंत शल्यक पर कार्रवाई

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, पयागपुर, बहराइच में तैनात दंत शल्यक डॉ. पूनम पाल को भी बिना सूचना अनुपस्थित रहने, अनुशासनहीनता एवं उच्चादेशों की अवहेलना करने हेतु बर्खास्त किए जाने के निर्देश उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने प्रमुख सचिव, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य को दिए हैं।

आरोप पत्र निर्गित करने के निर्देश

छह चिकित्साधिकारियों, जिनमें चिकित्साधिकारी, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, हरोड़ा, सहारनपुर में तैनात डॉ. प्रवेश कुमार भाटिया, प्रभारी चिकित्साधिकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, देवीदासपुर, बहराइच डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव, सीएमओ बरेली के अधीन तैनात तीन चिकित्साधिकारी डॉ. अमित कुमार, डॉ. दिव्या गौड़ एवं डॉ. शशांक वर्मा, साथ ही शाहजहांपुर सीएमओ के अधीन तैनात चिकित्साधिकारी डॉ. रिजवान अहमद खान को उनके द्वारा शासकीय दायित्वों के प्रति लापरवाही बरतने हेतु आरोप पत्र तत्काल निर्गित किए जाने के निर्देश भी डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक की ओर से प्रमुख सचिव स्वास्थ्य को दिए गए हैं।

कमिश्नरेट नोएडा के बाद सोनभद्र की पुलिस लाइन को भी मिला आईएसओ सर्टिफिकेट

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश पुलिस अब अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर भी खरी उतर रही है। सीएम योगी के विजन में अपराधियों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति का पालन करने वाली यूपी पुलिस स्मार्ट पुलिसिंग को बढ़ावा देने के साथ ही रिस्पॉन्सिबल व रिलायेबल अप्रोच के कारण नए प्रतिमान गढ़ रही है। इसी क्रम में एक नई उपलब्धि हासिल करते हुए सोनभद्र की पुलिस लाइन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का आईएसओ सर्टिफिकेशन प्राप्त हुआ है। सोनभद्र पुलिस लाइन अब पूर्वांचल की पहली आईएसओ-9001:2015 प्रमाणित पुलिस लाइन बन गई है। इसे बेहतर प्रबंधन,प्रशिक्षण, सेवाओं व सुविधाओं के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन आईएसओ - 9001:2015 का प्रमाण पत्र मिला है।

उल्लेखनीय है कि कमीश्नरेट गौतम बुद्ध नगर (नोएडा) उत्तर प्रदेश का पहला आईएसओ-9001:2015 प्रमाणित कमिश्नरेट पहले ही बन चुका है और सोनभद्र के रूप में पुलिस विभाग को प्राप्त हुआ सर्टिफिकेशन स्मार्ट पुलिसिंग की दिशा में सीएम योगी के विजन के क्रियान्वयन को दर्शाता है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जनता के प्रति जवाबदेही, पारदर्शिता और जीरो टॉलरेंस नीति में आईएसओ-9001:2015 सर्टिफिकेशन मील का पत्थर साबित होगा। यह कार्यो की समयबद्धता को सुनिश्चित करता है। स्टैंडर्ड ऑपेरेटिंग प्रोसिजर्स, मानव प्रबंधन, बेहतर कार्यस्थल और मूलभूत सुविधाओं के बेहतर होने से पुलिस की कार्य क्षमता आदि बढ़ेगी जिसका लाभ सीधे उत्तर प्रदेश की जनता और कानून व्यवस्था को मजबूत रखने में मिलेगा। इससे पुलिस के अधिकारियों व जवानों को भी इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड की सुविधा प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

पुलिस अधीक्षक सोनभद्र, डॉ. यशवीर सिंह ने बताया कि पुलिस लाइन में शारीरिक फिटनेस के लिए जिम, खेल परिसर, केंद्रीय पुलिस कैंटीन, परिवहन शाखा, शस्त्रागार, प्रशिक्षण ग्राउंड, वर्दी स्टोर, प्रतिसार निरीक्षक कार्यालय, जनरल डायरी कार्यालय, गणना कार्यालय की सेवायें प्रदान करना व पुलिस कर्मियों के रहने के साफ सुन्दर व मूलभूत सुविधाओं से युक्त आदर्श बैरकों का मूल्यांकन आईएसओ की टीम द्वारा किया गया। पुलिस लाइन की सुविधाओं को आईएसओ (इंटरनेशनल आर्गेनाइजेशन फॉर स्टैंडर्डडाईज़ेशन) के मानकों के अनुरूप पाया गया जिस पर पुलिस लाइन चुर्क को अगस्त 2024 में आईएसओ-9001:2015 का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया है।

डीजीपी ने सोनभद्र पुलिस को दी बधाईः डीजीपी प्रशांत कुमार ने सोनभद्र पुलिस को बधाई देते हुए कहा कि सोनभद्र पुलिस को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिल गई है। पुलिस के जवानों और अधिकारियों के रहने से लेकर कार्यस्थल तक के मूलभूत ढांचा में सुधार से उनकी कार्यकुशलता और क्षमता बढ़ाएगी जिसका असर पुलिस की बेहतर कार्यप्रणाली में देखने को मिलेगा। उन्होंने बताया कि इसके पहले गौतमबुद्ध नगर (नोएडा) कमीश्नरेट को आईएसओ-9001:2015 का स्टेटस मिल चुका है।

करेण्ट से किसान की मौत पर राज्यमंत्री ने बॅधाया ढाढ़स

कानपुर देहात। सोमवार को मैथा गारब निवासी मान सिंह पुत्र राम गोपाल की मृत्यु की दु:खद सूचना प्राप्त होते ही उप्र सरकार की राज्यमंत्री व सदर विधायक प्रतिभा शुक्ला एवं पूर्व सांसद अनिल शुक्ला वारसी ने पोस्टमार्टम हाउस अकबरपुर पहुच कर दु:खी परिजनो के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त कर हर संभव मदद का भरोषा दिया। मैथा गारब निवासी किसान मान सिंह पुत्र रामगोपाल गांव से कुछ दूरी पर मौजूद खेतों पर बोई फसल में खाद डालने के लिए गया था। तभी खेत के पास टूटे पड़े विधुत तारों की चपेट में आकर उसकी दर्दनाक मौत हो गई। जब देर रात तक मान सिंह घर नही लौटा तो परिजनों ने खोजबीन शुरू की गांव के अन्य किसानों से बातचीत की तो उन्होंने बताया कि मान सिंह खेत से घर की तरफगया था, वह अभी तक घर नही पहुचा है, परिजनों ने खेतों की तरफ जाकर देखा तो मान सिंह विधुत के तारों

राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला व पूर्व सॉसद अनिल शुक्ला मृतक के परिजनों को सॉत्वना देते हुये।

की चपेट में आने के कारण खेत मे मृत पड़ा था। मृतक मान सिंह को देखकर परिजनों में कोहराम मच गया। शिवली कोतवाली में दी, पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पोस्टमार्टम हाउस पहुची मंत्री प्रतिभा शुक्ला व पूर्व सांसद वारसी ने मृतक के भाई विजय कुमार सहित ग्रामीणों से वार्ता कर हर सम्भव मदद का भरोषा दिया। बिजली विभाग के अधिकारियों व एसडीएम अधिकारी मैथा सुरभि शर्मा से फोन पर वार्ता कर परिजनों को आर्थिक सहायता दिलाने की बात हुई है। जिससे मृतक मान सिंह की पत्नी प्रेमा देवी एवं उनके 5 बच्चों को यह सहायता राशि जीवन यापन करने में के लिए प्राप्त हो सके। गुड्डू मिश्रा, सरमन बाजपेई, श्रीकांत मिश्रा, श्याम बिहारी पांडेय, हिदायत अली, रामसिंह यादव आदि मौजूद रहे।

मजदूर की गैस प्लांट में मौत स्वजनो नें किया हंगामा

फर्रुखाबाद। गैस प्लांट के मजदूर की अचानक सीने में दर्द उठनें से मौत हो गयी। स्वजनो नें सूचना न देनें का आरोप लगाया है ।कोतवाली मोहम्मदाबाद के गैसिंगपुर इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड प्लांट पर ग्राम सकबाई निवासी जगेन्द्र पुत्र इजेंद्र सिंह बीते काफी दिनों से मजदूरी का कार्य कर रहा था। वह सुबह 5.30 बजे काम के लिए घर से प्लांट पर आया। वह सीने में दर्द की शिकायत मिली। गेट पर एंट्री कराने के बाद जगेंद्र अपने सिलेंडर सील पंच का कार्य करने लगा। लगभग सुबह 7 बजे अचानक सीने में दर्द होने पर जगेंद्र वही गिर पड़ा। साथ में वही काम कर रहे दीपक व अंकित ने पकड़कर लिटा दिया और अपने सुपरवाइजर के साथ अपने फ्लोर ऑफिसर सुभाष चंद्र शर्मा को जानकारी दी। सूचना मिलने पर परिजन उसे लोहियाअस्पताल लेकर गये जहाँ उसे मृत घोषित कर दिया गया। स्वजनो ने मृतक के शरीर को गैस प्लांट में लाकर रख दिया और आरोप लगाया कि प्लांट में खड़ी गाड़ी से अगर जगेंद्र को भेजते तो उसकी जान बच सकती थी। साथ ही परिवार के लोगो ने पत्नी सुनीता देवी तथा मृतक के बच्चे कृष्णा 15 वर्ष, दिव्यांशु 13 वर्ष, दिव्या 11 वर्ष तथा परी 8 वर्ष के लिए मुआवजे की मांग की है। इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड गैसिंगपुर में तैनात डीजीएम किशोर बेहेरा ने कहा है कि हमे घटना की जानकारी हुई हैं तो हमारे कर्मचारी उसे फर्स्ट ट्रीटमेंट के लिए पास के डॉक्टर को दिखाने के लिए ले गए थे। मुआवजे के लिए वह अपने अधिकारियों से बात करके जो भी कंपनी से हो सकता है, मृतक के परिवार को दिलवाएंगे। मृतक की माता बेटी देवी तथा पत्नी सुनीता देवी का रो-रो कर बुरा हाल हो गया। कोतवाली प्रभारी मनोज भाटी पुलिस बल के साथ पहुंचे। दारोगा सूर्य प्रकाश उपाध्याय ने पंचनामा भरकर शव पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया।

विधायक अलका अर्कवंशी ने किया स्मार्ट क्लास एवं डिजिटल बोर्ड का उद्घाटन

संवाददाता। संडीला (हरदोई)

क्षेत्रीय विधायक अलका अर्कवंशी ने पार्वती देवी सरस्वती विद्या मंदिर प्रेमनगर में आयोजित कार्यक्रम में छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि परिश्रम और लगन से जीवन का हर लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। विधायक अलका अर्कवंशी ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंनें फ़ीता काटकर स्मार्ट क्लास और डिजिटल बोर्ड का उद्घाटन किया। उन्होनें अपने संबोधन में कहा कि छात्र छात्राओं को शिक्षा के प्रति जागरूक रहते हुए परिश्रम और लगन के साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंनें उदाहरण देते हुए कहा कि देश की विक्लांग बेटी अवनी लखेरा ने दिव्यांगता को पीछे छोड़ते हुए भारत के लिए स्वर्ण पदक जीता। उन्होंनें विशेष रूप से अभिभावकों का

उद्घाटन करतीं हुई क्षेत्रीय विधायक

आह्वान किया कि वे बालिकाओं की शिक्षा पर बालकों से अधिक ध्यान केन्द्रित करें। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि विशुनदयाल शुक्लाए विद्यालय के प्रबंधक प्रेमचन्द्र सिंहएप्रेमबाबाए प्रधानाचार्य कृष्ण कुमार शुक्ला तथा जनशिक्षा समिति अवध प्रदेश के लखनऊ संभाग निरीक्षक श्याम मनोहर शुक्ला समेत तमाम लोग मौजूद रहे।

बाइक चोरी का खुलासा, तीन अभियुक्त गिरफ्तार, पार्ट्स बरामद

फतेहपुर। सदर कोतवाली पुलिस ने बाइक चोरी के दर्ज मुकदमें का खुलासा करते हुए मुखबिर की सूचना पर जहां तीन अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया वहीं बुलेट बाइक के पार्ट्स भी बरामद किए हैं। पकड़े गए चोरों के खिलाफ सुसंगत धाराओं में कार्रवाई कर न्यायालय भेज दिया। जानकारी के अनुसार सदर कोतवाली पुलिस ने मु0अ0सं0-386/2024 धारा 303 (2) बीएनएस का सफल अनावरण करते हुए जरिए मुखबिर सूचना पर संबंधित अभियुक्त राहुल द्विवेदी पुत्र स्व. राम किशोर निवासी डिगोरा थाना हरचंदपुर जनपद रायबरेली हाल पता पीरनपुर थाना कोतवाली, साजन पुत्र नफीस निवासी पीरनपुर थाना कोतवाली व सनी पुत्र सत्यनारायण सिंह निवासी पीरनपुर थाना कोतवाली को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्तगण की निशादेही पर उनके घर से ही मोटरसाइकिल के पार्ट्स बरामद

पुलिस टीम की गिरफ्त में अभियुक्त एवं बरामद बाइक के पार्ट्स।

किया गया। गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर अपराध धारा 317(2), 317(5) बीएनएस की बढोत्तरी करते हुए गिरफ्तार अभियुक्तगण को न्यायालय रवाना किया। गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम में प्रभारी निरीक्षक तारकेश्वर राय, उपनिरीक्षक अनुज यादव, विजय कुमार, कांस्टेबल लोकेंद्र कुमार तोमर, राहुल कुमार, श्वेत सिंह, सत्यम राजावत, विजय सिंह भी शामिल रहे।

गणेश महोत्सव की तैयारियां तेज, सजने लगी प्रतिमाएं

- **बाजार में छह इंच से लेकर साढ़े नौ फीट तक ऊंची मूर्ति**
- **सात सितंबर से घर-घर और पंडालों में विराजेंगे गणपति बप्पा**

संवाददाता। फतेहपुर

सावन माह के बाद अब गणेश महोत्सव की तिथि नजदीक आते ही बप्पा की मूर्तियों का बाजार सजने लगा है। शहर के कई स्थानों में मूर्तिकार गणेश प्रतिमाओं को गढ़ने में जुटे हुए हैं। छोटी प्रतिमाओं से लेकर साढ़े नौ फीट तक की मूर्ति बनाई जा रही हैं। घरों से लेकर पंडालों में गणपति विराजेंगे इसके लिए अभी से लोग मूर्तियों के आर्डर दे रहे हैं।

गणेश महोत्सव को लेकर लोगों में उत्साह देखा जा रहा है। गणेश महोत्सव की 7 सितंबर से शुरुआत हो रही है। इसी दिन से गणपति की स्थापना की जाएगी। जिन मोहल्लों में गणपति बप्पा की मूर्तियों को पंडालों में सजाया जाता है उन मोहल्लों की कमेटी में उत्साह देखने को मिल रहा है। हर कोई गणपति बप्पा की दीवानगी में रंगा दिखाई दे रहा है। गणेश मूर्तियों की अच्छे आर्डर मिलने से मूर्तिकारों के चेहरों पर चमक है। शहर के कलक्टरगंज मोहल्ले के एक लॉज में मूर्तिकार पहुंचते हैं और यहां मूर्तियां बनाकर भक्तों को बिक्री करने का काम करते हैं। मूर्तिकार ने बताया वह पिछले 15 वर्षों से जिले में गणेश महोत्सव को लेकर गणेश मूर्तियां तैयार करते हैं। बताया इस बार अच्छा कारोबार होने की उम्मीद है।

छोटी से बड़ी मूर्तियां बनी

बाजार में इस बार आधा फुट से साढ़े नौ फुट तक की गणेश मूर्तियां दिखाई दे रही हैं। लोगों को सबसे ज्यादा चार से आठ फीट तक की मूर्तियां पसंद आ रही है। लोग छोटी मूर्तियों को भी खरीदने में लगे हैं। मूर्तिकार ने बताया कि पिछले वर्ष की अपेक्षा इस बार दो गुना मूर्तियां बना रहे हैं।

महंगाई का दिख रहा असर

अन्य सामग्रियों की तरह गणेश मूर्ति की कीमत में भी महंगाई का मार पड़ रही है। इस बार गणेश मूर्तियों पर महंगाई का भी असर साफ देखने को मिल रहा है। पांच फीट की एक मूर्ति की लागत पहले जो होती थी उसमे 15 से 20 प्रातिशत तक का इजाफा देखने को मिल रहा है। बाजार में गणेश मूर्ति की कीमत की शुरुआत 200 रुपए से है लेकिन अधिकतम मूर्ति की कीमत 20 हजार तक है।

कौन सी मूर्ति कितने की है

मूर्तिकारों एवं दुकानों में मौजूद गणेश प्रतिमा विभिन्न दामों में उपलब्ध हैं। जिसमें आधा फीट की मूर्ति 300 रुपये, एक फीट 500, डेढ़ फीट 600, दो फीट 2000, तीन फीट 2800, चार फीट 3500, पांच फीट 5000, छह फीट 6000, सात फीट 7500, आठ फीट 12000, साढ़े नौ फीट 14000 रुपये की कीमत है।

राष्ट्रीय पत्रकार सुरक्षा परिषद ने अभद्र टिप्पणी को लिया संज्ञान

बिंदकी/फतेहपुर। बैठक में पत्रकारों की पत्रकारिता के क्षेत्र में होने वाली समस्याओं को सुनते हुए निराकरण की चर्चा की गई। पत्रकारों को जनपद में बने तीनों टोल प्लाजा में टोल टैक्स माफ करने की मांग में गहन बिन्दुओं में चर्चा हुई। जनपद के अमौली ब्लॉक में प्रधान संघ द्वारा ब्लॉक के अंदर पत्रकारों को अपमानित कर अभद्र टिप्पणी नोटिस चस्पा की गई थी जिस पर लिखा था कि प्रधान संघ की कुर्सी पर कोई पत्रकार बैठने की गलती न करें अन्यथा बेज्जती की जाएगी, जो कि पूरे पत्रकारिता जगत के पत्रकारों को अपमानित करने का कार्य प्रधान संघ द्वारा व ब्लॉक के मेन गेट पर नोटिस चस्पा होने पर ब्लॉक प्रमुख, खण्ड विकास अधिकारी को भी दोषी मानते हुए राष्ट्रीय पत्रकार सुरक्षा परिषद द्वारा नोटिस चस्पा करने व करने वालो के खिलाफ डीएम को ज्ञापन सौंपकर एफआइआर कराए जाने का निर्णय लिया गया।

क्विक न्यूज

छात्रा को अगवा कर किया रेप

फतेहपुर। जिले में इंसानियत को शर्मसार करने वाला एक मामला सामने आया है यहां स्कूल जा रही कक्षा 9 की छात्रा को रास्ते से युवक ने अगवा कर लिया। नलकूप में ले जाकर किशोरी के साथ बलात्कार किया। इसके बाद कमरे में कैद कर चला गया। औंग थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी युवक ने पुलिस से शिकायत की है। उसकी 15 वर्षीय बेटी कक्षा नौवीं की छात्रा है। रोज की तरह किशोरी बीते 28 अगस्त की सुबह करीब 8 बजे घर से साइकिल पर सवार होकर स्कूल के लिए निकली थी।स्कूल जाने के रास्ते में आदर्श नामक युवक का गांव किनारे ट्यूबवेल है। जैसे ही बेटी नलकूप के सामने पहुंची तभी पहले से घात लगाए बैठा उपरोक्त युवक लड़की को जबरन उठाकर ट्यूबवेल की कोठरी में ले गया। दरिंदे ने बंधक बनाकर उसके साथ रेप किया। इसके बाद कमरे में ताला लगाकर मौके से चला गया। दोपहर करीब एक बजे स्कूल की छुट्टी होने के समय आरोपी आदर्श ट्यूबवेल आया और ताला खोलकर लड़की को घटना की शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी देकर छोड़ दिया। डरी सहमी घर पहुंची किशोरी को गुमसुम देखकर परिजनों ने पूछताछ की। इस दौरान लड़की ने अपने साथ हुई घटना की जानकारी दी। पीड़िता के पिता बेटी को साथ लेकर स्थानीय थाने पहुंचे और आरोपी के खिलाफ शिकायती पत्र दिया। थानाध्यक्ष ने बताया कि पीड़िता के पिता की तहरीर पर पाक्सो एक्ट और दुष्कर्म की धाराओं के साथ अन्य सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। जल्द ही आरोपी को गिरफ्तार किया जाएगा।

सड़क हादसों में महिला समेत छह जख्मी

फतेहपुर। जनपद के अलग-अलग थाना क्षेत्रों के अंतर्गत हुए सड़क हादसों के दौरान महिला समेत छह लोग घायल हो गए। जिन्हें उपचार के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। मलवां थाना क्षेत्र के बादलपुर गांव निवासी रामस्वरूप का 26 वर्षीय पुत्र शिवम अपनी 45 वर्षीय मां कौशल्या देवी एवं जगदीश के 15 वर्षीय पुत्र तनुज के साथ सोमवार की सुबह बाइक से गंगा स्नान के लिए जा रहे थे। जैसे ही यह लोग सातमील के समीप पहुंचे तभी चार पहिया वाहन की चपेट में आ जाने से तीनों बुरी तरह घायल हो गए। इसी थाने के बादलपुर गांव निवासी रामपाल का 19 वर्षीय पुत्र भोलू अपनी ममेरी बहन रोशनी 17 वर्ष व रेशमी 10 वर्ष निवासी बेनू थाना लालौली को बाइक में बैठाकर लालौली जा रहा था। जैसे ही ये लोग सहली गांव के समीप पहुंचे तभी सामने से तेज रफ्तार आ रही बाइक से भिड़ंत हो गई। जिससे तीनों घायल हो गए। सूचना पाकर मौके पर पहुंची सरकारी एंबुलेंस ने सभी घायलों को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया।

ट्रेन की चपेट में आकर महिला की मौत

फतेहपुर। खागा कोतवाली क्षेत्र के ग्राम कटोघन के समीप सोमवार की सुबह खेत जा रही 55 वर्षीय महिला की रेलवे लाइन पार करते समय ट्रेन की चपेट में आ जाने से दर्दनाक मौत हो गई। कटोघन गांव निवासी रमेश चंद्र की पत्नी रामरती सोमवार की सुबह लगभग आठ बजे खेत जा रही थी। जब वह रेलवे लाइन पार करने लगी इसी बीच आ रही ट्रेन की चपेट में आ गई। जिससे उसकी घटनास्थल पर मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर चिकित्सालय गृह भेज दिया।

व्यापारी सुरक्ष प्रकोष्ठ प्रभारी ने व्यापारियों की समस्या सुनी

कानपुर देहात। व्यापारी सुरक्षा प्रकोष्ठ कानपुर देहात प्रभारी द्वारा थाना क्षेत्र गजनेर व्यापार मंडल नगर अध्यक्ष नीरज गुप्ताए व्यापार मंडल जिला कोषाध्यक्ष संतोष सिंह तथा अन्य छोटे बड़े व्यापारियों से मीटिंग कर समस्या सुनी गई नीरज गुप्ता नगर अध्यक्ष दीपू परिहार नगर महामंत्री राजेश सचान नगर कोषाध्यक्ष राकेश सिंह चौहान नगर कमेटी संरक्षक संतोष सिंह चौहान जिला कोषाध्यक्ष, कौशल रेडी मेड अरुण मिश्रा एवं नगर के व्यापारी में मौजूद है।

चकबंदी कार्य के संबंध समीक्षा बैठक संपन्न

बांदा। जिलाधिकारी नगेंद्र प्रताप की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जनपद में चकबंदी कार्य के संबंध समीक्षा बैठक संपन्न हुई, बैठक में जिलाधिकारी ने चकबंदी अधिकारी एवं सहायक चकबंदी अधिकारियों को निर्देशित किया कि लक्ष्य के अनुरूप चकबंदी कार्य को पूर्ण करें।

रोजगार मेले में 42 अभ्यर्थियों का हुआ चयन

कानपुर देहात। डीएम के निर्देशन में जिला रोजगार सहायता अधिकारी शशि तिवारी ने बताया कि जिला सेवायोजन कार्यालय कानपुर देहात द्वारा स्थान जिला सेवायोजन कार्यालय परिसर माती, कानपुर देहात में 02.09.2024 को एक दिवसीय ऑनलाइन रोजगार मेले का अयोजन किया गया। रोजगार मेले में निजी क्षेत्र के कंपनियों द्वारा ऑनलाइन साक्षात्कार किया गया। मेले में लगभग 65 अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग किया, 42 अभ्यर्थियों का प्राथमिक चयन किया गया।

बलवन्त हत्याकाण्ड के विवेचक सीओ की जिरह हुयी पूरी

कानपुरदेहात। लम्बे अर्से से बलवन्त हत्याकाण्ड में टल रही विवेचक सीओ की जिरह पूरी कर ली गयी। बहुचर्चित बलवन्त हत्याकाण्ड में विवेचक पुलिस उपाधीक्षक हाल तैनाती भाटपाररानी देवरिया शिव प्रताप सिंह से आरोपी तत्कालीन एसओजी प्रभारी प्रशान्त गौतम एवं तत्कालीन एसओजी टीम सदस्य मुख्य आरक्षी दुर्वेश कुमार की तरफ से जिरह की गई। अन्य गवाह एफआईआर लेखक के बयान हेतु न्यायालय ने 3 सितंबर की तिथि नियत करने का आदेश पारित किया है। वरिष्ठ अधिवक्ता जितेन्द्र प्रताप सिंह चौहान दी। पूर्व नियत तिथि में न्यायालय का समय शेष न बचने के कारण गवाह से जिरह पूर्ण नहीं हो सकी थी। वादी पक्ष की तरफसे पैरवी कर रहे अधिवक्ता ने बताया कि शिवली थाना प्रभारी राजेश सिंह, मैथा चौकी के तत्कालीन मुख्य आरक्षी विनोद कुमार, एसओजी टीम के तत्कालीन आरक्षी गण सोनू यादव व प्रशान्त पाण्डे की आरोपी तत्कालीन एसओजी आरक्षी अनूप कुमार की तरफसे जिरह पूर्व में पूर्ण की गई थी।

सपा नेता नबाव सिंह व पीड़िता का डीएनए हुआ मैच

- **एफएसएल रिपोर्ट में हुई किशोरी से दुष्कर्म किये जानें की पुष्टि**

कन्नौज। कन्नौज में पूर्व सपा नेता/पूर्व ब्लॉक प्रमुख नवाब सिंह यादव का नाबालिग रेप पीड़िता के साथ डीएनए सैंपल मैच हुआ है। पीड़िता के साथ बलात्कार की पुष्टि हो गई है। फोरेंसिक टेस्ट रिपोर्ट में इसका खुलासा हुआ है। डीएनए सैंपल मैच होने के बाद अब नवाब सिंह की मुश्किलें और बढ़ गई हैं। अब नाबालिग से रेप के साथ-साथ पुलिस पॉक्सो एक्ट के तहत चार्जशीट दाखिल करेगी। बीते 11 अगस्त की रात को कन्नौज में पूर्व ब्लॉक प्रमुख नवाब सिंह यादव ने नाबालिग लड़की के साथ रेप की घटना को अंजाम दिया था। इस दौरान पीड़िता ने 112 नंबर डायल कर

पुलिस को कॉल किया था और मामले की जानकारी दी थी। जिसके बाद 112 और कोतवाली पुलिस टीम मौके पर पहुंची थी। जब पुलिस वहां पहुंची तो पीड़िता की बुआ भी वहां मौजूद थी तो पुलिस ने बुआ को कस्टडी में लेकर पूछताछ की थी। पीड़िता की ओर से शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने केस दर्ज किया था और पीड़िता का उसके परिजनों की सहमति के आधार पर मेडिकल कराया गया था। मेडिकल होने पर रेप की पुष्टि हुई थी। इसके बाद पुलिस ने धाराएं जोड़कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया था। इस रेपकांड की दूसरी आरोपी पीड़िता की बुआ है, जो नाबालिग को लेकर लखनऊ से नवाब सिंह यादव के पास उसके कॉलेज में पहुंची थी। घटना के समय वह कमरे के बाहर मौजूद थी। पीड़िता ने उसे आवाज भी लगाई थी, लेकिन उसने कोई मदद नहीं की थी।

ग्रामीण स्वच्छता मिशन का प्रधानों ने किया बंटाधार

- **ग्रामसभा ककराली में सार्वजनिक शौचालय बना तबेला**

संडीला (हरदोई)। केन्द्र और प्रदेश सरकार की स्वच्छ भारत मिशन योजना के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में सफ़ाई और स्वच्छता के लिए खर्च किए गए लाखों रुपयों के बावजूद लगातार इसकी धज्जियां उड़ाने का कार्य चल रहा है। बनवाए गए सुलभ शौचालय पशुओं के आश्रय स्थल बन गए हैं। एक उदाहरण ग्राम सभा ककराली में लाखों रुपए खर्च करके निर्मित किया गया सुलभ शौचालय निष्प्रयोज्य हालत में पड़ा है। इस तक जाने के लिए बना मार्ग काफ़ी टूटा फूटा तथा कीचड़ और गंदे पानी से भरा हुआ है और जहां कहीं यह मार्ग चलने लायक है वहां जानवर बंधे हुए हैं। अंदर जाने पर इस सुलभ शौचालय की दैनिय स्थिति दिखाई देती है। चारों तरफ़ भीषण गंदगी का अम्बार है। सीटें टूट फूट चुकी हैं। गंदगी देखकर ऐसा लगता है कि वर्षों

ककराली गांव का सुलभ शौचालय बंद अवस्था में इनसेट में शौचालय के अंदर का दृश्य

से यहां कोई सफ़ाईकर्मी झांकने तक नहीं आया। जब स्थानीय क्षेत्र पंचायत सदस्य से पूछा गया तो उसने किसी प्रकार की जानकारी देने से मना करते हुए कहा कि आप प्रधान जी से बात करें। प्रधान से मोबाइल पर संपर्क किया गया तो उनका कहना था कि वे मीडिया वालों से कोई बात नहीं करते। कई ग्रामीणों ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि इस सुलभ शौचालय के निर्माण के तीन महीने बाद से सफ़ाईकर्मी यहां नहीं आए। न तो गांव में कोई सफ़ाई होती है और न इस शौचालय की तरफ़ कोई झांकने आता है। इस गांव में किनते सफ़ाईकर्मी तैनात हैं इसकी कोई जानकारी ग्रामीण नहीं दे पाए। अलबत्ता कुछ ग्रामीणों ने दबी जबान से कहा कि जो भी सफ़ाई वाले आते हैं वे प्रधान जी के यहां बैठकर चले जाते हैं। इस सुलभ शौचालय का परिसर जुआंरियों का अड्डा बन गया है जहां दिनभर लोग जुआं खेलते रहते हैं। कुल मिलाकर देखा जाए तो लाखों खर्च करने के बाद भी गांव में गंदगी की दशा जस की तस है और लोग सड़कों के किनारे खेतों की मेढ़ आदि पर शौच के लिए विवश हैं।

300 से अधिक बच्चों ने एक साथ खाई फाइलेरिया की दवा

लखीमपुर खीरी। स्वास्थ्य विभाग व युवा कार्यक्रम विभाग एनएसएस द्वारा संयुक्त रूप से फाइलेरिया मुक्त भारत की संकल्पना विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। तीन सौ से अधिक बच्चों को एक साथ फाइलेरिया की दवा का सेवन कराया गया। सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता ने बताया कि युवा कार्यक्रम विभाग भारत सरकार क्षेत्रीय निदेशालय एनएसएस के सहयोग से फाइलेरिया मुक्त भारत की संकल्पना विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन युवराज दत्त महाविद्यालय में किया। 300 से अधिक छात्र.छात्राओं को एक साथ निशुल्क फाइलेरिया की दवा का सेवन करवाया गया। शुभारंभ प्राचार्य प्रोफेसर हेमंत पाल द्वारा किया गया। यह कार्यक्रम जिला मलेरिया अधिकारी के नेतृत्व में संपन्न हुआ और एनएसएस के नोडल अधिकारी प्रोफेसर सुभाष चंद्रा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फाइलेरिया को लेकर जिला मलेरिया अधिकारी हरिशंकर ने बच्चों को विस्तार से जानकारी दी। फाइलेरिया होने के कारण और दवा से बचाव सहित दवा खाने के फायदों के बारे में बताया गया। प्रो. संजय कुमार, प्रोफेसर विशाल द्विवेदी, डॉ ईस्ट विभु, डॉ ओपी सिंह, डॉ बृजेश शुक्ला, मोहम्मद नजीफ, विनय तोस गौतम, दीपक बाजपेई, धर्म नारायण, मोहम्मद आमिर, मानवेंद्र यादव, रचित कुमार सहित बड़ी संख्या में छात्र.छात्राएं उपस्थित रहे।

सीएम योगी ने मानव वन्यजीव संघर्ष की घटनाओं का लिया संज्ञान, घटनाओं पर लगाएं अंकुश

- **सीएम योगी ने मानव वन्यजीव संघर्ष की घटनाओं को लेकर वन मंत्री, अधिकारियों संग की उच्च स्तरीय बैठक**
- **प्रभावित जिलों में वन टीम बढ़ाने, लगातार कॉम्बिंग करने, मॉनीटरिंग एवं जनजागरुकता फैलाने के सीएम ने दिये निर्देश**
- **सीएम के फरमान पर एक्शन में डीएम, जारी की एडवाइजरी**
- **क्षेत्र में कॉम्बिंग, आपसी तालमेल बढ़ाने, गश्त की डिटेल रजिस्टर में अंकित करने के दिये निर्देश**

लखीमपुर खीरी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के विभिन्न जिलों में हाल के दिनों में घटित मानव.वन्यजीव संघर्ष की घटनाओं का संज्ञान लेते हुए सोमवार को एक उच्च स्तरीय बैठक की। बैठक में उन्होंने विभागीय मंत्री और संबंधित विभाग के अधिकारियों को मानव वन्यजीव संघर्ष की घटनाओं को रोकने, उनकी मॉनीटरिंग करने एवं घटनाओं के बढ़ने के कारणों पर मंथन करने के निर्देश दिये ताकि इन पर अंकुश लगाया जा सके। सीएम योगी के निर्देश के बाद मानव वन्यजीव संघर्ष की घटनाओं को लेकर डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल सक्रिय हो गईं और आनन फानन में टीम बनाकर कॉम्बिंग एवं गांव.गांव में जाकर जन जागरुकता फैलाने के निर्देश दिये।

सीएम के फरमान पर एक्शन में डीएम, जारी की एडवाइजरी

मुख्यमंत्री योगी ने बैठक में कहा कि पिछले कुछ दिनों से प्रदेश के विभिन्न जिलों से आदमखोर भेड़िये या तेंदुए द्वारा हमले की सूचना आ रही है। इन घटनाओं को नियंत्रित करनेए वन्यजीव को पकड़ने एवं आवश्यकतानुसार जरूरी कदम उठाने के निर्देश दिये। प्रभावित जिलों में प्रशासन, पुलिस, वन विभाग, स्थानीय पंचायत, राजस्व विभाग द्वारा व्यापक जन जागरूकता पैदा करने एवं लोगों को सुरक्षा के उपायों के बारे में भी बताने के आदेश दिये। वन मंत्री और संबंधित अधिकारी हरकत में आ गए। वन मंत्री ने बहराइच, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, पीलीभीत, बिजनौर सहित अन्य जिलों में तत्काल वन विभाग के अतिरिक्त कर्मचारियों की तैनाती के निर्देश दिये। ज्वाइंट पेट्रोलिंग बढ़ाने का आदेश दिया। वरिष्ठ अधिकारियों को जिलों में कैंप करनेए जनप्रतिनिधियों से सहयोग लेने एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जहां लाइट की समस्या हो, पेट्रोमैक्स की व्यवस्था करने का आदेश दिया। बता दें कि उप्र पहला राज्य है, जिसने मानव वन्यजीव संघर्ष को आपदा घोषित किया है। वन्यजीवों के हमले में घायल लोगों अथवा असमय काल कवलित हुए लोगों के परिवारीजनों को हर सम्भव सहायता उपलब्ध कराई जा रही है।

डीएम ने जारी किये जरूरी दिशा निर्देश

डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने पुलिस, वन विभाग, स्थानीय पंचायत और राजस्व विभाग को जरूरी दिशा निर्देश जारी किये है। रेंज स्तर पर वन क्षेत्रों में गश्त के साथ जंगल से सटे ग्रामीण क्षेत्रों में गश्त के लिए कार्ययोजना के अनुसार वनकर्मियों की टीम रोजाना गश्त करें, इसकी सूचना रजिस्टर पर अंकित करें। आरक्षित वन क्षेत्रों से लगे ग्रामों में मानव वन्यजीव संघर्ष को रोकने के लिए बैठकों का आयोजन किया जाए एवं वन्य जीवों से सावधानी बरतने के लिए ग्रामीणों को सजग किया जाए। ग्रामीणों को यह समझाया जाए कि वह अपने खेतों में कृषि कार्य के लिए समूहों में आवाज करते हुए जाएं, जिससे वन्यजीव रास्ते से हट जाएं। संवेदनशील क्षेत्रों में मानव वन्यजीव के संबंध में व्यापक प्रचार.प्रसार किया जाए। सार्वजनिक स्थलों पर (मन्दिर, गुरूद्वारा, मस्जिद, स्कूल, स्थानीय बाजार, गन्ना क्रय केन्द्र, विकास खंड कार्यालय, तहसील) वन्यजीवों से सावधानी रखने से संबंधित होर्डिंग्स लगवाए जाएं। वन्यजीव प्रभावित क्षेत्रों में रास्ते के किनारे एवं सार्वजनिक स्थलों पर प्रचार.प्रसार के लिए पोस्टर चिपकाए जाएं। ग्रामीणों में सतर्कता के लिए पम्पलेट्स बंटवाये जाएं।

स्थानीय वन कर्मियों को ग्राम प्रधानों से मोबाइल से संपर्क रखने के दिये निर्देश

डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने निर्देश दिये कि संयोगवश यदि किसी क्षेत्र में मानव वन्य जीव संघर्ष की कोई घटना घटित होती है तो तत्काल स्थानीय स्टाफ एवं रेंज स्टाफद्वारा रेस्क्यू करने के साथ उच्चाधिकारियों को सूचित किया जाए। वन्यजीव प्रभावित क्षेत्रों में गश्त के दौरान रेंजस्तर पर उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग किया जाए। इसके अलावा स्थानीय स्वयं सहायता समूह, बुद्धिजीवी संवर्ग, ग्राम प्रधान एवं वन्यजीव पशुओं के प्रति संवेदनशील व्यक्तियों से सहयोग लिया जाए। आरक्षित वन क्षेत्र से लगी ग्रामीण सीमाओं एवं पगडंडियों पर स्थानीय स्टाफद्वारा गश्त एवं एंटी स्नेयर बाक लगातार की जाए। जंगल सीमा से लगे गांवों के ग्राम प्रधानों से स्थानीय वन कर्मियों द्वारा आपस में मोबाइल द्वारा संपर्क रखा जाए।

उच्च पद पर आसीन लोगों से कुछ तरह के संयम की अपेक्षा की जाती है

भाषा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने वर्ष 2015 के नकदी के बदले वोट मामले में सुनवाई भोपाल स्थानांतरित करने के अनुरोध वाली याचिका पर सुनवाई में की अहम टिप्पणी

उच्चतम न्यायालय ने वर्ष 2015 के नकदी के बदले वोट मामले में सुनवाई भोपाल स्थानांतरित करने का अनुरोध करने वाली याचिका पर सुनवाई करते हुए सोमवार को कहा कि उच्च पद पर आसीन व्यक्ति से कुछ तरह के संयम की अपेक्षा की जाती है। नकदी के बदले वोट मामले में तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी भी एक आरोपी हैं। शीर्ष अदालत ने 29 अगस्त को मामले की सुनवाई करते हुए कथित दिल्ली आबकारी शुल्क नीति घोटाले से जुड़े मामलों में भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) नेता के. कविता को उसके द्वारा जमानत दिए जाने को लेकर रेड्डी की टिप्पणियों पर कड़ी नाराजगी व्यक्त की थी। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ने 30 अगस्त को दावा किया था कि उनकी टिप्पणियों को संदर्भ से परे देखा गया और उन्होंने बिना शर्त खेद व्यक्त किया था।

सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में उन्होंने देश की न्यायपालिका के प्रति अपना सम्मान और पूर्ण विश्वास व्यक्त किया था।

यह मामला सोमवार को न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की पीठ के समक्ष सुनवाई के लिए आया। पीठ ने कहा, विशेष रूप से, जब कोई उच्च पद पर होता है, तो उससे कुछ तरह के संयम की अपेक्षा की जाती है। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अदालतों और वकीलों को इसमें घसीटा जाता है। तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) के तत्कालीन सदस्य रेवंत रेड्डी को 31 मई, 2015 को भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने विधान परिषद चुनाव में कथित तौर पर तेदेपा उम्मीदवार वेम नरेन्द्र रेड्डी का समर्थन करने के लिए मनोनीत विधायक एल्विस स्टीफेंसन को 50 लाख रुपए की रिश्वत देते हुए पकड़ा था। एसीबी ने रेवंत रेड्डी के अलावा कुछ अन्य लोगों को भी गिरफ्तार किया था, लेकिन बाद में उन सभी को जमानत दे दी गई। सोमवार को सुनवाई के दौरान, बीआरएस विधायक गुंतकांडला जगदीश रेड्डी और तीन अन्य की ओर से पेश वरिष्ठ वकील सी ए सुंदरम ने मुकदमे को स्थानांतरित करने की मांग करते हुए कहा कि तेलंगाना के मुख्यमंत्री के पास गृह विभाग भी है और वह भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के प्रभारी हैं। रेड्डी की ओर से पेश वरिष्ठ वकील मुकुल रोहतगी ने कहा कि मामले की आधी सुनवाई पूरी हो चुकी है और 25 गवाहों से पूछताछ हो चुकी है।

सुंदरम ने कहा कि उनमें से कोई भी महत्वपूर्ण गवाह नहीं है और जांच अधिकारी से अभी पूछताछ नहीं की गई है। पीठ ने उत्तरदाताओं से एक अंतरिम आवेदन पर अपनी प्रतिक्रिया दाखिल करने को कहा और मामले को दो सप्ताह के बाद सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया। कविता को जमानत दिलाने के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और बीआरएस के बीच सौदा को लेकर रेड्डी के बयान से नाराज शीर्ष अदालत ने 29 अगस्त को कहा था कि इस तरह के बयान लोगों के मन में धारणाएं पैदा कर सकते हैं। शीर्ष अदालत ने कहा था कि संस्थानों के प्रति सम्मान दिखाना राजनीतिक दलों का मूल कर्तव्य है।

देश के विकास में सहकारी क्षेत्र का योगदान अद्वितीय है: राष्ट्रपति मुर्मू

पुणे।(भाषा) राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने महाराष्ट्र के कोल्हापुर में एक समारोह के संबोधित करते हुए कहा कि देश के विकास में सहकारी क्षेत्र का योगदान अतुलनीय है। पश्चिम महाराष्ट्र के शहर वारणानगर में श्री वारणा महिला सहकारी समूह के स्वर्ण जयंती समारोह को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा, "व्यापार और उद्यमिता ने आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, लेकिन देश के विकास में सहकारी क्षेत्र की भूमिका अतुलनीय है"। मुर्मू ने कहा कि सहकारिता समाज में निहित शक्ति का बेहतर उपयोग करने का सर्वोत्तम माध्यम है। उन्होंने कहा, सहकारिता के सिद्धांत संविधान में परिकल्पित न्याय, एकता और भाईचारे की भावना के अनुरूप हैं। जब अलग-अलग वर्गों और विचारधाराओं के लोग सहकार के लिए एकजुट होते हैं, तो उन्हें सामाजिक विविधता का लाभ मिलता है। मुर्मू ने कहा कि देश के आर्थिक विकास में सहकारी समितियों ने अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है तथा अमूल और लिज्जत पापड़ जैसे घरेलू ब्रांड ऐसी सहकारी समितियों के ही उदाहरण हैं।

राष्ट्रपति ने कहा कि सहकारी समूहों ने भारत को विश्व का सबसे बड़ा दूध उत्पादक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि ऐसी सहकारी समितियां लगभग सभी राज्यों में दूध और दूध उत्पादों का उत्पादन और वितरण करती हैं। उन्होंने ने कहा कि सहकारी संस्थाएं केवल दूध ही नहीं, बल्कि उर्वरक, कपास, हथकरघा, आवास, खाद्य तेल और चीनी जैसे क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। मुर्मू ने कहा, "लेकिन तेजी से बदलते इस समय में उन्हें खुद को बदलने की जरूरत है। उन्हें जितना संभव हो सके प्रौद्योगिकी का उपयोग करना चाहिए और प्रबंधन को और अधिक पेशेवर बनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि कई सहकारी समितियां पूंजी व संसाधनों की कमी, शासन व प्रबंधन एवं कम भागीदारी जैसी समस्याओं का सामना कर रही हैं और अधिक से अधिक युवाओं को सहकारिता से जोड़ना इस दिशा में महत्वपूर्ण हो सकता है।राष्ट्रपति ने कहा कि युवा, प्रशासन और प्रबंधन में प्रौद्योगिकी को शामिल करके उन संस्थाओं का कायाकल्प कर सकते हैं। उन्होंने सहकारी संस्थाओं को जैविक खेती, भंडारण क्षमता निर्माण और इको-टूरिज्म (पर्यटन) जैसे नए क्षेत्रों में अवसर तलाशने की सलाह दीं। उन्होंने कहा कि किसी भी उद्यम की सफलता का असली राज़ उसका आम लोगों के साथ जुड़ाव है और सहकारी समितियों की सफलता के लिए लोकतांत्रिक व्यवस्था और पारदर्शिता महत्वपूर्ण है। मुर्मू ने कहा कि सहकारी समितियों में किसी के एकाधिकार की जगह वास्तविक सहकार होना चाहिए। उन्होंने कहा, सहकारी संस्थाओं में सदस्यों के हित सर्वोपरि होने चाहिए। यह हमेशा ध्यान में रखा जाना चाहिए कि कोई भी सहकारी संस्था किसी व्यक्ति के निजी स्वार्थ और लाभ कमाने का एक साधन न बने, अन्यथा सहकारिता का उद्देश्य ही समाप्त हो जाएगा। राष्ट्रपति ने कार्यक्रम में मौजूद जनसमूह, जिसमें अधिकतर महिलाएं शामिल थीं, से शिक्षा के महत्व को समझने, नई तकनीकों को सीखने, दैनिक जीवन में पर्यावरण संरक्षण को महत्व देने, जरूरतमंदों की सहायता करने और देश के विकास में अपना योगदान देने के लिए हमेशा तैयार रहने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा, हमारे व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयास विश्व पटल पर भारत को ऊंचे स्थान पर पहुंचाएंगे। दूसरी ओर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोमवार को महाराष्ट्र के कोल्हापुर शहर में देवी महालक्ष्मी के प्रसिद्ध मंदिर में पूजा-अर्चना की और उसके बाद राज्य की तीन दिवसीय यात्रा पर रवाना हुईं।

देश को सार्वजनिक नीति में वित्तीय बाजारों की भूमिका के दबदबे से बचना चाहिए

मुंबई। (भाषा) मुख्य आर्थिक सलाहकार (सीईए) डॉ. वी. अनंत नागेश्वरन ने सोमवार को कहा कि देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए सार्वजनिक नीति में वित्तीय बाजारों की भूमिका के दबदबे से बचना चाहिए। साथ ही उन्होंने कहा कि भारत की आर्थिक वृद्धि की संभावनाएं सबसे उज्ज्वल वैश्विक संभावनाओं में से एक हैं। नागेश्वरन ने सोमवार को कहा कि भारत का शेयर बाजार पूंजीकरण सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का करीब 140 प्रतिशत है। भारतीय वित्तीय क्षेत्र की रिकॉर्ड लाभप्रदता तथा बाजार पूंजीकरण का उच्चस्तर या सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात में बाजार पूंजीकरण एक अन्य कारक उत्पन्न करता है जिसकी गहन जांच की आवश्यकता है। सीईए ने कहा, जब बाजार अर्थव्यवस्था से बड़ा हो जाता है तो यह स्वाभाविक है, लेकिन जरूरी नहीं कि यह उचित हो कि बाजार के विचार तथा प्राथमिकताएं सार्वजनिक चर्चा पर हावी हो जाएं और नीतिगत चर्चा को भी प्रभावित करें। मैं वित्तीयकरण या नीति तथा व्यापक आर्थिक परिणामों पर वित्तीय बाजार के दबदबे की बात कर रहा हूं। सीआईआई फाइनेंसिंग 3.0 शिखर सम्मेलन में उन्होंने कहा कि वित्तीयकरण का अर्थ वित्तीय बाजार

मुख्य आर्थिक सलाहकार डॉ. वी. अनंत नागेश्वरन ने कहा - देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए एहतियात बरतना चाहिए। साथ ही उन्होंने कहा कि भारत की आर्थिक वृद्धि की संभावनाएं सबसे उज्ज्वल वैश्विक संभावनाओं में से एक है

की अपेक्षाओं के रुझान पर प्रभुत्व है और महत्वपूर्ण रूप से सार्वजनिक नीति तथा व्यापक आर्थिक परिणामों में रुचि रखना है। हालांकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि ए उनके निजी विचार हैं, न कि मुख्य आर्थिक सलाहकार के रूप में दिया गया कोई बयान। उन्होंने कहा कि भारत उम्मीद के साथ 2047 की ओर देख रहा है, लेकिन यह ऐसी चीज है जिससे उसे बचना होगा, क्योंकि इस तरह के वित्तीयकरण के परिणाम विकसित दुनिया में सभी के सामने हैं। नागेश्वरन ने कहा कि नीतिगत स्वायत्तता बनाए रखना और अर्थव्यवस्था को वैश्विक पूंजी प्रवाह की अनिश्चितताओं से बचाना महत्वपूर्ण है। भारत मामूली चालू खाते के घाटे (कैड) के बावजूद वैश्विक पूंजी प्रवाह पर निर्भर है। उन्होंने कहा, भारत की आर्थिक वृद्धि की संभावनाएं विश्व में सबसे उज्ज्वल हैं। इसे बनाए रखना हम पर निर्भर है। साथ ही यह भी हम पर निर्भर है कि हम इसका इस्तेमाल अपने लिए नीतिगत स्थान बनाने के लिए करें। उन्होंने कहा कि संक्षेप में कहूं तो देश को राष्ट्रीय अनिवार्यताओं तथा निवेशकों के हितों या प्राथमिकताओं के बीच एक अच्छा संतुलन बनाना होगा।उन्होंने कहा, बेशक इसका मतलब किसी का एजेंडा लेने के बजाय खुद वैश्विक एजेंडा बनाने वाले से है।

पाक्सो एक्ट के दोषी को उम्रकैद

सोनभद्र। साढ़े छह वर्ष पूर्व 4 वर्षीय नाबालिग लड़की के साथ हुए दुष्कर्म के मामले में अपर सत्र न्यायाधीश/विशेष न्यायाधीश पाक्सो एक्ट सोनभद्र अमित वीर सिंह की अदालत ने सोमवार को सुनवाई करते हुए दोषसिद्ध पाकर दोषी नार सिंह पटेल को उम्रकैद एवं एक लाख 500 रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर तीन माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। वहीं अर्थदंड की धनराशि में से 80 हजार रूपये पीड़िता को मिलेगी। अभियोजन पक्ष के मुताबिक पन्नूगंज थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी पीड़िता के पिता ने पन्नूगंज थाने में दी तहरीर में अवगत कराया था कि उसकी 4 वर्षीय नाबालिग बेटी को 13 मार्च 2018 की शाम 4 बजे जब वह खेल रही थी तभी रास्ते में नार सिंह पटेल पुत्र राजेंद्र पटेल निवासी ऊंची खुर्द थाना पन्नूगंज, उसकी नाबालिग बेटी को अपने घर ले गया और घर पर कोई नहीं था जिसकी वजह से उसकी नाबालिग बेटी के साथ दुष्कर्म किया। जब बेटी रोने लगी तो उसे छोड़ दिया। बेटी घर आकर अपनी मां से घटना की सारी बात बताई। जब शाम को अंधेरा होने पर खेत से काम करके घर आया तो पत्नी ने सारी बात बताई। उसके बाद भतीजे के मोबाइल से 100 नम्बर पुलिस को फोन से सूचना दिया। उसके बाद पुलिस ने बलात्कार और पाक्सो एक्ट में एफआईआर दर्ज कर मामले की विवेचना शुरू कर दिया। दौरान विवेचना विवेचक ने बयान लेने के बाद पर्याप्त सबूत मिलने पर कोर्ट में चार्जशीट दाखिल किया था। मामले की सुनवाई के दौरान अदालत ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं के तर्कों को सुनने, गवाहों के बयान एवं पत्रावली का अवलोकन करने पर दोषसिद्ध पाकर दोषी नार सिंह पटेल को सजा सुनाई। अभियोजन पक्ष की तरफ से सरकारी वकील दिनेश प्रसाद अग्रहरि सत्य प्रकाश त्रिपाठी एवं नीरज कुमार सिंह ने बहस किया।

बैंक कर्जे की वसूली से परेशान होकर दंपती और बेटी ने की आत्महत्या

हापुड़। उत्तर प्रदेश के हापुड़ जिले के थाना कपूरपुर क्षेत्र के गांव सपनावत में निजी बैंक के कर्जे की वसूली से परेशान होकर एक दंपती और उनकी 18 वर्षीय बेटी ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। ग्रामीणों का आरोप है कि कर्ज चुकाने के लिए बैंक के एजेंट लगातार परिवार को प्रताड़ित कर रहे थे।थाना कपूरपुर के प्रभारी अवनीश शर्मा ने बताया कि ऐसी जानकारी मिली है कि दंपती ने बच्चो की पढ़ाई के लिए निजी बैंक से करीब पांच लाख रुपए का कर्ज लिया था। उन्होने कहा कि मामले में पुलिस को अभी तक कोई शिकायत नही मिली है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक ग्रामीणो ने बताया कि गांव सपनावत के संजीव राणा (48) अपनी पत्नी प्रेमवती(45), पुत्री पायल (18), पुत्र रिंकू व पिंटू के साथ रहते थे। कुछ समय पहले बच्चों की शिक्षा के लिए उन्होंने एक निजी बैंक से करीब पांच लाख रुपएं का कर्ज लिया था। उन्होने बताया कि 31 अगस्त की रात बैंक के पांच एजेंट पीड़ति परिवार के घर पहुंचे थे। कर्ज की किस्त जमा करने को लेकर उन्होने पीड़ति परिवार को धमकाया था, जिससे आहत होकर परिवार ने आत्महत्या कर ली।

महाकुंभः ट्रेनों के ऑपरेशन पर हुआ गहन मंथन

महाप्रबंधक उपेंद्र चंद्र जोशी की अगुवाई में हुई बैठक प्रयागराज मण्डल ने कुंभ मेला 2013 और 2019 के अनुभव साझा करने के लिए कार्यशाला का हुआ आयोजन

प्रयागराज। महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे उपेंद्र चंद्र जोशी की अध्यक्षता में प्रयागराज मण्डल कार्यालय के सभागार में कार्यशाला आयोजित की गयी। आगामी कुंभ मेला के सफल आयोजन के लिए कार्यशाला में कुंभ मेला 2013 और 2019 में कार्य करने वाले रेलवे अधिकारियों ने अपने अनुभव साझा किए।

महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे उपेंद्र चंद्र जोशी ने कहा कि कार्यशाला कुंभ 2025 के आयोजन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। कार्यशाला के माध्यम से हम अपने हर क्षेत्र के संबंध में प्राप्त अनुभवों के अनुरूप दोबारा एक बार अपनी

तैयारी का आकलन कर उसको और बेहतर कर सकते हैं। वर्तमान में जो भी आधारभूत संरचना के कार्य चल रहे हैं। वह सारे समय से पूर्ण कर लिए जाएंगे साथ ही ट्रेनों के ऑपरेशन पर बृहद रूप से मंथन किया जा रहा है। आज के विचारों का भी इसमें सहयोग लिया जाएगा। महाप्रबंधक उत्तर पश्चिम रेलवे अमिताभ ने कुंभ 2019 के अपने अनुभवों को साझा किया और यह बताया कि क्या करें और क्या ना करें। उन्होंने यह भी बताया कि बाहर से आने वाले कर्मियों के लिए समुचित व्यवस्था की जाए। अपर मण्डल रेल प्रबंधक सामान्य प्रयागराज संजय सिंह ने कार्यशाला को संबोधित करते हुये कहा प्रयागराज मण्डल ने गत अनुभवों से सीखते हुये कुंभ मेला 2025 के लिए प्लान तैयार किया है। जिसमें आप सभी के अनुभवों को सम्मलित कर फाइनल किया जाएगा। प्लान को तैयार करने के लिए सिविल प्रशासन के साथ कई दौर की बैठकें की जा चुकी है। मेला में आवागमन को निर्बाध रूप से चलाने के लिए शहर में 21 नए आरओबी आरयूबी का निर्माण किया जा चुका है। कार्यशाला में सभी अधिकारियों ने भीड़ प्रबंधन सुरक्षा इंतजाम टिकट वितरण एवं भीड़ के निर्बाध फ्लो पर अपने अपने अनुभव साझा किए। मेला के दौरान कितनी गाड़ियों समयबद्ध योजना के अनुसार और भीड़ के लिए कितनी गाड़ियों का इंतजाम होना चाहिए प्लेटफार्म पर पहुँचते समय गाड़ी के दरवाजे खुले होने चाहिए आपात स्थिति में चिकत्सा व्यवस्था कैसे की जाएगी। कर्मचारियों के लिए रुकने और खाने पीने की व्यवस्था कैसी होगी जैसे कई बिदुओं पर अधिकारियों ने अपने विचार और सुझाव रखे। कार्यशाला में महाप्रबंधक उत्तर पश्चिम रेलवे अमिताभ मण्डल रेल प्रबंधक प्रयागराज हिमांशु बडोनी अपर मण्डल रेल प्रबंधक सामान्य प्रयागराज संजय सिंह सीनियर प्रोफेसर आईआर आईटीएम लखनऊ काजी मेराज अहमद प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त पूर्व मध्य रेलवे अमरेश कुमार एवं डीन आईआर आईएमईई अनिल कुमार द्विवेदी वरिष्ठ मण्डल सुरक्षा आयुक्त फ़िरोज़पुर ऋषि पांडे अपर महाप्रबंधक डीएफसी सीआईएल मन्नू प्रकाश अजीत कुमार सिंह कार्यकारी निदेशक आरडीएसओ विजय कुमार सीसीएम पीएम पूर्वोत्तर रेलवे ए एन झा डीआईजी आर पी एफ ट्रेनिंग सेंटर लखनऊ मुख्य इंजीनियर के सचिव आईपीएस यादव एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। यह जानकारी अमित कुमार सिंह जनसंपर्क अधिकारी प्रयागराज मंडल उत्तर मध्य रेलवे ने दी।

प्रो. आशीष खरे को मिला इविवि के कुलसचिव का प्रभार

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्युनिकेशन विभाग के प्रोफेसर डा आशीष खरे को इलाहाबाद विश्वविद्यालय का प्रभारी कुलसचिव नियुक्त किया गया है। इविवि की जनसंपर्क अधिकारी प्रो जया कपूर ने बताया कि कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव के अनुमोदन पर प्रो आशीष खरे को कुलसचिव का प्रभार का आदेश जारी किया गया है। प्रो आशीष खरे वर्तमान में विश्वविद्यालय आईसीटी सेल के प्रभारी की जिम्मेदारी भी संभाल रहे हैं। प्रो आशीष खरे ने अब तक कुलसचिव रहे प्रो एन के शुक्ल से कार्यभार आज ग्रहण कर लिया। प्रो एन के शुक्ल ने बतौर कुलसचिव इविवि में छह वर्षों तक अपनी सेवाएं दी।

पेज 1 का शेष

बुलडोजर न्याय..

जिसमें कहा गया है कि अचल संपत्तियों को केवल कानून द्वारा निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार ही ध्वस्त किया जा सकता है। पीठ ने कहा, हम अखिल भारतीय आधार पर कुछ दिशा-निर्देश तय करने का प्रस्ताव करते हैं, ताकि उठाए गए मुद्दों के संबंध में चिंताओं का ध्यान रखा जा सके। पीठ ने पक्षों के वकीलों से अपने सुझाव देने को कहा ताकि अदालत उचित दिशा-निर्देश तैयार कर सके जो अखिल भारतीय आधार पर लागू होंगे। पीठ ने सभी पक्षों से अपने सुझावों की प्रति मध्य प्रदेश के वकील को देने को कहा और कहा कि राज्य के वकील उन्हें एकत्रित करेंगे। पीठ ने मामले की अगली सुनवाई 17 सितंबर को करना तय किया। जब अदालत के समक्ष कुछ व्यक्तिगत मामलों का उल्लेख किया गया, तो पीठ ने कहा, हम इस मुद्दे को अखिल भारतीय स्तर पर हल करने का प्रयास करेंगे। वकीलों के बीच तीखी नोकझोंक के बाद पीठ ने कहा, अदालत को युद्ध के मैदान में न बदला जाए। शीर्ष अदालत जमीयत उलेमा-ए-हिंद और अन्य द्वारा दायर याचिकाओंपर सुनवाई कर रही थी, जिसमें विभिन्न राज्य सरकारों को यह सुनिश्चित करने के निर्देश देने का अनुरोध किया गया था कि दंगों और हिंसा के मामलों में आरोपियों की संपत्तियों को भविष्य में नहीं तोड़ा जाए। जमीयत उलेमा-ए-हिंद ने इससे पहले राष्ट्रीय राजधानी के जहांगीरपुरी इलाके में कुछ इमारतों को गिराए जाने को लेकर शीर्ष अदालत में एक याचिका दायर की थी। मुस्लिम निकाय ने पहले शीर्ष अदालत में एक याचिका दायर की थी, जिसमें उत्तर प्रदेश सरकार को यह सुनिश्चित करने का निर्देश देने का अनुरोध किया गया था कि राज्य में हिंसा के आरोपियों की संपत्तियों को भविष्य में नहीं तोड़ा जाए। इसने यह भी कहा था कि बिना उचित प्रक्रिया का पालन किए और बिना पूर्व सूचना के कोई भी तोड़फोड़ नहीं की जानी चाहिए।

भू स्खलन...

उनके दादा एल प्रसाद ने कहा कि वे मंदिर तक ट्रेकिंग से ब्रेक ले रहे थे, जब पुलिस ने बंदर के डर के कारण ट्रैक को साफ करना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा, अचानक भूस्खलन हुआ और मलबा टिन शेड पर गिरा जिससे शेड ढह गया। 2022 में नए साल के दिन, मंदिर में भगदड़ में 12 तीर्थयात्रियों की मौत हो गई और 16 घायल हो गए।

किसानों..

आनुवंशिक सुधार, दलहन एवं तिलहन फसल सुधार, वाणिज्यिक फसलों में सुधार और कीटों, सूक्ष्म जीवों एवं परागण तत्वों से जुड़े शोध से संबंधित हैं। वैष्णव ने कहा कि मंत्रिमंडल ने कृषि शिक्षा, प्रबंधन और सामाजिक विज्ञान को मजबूत करने के लिए 2,291 करोड़ रुपए के परिव्यय को मंजूरी दी। यह कार्यक्रम भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के मातहत संचालित किया जाएगा। इसका उद्देश्य नई शिक्षा नीति, 2020 के अनुरूप कृषि शोध एवं शिक्षा को आधुनिक बनाना है। डिजिटल बुनियादी अवसंरचना, एआई, बिग डेटा, रिमोट जैसी नवीनतम प्रौद्योगिकियों के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया जाएगा और कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती और जलवायु से संबंधित जुझारू क्षमता शामिल हैं। मंत्रिमंडल ने 2,817 करोड़ रुपए के कुल निवेश के साथ डिजिटल कृषि मिशन को भी मंजूरी दी। इस परियोजना के आधार स्तंभ कृषि ढांचा और कृषि निर्णय सहायता प्रणाली हैं। मंत्री ने कहा कि पशुधन के सतत स्वास्थ्य और उनके उत्पादन के लिए 1,702 करोड़ रुपए की योजना को भी मंजूरी दी गई है। इस योजना के अंतर्गत पशु स्वास्थ्य प्रबंधन एवं पशु चिकित्सा शिक्षा, डेयरी उत्पादन एवं प्रौद्योगिकी विकास, पशु आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन, उत्पादन एवं सुधार तथा पशु पोषण एवं छोटे मवेशियों के विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। कैबिनेट द्वारा स्वीकृत एक अन्य प्रमुख योजना- बागवानी के लिए सतत विकास से संबंधित है। कुल 860 करोड़ रुपए के परिव्यय के साथ इस उपाय का उद्देश्य बागवानी पौधों से किसानों की आय बढ़ाना है। इस कार्यक्रम में उष्णकटिबंधीय, उपोष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण बागवानी फसले, जड़, कंद और शुष्क फसलें, सब्जी, फूलों की खेती और मशरूम की फसलें, और वृक्षारोपण, मसाले, औषधीय और सुगंधित पौधे शामिल हैं। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) को मजबूत करने के लिए 1202 करोड़ रुपए की योजना और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के लिए 1,115 करोड़ रुपए की योजना को भी मंजूरी दी। देश भर में 700 से अधिक केवीके हैं।

जाति जनगणना...

और राजनीति के आधार पर। राहुल गांधी राष्ट्रव्यापी सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना के कट्टर समर्थक रहे हैं, जो लोकसभा चुनाव के लिए पार्टी के घोषणापत्र का भी हिस्सा था। बिहार में सत्तारूढ़ पार्टी नीतीश कुमार की जनता दल (यूनाइटेड) द्वारा राज्यव्यापी जाति सर्वेक्षण के नतीजे प्रकाशित करने के बाद राष्ट्रीय जाति जनगणना की मांग तेज हो गई। पिछले अक्टूबर में जारी इस रिपोर्ट से पता चला कि राज्य की 80 प्रतिशत से अधिक आबादी अत्यंत पिछड़े वर्ग की है। आरएसएस ने इस मुद्दे पर अपना रुख स्पष्ट करते हुए कहा था कि वह सरकार द्वारा राष्ट्रव्यापी गणना का विरोध नहीं करता है। अंबेकर ने कहा था, हाल ही में, जाति जनगणना को लेकर फिर से चर्चा शुरू हुई है। हमारा मानना है कि इसका इस्तेमाल समाज की सर्वांगीण प्रगति के लिए किया जाना चाहिए और ऐसा करते समय सभी पक्षों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सामाजिक सद्भाव और अखंडता खराब न हो। आरएसएस का स्पष्टीकरण तब आया जब आरएसएस के एक पदाधिकारी श्रीधर गाडगे ने जाति जनगणना को एक 'निरर्थक अभ्यास' कहकर विवाद खड़ा कर दिया, जो केवल कुछ व्यक्तियों की सेवा करेगा। गाडगे ने कहा था, 'जाति जनगणना जाति-वार आबादी की मात्रा निर्धारित करेगी। लेकिन यह समाज या राष्ट्र के हित में नहीं होगा।' इस बीच, सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को पिछड़े और अन्य वंचित वर्गों के कल्याण के लिए सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना कराने के लिए केंद्र को निर्देश देने की मांग वाली याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया और कहा कि यह मुद्दा शासन के क्षेत्र में आता है। न्यायमूर्ति हृषिकेश रॉय और न्यायमूर्ति एसवीएन भट्टी की पीठ ने याचिकाकर्ता पी प्रसाद नायडू को अपनी याचिका वापस लेने की अनुमति दे दी, जिसमें उन्होंने जनगणना के लिए डेटा की गणना में तेजी लाने का निर्देश देने की मांग की थी। पीठ ने याचिकाकर्ता की ओर से पेश वरिष्ठ वकील रविशंकर जंडियाला और वकील श्रवण कुमार करणम से कहा, इस बारे में क्या किया जा सकता है? यह मुद्दा शासन के क्षेत्र में है। यह एक नीतिगत मामला है। जंडयाला ने कहा कि कई देशों ने ऐसा किया है लेकिन भारत ने अभी तक ऐसा नहीं किया है। उन्होंने तर्क दिया, 1992 के इंद्रा साहनी फैसले (मंडल आयोग के फैसले) में कहा गया है कि यह जनगणना समय-समय पर की जानी चाहिए। पीठ ने उनसे कहा कि वह याचिका खारिज कर रही है क्योंकि अदालत इस मुद्दे में हस्तक्षेप नहीं कर सकती। अदालत के मूड को भांपते हुए वकील ने याचिका वापस लेने की अनुमति मांगी, जिसे पीठ ने अनुमति दे दी।

छह घंटे...

आरोप लगाते हुए कहा कि उन्हें 14 समन जारी किए गए और वह उच्चतम न्यायालय के निर्देश के बाद केवल एक बार पेश हुए। विधायक खान के खिलाफ धन शोधन का मामला दो प्राथमिकियों पर आधारित है, जिनमें से एक मामला सीबीआई द्वारा वक्फ बोर्ड में कथित अनियमितताओं से संबंधित है और दूसरा दिल्ली एसीबी द्वारा आय से अधिक संपत्ति रखने के मामले से संबंधित है।

कनाडा में रैपर एपी ढिल्लों के घर के बाहर गोलीबारी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

कनाडा के वैंकूवर में पंजाबी गायक और रैपर एपी ढिल्लों के घर के बाहर गोलीबारी की घटना हुई, खबरों के मुताबिक लॉरेंस बिश्नोई-रोहित गोदारा गिरोह ने गोलीबारी की जिम्मेदारी ली है। हालांकि, रविवार रात विक्टोरिया द्वीप इलाके में गायक के घर के पास हुई इस घटना की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। विशेष रूप से, यह हमला ढिल्लों द्वारा एक संगीत वीडियो 'ओल्ड मनी' जारी करने के कुछ सप्ताह बाद हुआ। इस वीडियो में सलमान खान भी हैं। सोशल मीडिया पर प्रसारित धमकी भरे संदेश में दावा किया गया कि 1 सितंबर की रात को, गिरोह ने कनाडा में दो स्थानों पर गोलीबारी की - एक विक्टोरिया द्वीप पर और दूसरा वुडब्रिज, टोरंटो में। गिरोह ने बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान के साथ उनके कथित संबंधों का हवाला देते हुए ढिल्लों को भी धमकी दी है।

जो राजनीतिक दल लोकतांत्रिक मूल्यों को नहीं जीता, उसमें आंतरिक लोकतंत्र नहीं पनपता है: मोदी

● प्रधानमंत्री ने शुरू किया भाजपा का सदस्यता अभियान

भाषा। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए सोमवार को कहा कि जो पार्टियां लोकतांत्रिक मूल्यों को नहीं जीती हैं, उनमें आंतरिक लोकतंत्र नहीं पनपता है और उनकी क्या स्थिति होती है, यह देश के कई दलों में देखा जा सकता है।उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ही एकमात्र दल है जो अपनी पार्टी के संविधान के अनुसार अक्षरश: लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का पालन करते हुए अपने कार्य का विस्तार कर रहा है।भाजपा के सदस्यता अभियान की शुरुआत करते हुए उन्होंने कहा, यह सदस्यता अभियान सिर्फ एक अनुष्ठान नहीं है। यह हमारे परिवार का विस्तार है ... यह संख्या का खेल नहीं है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कितनी संख्या हासिल करते हैं। यह सदस्यता अभियान एक वैचारिक और भावनात्मक आंदोलन है। प्रधानमंत्री ने भारतीय जनसंघ के जमाने से भाजपा की यात्रा को याद करते हुए कहा कि इस राजनीतिक दल ने देश में एक नई राजनीतिक संस्कृति लाने का भरसक प्रयास किया है।उन्होंने कहा, जिस राजनीतिक दल को देश की जनता सत्ता सुपुर्द करती है, वह अगर लोकतांत्रिक मूल्यों को नहीं जीता है तो उसमें आंतरिक लोकतंत्र निरंतर नहीं पनपता है। तो वैसी स्थिति बनती है जो आज हम देश के कई दलों में देख रहे हैं। उन्होंने कहा, भाजपा एकमात्र दल है जो अपनी पार्टी के संविधान के अनुसार अक्षरश: लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का पालन करते हुए अपने कार्य का विस्तार कर रहा है और जन–सामान्य की आशा, आकांक्षाओं पर खरा उतरने के लिए अपने आप को निरंतर योग्य बनाते रहता है। मोदी ने कहा कि जनसंघ के जमाने में बड़े उत्साह के साथ कार्यकर्ता दीवारों पर दीपक (भारतीय जनसंघ का चुनाव चिह्न) पेंट करते थे तो कई राजनीतिक दल के नेता यह कहकर उनका मजाक उड़ाते थे कि दीवारों पर दीपक पेंट करने से सत्ता के गलियारों तक नहीं पहुंचा जा सकता है।

सीसीईए ने मुंबई-इंदौर रेल लाइन को दी मंजूरी

● 18,036 करोड़ रुपए खर्च होंगे

भाषा। नई दिल्ली

आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने दो प्रमुख वाणिज्यिक केंद्रों मुंबई तथा इंदौर के बीच सबसे छोटी रेल संपर्क सुविधा प्रदान करने वाली 309 किलोमीटर की नई लाइन परियोजना को सोमवार को मंजूरी दे दी। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने यह जानकारी देते हुए कहा कि परियोजना की कुल लागत 18,036 करोड़ रुपए आंकी गई है। यह 2028–29 तक पूरी होगी। इस परियोजना के निर्माण के दौरान करीब 102 कार्यदिवस का प्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न होगा। इन दिनों को वैष्णव ने मानव दिवस करार दिया। आधिकारिक बयान में बाद में कहा गया, यह परियोजना मल्टी–मॉडल कनेक्टिविटी के लिए पीएम–गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान का परिणाम है जो एकीकृत योजना के जरिए संभव हो पाया है। यह लोगों, वस्तुओं तथा सेवाओं की आवाजाही के लिए निर्बाध संपर्क प्रदान करेगी। इस परियोजना के तहत महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश के छह जिले आएंगे। इससे भारतीय रेलवे के मौजूदा नेटवर्क में करीब 309 किलोमीटर की वृद्धि होगी। यह देश के पश्चिमीादक्षिण-पश्चिमी हिस्सों और मध्य भारत के बीच एक छोटा मार्ग प्रदान करके क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देगी। इससे श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर सहित उज्जैन-इंदौर क्षेत्र के विभिन्न पर्यटनाधार्मिक स्थलों पर पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी। यह परियोजना जेएनपीए के प्रवेश द्वार बंदरगाह और अन्य राज्य बंदरगाहों से पीथमपुर वाहन केंद्र (जिसमें 90 बड़ी इकाइयां और 700 लघु तथा मझोले उद्योग हैं) को सीधी संपर्क सुविधा प्रदान करेगी।

गोल्डएज एस्टेट एंड इन्वेस्टमेंट लिमिटेड
CIN: L70101DL1992PLC047541
मुख्य कार्यालयः सी–115 मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली–110015,
फोनः 011–25193268, ईमेलः goldedgeestate2016@gmail.com, वेबः www.goldedgeesiate.in

सूचना

1. इसके द्वारा सूचित किया जाता है कि कंपनी के सदस्यों की 32वीं वार्षिक आम बैठक ('एजीएम') सोमवार, 30 सितंबर, 2024 को अपराह्न 3:30 बजे (आईएसटी) वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग ("वीसी") या अन्य ऑडियो विजुअल माध्यमों ("ओएवीएम") के माध्यम से कंपनी अधिनियम, 2013, ("अधिनियम") और कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय, भारत सरकार ("एमसीए") के प्रावधानों के अनुपालन में आयोजित की जानी है, इसके सामान्य परिपत्र सं. 14/2020 दिनांक 8 अप्रैल, 2020, 17/2020 दिनांक 13 अप्रैल, 2020, 20/2020 दिनांक 5 मई, 2020, 22/2020 दिनांक 15 जून, 2020, 33/2020 दिनांक 28 सितंबर, 2020, 39/2020 दिनांक 31 दिसंबर, 2020, 10/2021 दिनांक 23 जून 2021, 20/2021 दिनांक 8 दिसंबर 2021, 2/2022 दिनांक 5 मई 2022, 10/2022 दिनांक 28 दिसंबर 2022, 09/2023 दिनांक 25 सितंबर 2023 (इसके बाद, सामूहिक रूप से "एमसीए परिपत्र" के रूप में संदर्भित) सेबी पूर्व परिपत्र सं. SEBI/HO/CFD/CFD-PoD-2/P/CIR/2023/167 दिनांक 07 अक्टूबर 2023, SEBI/HO/CFD/PoD2/CIR/P/2023/120 दिनांक 11 जुलाई 2023 के साथ पठित, सेबी द्वारा जारी पूर्व के परिपत्रों के स्थान पर जारी किया गया है, जिसका नं. SEBI/HO/CFD/CMD1/CIR/P/2020/79, SEBI/HO/CFD/CMD2/CIR/P/2021/11; SEBI/HO/CFD/C MD2/CIR/P/2022/62; और SEBI/HO/CFD/PoD-2/P/CIR/2023/4 दिनांक 12 मई 2020, 15 जनवरी 2021, 13 मई 2022 और 05 जनवरी 2023, क्रमशः (इसके बाद, सामूहिक रूप से "सेबी परिपत्र" के रूप में संदर्भित और एमसीए परिपत्रों के साथ "परिपत्र" के रूप में संदर्भित) बैठक की सूचना में निर्धारित व्यवसायों को करने हेतु।
2. उक्त परिपत्रों के अनुपालन में, वित्तीय वर्ष 2023–24 की वार्षिक रिपोर्ट के साथ वार्षिक आम बैठक की सूचना सभी सदस्यों को कंपनी/डिपॉजिटरी प्रतिभागियों के पास पंजीकृत उनके ईमेल पते पर भेजी जाएगी।
3. हम सदस्यों से अनुरोध करते हैं कि वे अपना पंजीकरण कराएं (जिन्होंने अभी तक पंजीकरण नहीं कराया है) या अपने ईमेल पते या अन्य अधिदेशों को निम्नलिखित तरीके से अपडेट करें (किसी भी परिवर्तन की स्थिति में):
   i. डीमैट रूप में इक्विटी शेयर रखने वाले शेयरधारकों से अनुरोध है कि वे अपने डिपॉजिटरी प्रतिभागियों के माध्यम से अपने संबंधित डिपॉजिटरी में अपना ईमेल पता, मोबाइल नंबर या अन्य अधिदेश पंजीकृत/अपडेट करें।
   भौतिक रूप में इक्विटी शेयर रखने वाले शेयरधारकों से अनुरोध है कि वे कंपनी के रजिस्ट्रार को अपना ईमेल पता, मोबाइल नंबर या अन्य अधिदेश उपलब्ध कराएं।
   ii. शेयर ट्रांसफर एजेंट यानी स्काईलाइन फाइनेंशियल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, डी–153ए, प्रथम तल, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज–1, नई दिल्ली –110020, ई–मेल info@skylinerta.com, फोन नं. 011–26812682
4. 32वीं एजीएम की सूचना और वित्त वर्ष 2023–24 के लिए वार्षिक रिपोर्ट भी कंपनी की वेबसाइट www.goldedgeestate.in और स्टॉक एक्सचेंज अर्थात एमएसईआई की वेबसाइट www.msei.in पर उपलब्ध कराई जाएगी।
5. कंपनी अपने सभी सदस्यों को 32वीं वार्षिक आम बैठक की सूचना में निर्धारित सभी प्रस्तावों पर अपना वोट डालने के लिए ई–वोटिंग सुविधा ('रिमोट ई–वोटिंग') प्रदान कर रही है। इसके अतिरिक्त, कंपनी वार्षिक आम बैठक के दौरान ई–वोटिंग प्रणाली के माध्यम से मतदान की सुविधा ('ई–वोटिंग') प्रदान कर रही है। वार्षिक आम बैठक में शामिल होने और रिमोट ई–वोटिंग/ई–वोटिंग की विस्तृत प्रक्रिया 32वीं वार्षिक आम बैठक की सूचना में दी गई है। अधिनियम की धारा 103 के अंतर्गत गणपूर्ति के लिए वी.सी./ओ.ए.वी.एम. के माध्यम से वार्षिक आम बैठक में भाग लेने वाले सदस्यों की गणना की जाएगी।

कृते गोल्डएज एस्टेट एंड इन्वेस्टमेंट लिमिटेड
हस्ता/–
जगदीश चंद अग्रवाल
(अध्यक्ष)
डीआईएनः 01898337

स्थानः नई दिल्ली
दिनांकः 02.09.2024

भारतीय नौसेना का पी8आई विमान पहली बार यूरोप में तैनात

नई दिल्ली। एक अधिकारी ने बताया कि भारतीय नौसेना का पी8आई विमान फ्रांसीसी नौसेना के साथ वरुण अभ्यास में भाग लेने के लिए फ्रांस पहुंच गया है। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। भारतीय नौसेना के एक प्रवक्ता ने एक बयान में कहा कि वर्ष 2024 मे भूमध्य सागर मे दो से चार सितंबर तक होने वाले भारत-फ्रांस द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास वरुण में दोनो नौसेनाओं के बीच गहन तालमेल और अंतर-संचालन को रेखांकित करते हुए उन्नत सामरिक अभ्यास शामिल होंगे।इसमे कहा गया कि भारतीय नौसेना का पी8आई विमान फ्रांस के एयर बेस 125 इस्ट्रेस-ले ट्यूब पर उतरा, जो यूरोप में इसकी पहली तैनाती थी।प्रवक्ता ने बताया कि यह तैनाती भारतीय नौसेना के एलीज विमान द्वारा हायरेस हवाई अड्डे पर पिछली उड़ान भरने के 63 वर्ष बाद की गई है, जो पूर्ववर्ती आईएनएस विक्रांत से संचालित होता था।आईएनएस तबर पहले ही टूलॉन पहुंच चुका है और वह भी इस अभ्यास मे भाग लेगा।

त्योहारों का उत्सव व वर्चुअल मेले की होगी शुरुआत

कानपुर। भारत का सबसे तेजी से विकसित होने वाला हाइपर.वैल्यू प्लेटफॉर्म यानि शॉप्सी बाय फ्लिपकार्टए अपनी अब तक की सबसे प्रतीक्षित सेलरू ग्रैंड शॉप्सी मेला के लॉन्च के साथ त्योहारों सीजन के लिए तैयारी कर रहा है। 1 सितंबर से 8 सितंबर तक चलने वाली यह सेलए शॉप्सी के प्लेटफॉर्म को एक अद्भुत वर्चुअल मेले में बदल देगीए जो खरीदारी का एक अद्वितीयअनुभव प्रदान करते हुए पारंपरिक भारतीय मेलों का सार भी प्रदान करेगा। वर्ष की अपनी सबसे बड़ी सेल पर टिप्पणी करते हुएए शॉप्सी के बिजनेस हेडए प्रत्युषा अग्रवाल ने कहाए श्ग्रैंड शॉप्सी मेला एक वन स्टॉप मेले के रूप में पहले से कहीं अधिक बड़ा और बेहतर हैए जो भारत के ई.शॉपर्स को सभी श्रेणियों में उन वैल्यू.पैक उत्पादों की पेशकश करता है जिनकी उन्हें इस त्योहारों के सीज़न में आवश्यकता है।

बाड़मेर में वायुसेना का लड़ाकू विमान दुर्घटनाग्रस्त, पायलट सुरक्षित : पुलिस

जयपुर। राजस्थान के बाड़मेर जिले मे सोमवार रात भारतीय वायुसेना का एक लड़ाकू विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस अधीक्षक नरेन्द्र मीणा ने बताया कि प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, पायलट सुरक्षित है। वायुसेना ने बताया कि बाड़मेर मे नियमित रात्रि प्रशिक्षण मिशन के दौरान मिग-29 जेट विमान मे गंभीर तकनीकी खराबी आ गई थी। पुलिस अधीक्षक ने पीटीआई-भाषा को बताया, "विमान आज रात बाड़मेर मे दुर्घटनाग्रस्त हो गया। यह घटना आबादी वाले इलाके से दूर हुई। उन्होने बताया कि अभी तक किसी के हताहत होने की सूचना नही है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि दुर्गम इलाका होने के कारण दमकल की गाड़ियां दुर्घटनास्थल तक नही पहुंच पाई है। वायुसेना ने दुर्घटना की जांच के आदेश दिए है।

गहलोत ने बुलडोजर कल्चर पर शीर्ष अदालत की टिप्पणी का स्वागत किया

जयपुर। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बुल्डोजर कल्चर पर उच्चतम न्यायालय की टिप्पणी का सोमवार को स्वागत किया।गहलोत ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर जारी पोस्ट मे कहा, देश मे पिछले कुछ सालो से शुरू हुए बुल्डोजर कल्चर पर उच्चतम न्यायालय की टिप्पणी स्वागतयोग्य है। किसी भी आरोपी के घर पर बुलडोजर चला देना न्याय नही है। उन्होंने लिखा, मैंने दो वर्ष पहले भी इस कल्चर के खिलाफ सार्वजनिक तौर पर कमोबेश ऐसे ही विचार रखे थे जैसी आज उच्चतम न्यायालय ने टिप्पणी की है। गहलोत के अनुसार, त्वरित न्याय जैसे सिद्धांत एक सभ्य और कानून का पालन करने वाले समाज मे स्वीकार्य नही है एवं संविधान की मूल भावना के पूरी तरह विपरीत है।

वैकल्पिक ईंधन वाले वाहन पर जीएसटी घटाकर 12 प्रतिशत करने पर हो विचार: गडकरी

भाषा। नई दिल्ली

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने सोमवार को कहा कि राज्य के वित्त मंत्रियों को फ्लेक्स–फ्यूल वाहनों पर माल एवं सेवा कर (जीएसटी) को घटाकर 12 प्रतिशत करने पर विचार करना चाहिए। फ्लेक्स फ्यूल वाले वाहन से आशय ऐसी गाड़ियों से हैं जो एक से अधिक ईंधन पर चलती हैं। सामान्य तौर पर ए वाहन पेट्रोल के अलावा एथनॉल या मेथनॉल मिश्रित पेट्रोल पर भी चलते हैं। गडकरी ने आईएफजीई के इंडिया बायो–एनर्जी एंड टेक एक्सपो को संबोधित करते हुए यह भी कहा कि कच्चे तेल के आयात को कम करने और जैव ईंधन के उपयोग को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, हमें विभिन्न राज्यों के वित्त मंत्रियों से समर्थन की जरूरत है। केंद्रीय वित्त मंत्री ने मुझे आश्वस्त किया है कि वह इस बारे में सभी राज्यों के वित्त मंत्रियों से बातचीत करेंगी। गडकरी ने कहा, मैंने महाराष्ट्र के वित्त मंत्री से बैठक में भाग लेने और फ्लेक्स–फ्यूल इंजन कारों पर जीएसटी में कटौती का प्रस्ताव रखने को कहा है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि उन्होंने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से फ्लेक्स–फ्यूल वाहनों पर कर कम करने पर विचार करने का अनुरोध किया था। महाराष्ट्र के वित्त मंत्री अजित पवार के साथ एक अलग बैठक में, गडकरी ने उन्हें इस मुद्दे पर केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के साथ जीएसटी बैठक में भाग लेने का सुझाव दिया। वर्तमान में, हाइब्रिड सहित पेट्रोल इंजन वाले वाहनों पर 28 प्रतिशत और इलेक्ट्रिक वाहनों पर पांच प्रतिशत जीएसटी लगाया जाता है।

हम तुम्हे मस्जिदों में घुस कर मारेंगे : भाजपा विधायक नितेश राणे ने मुस्लिमों से कहा

भाषा। मुंबई

महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले की पुलिस ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) विधायक नितेश राणे के खिलाफ भड़काऊ भाषण देने के आरोप में प्राथमिकी दर्ज की है। राणे ने कथित तौर पर मुसलमानों को धमकी दी थी। राणे ने कथित भड़काऊ बयान महंत रामगिरी महाराज के समर्थन में श्रीरामपुर और तोपखाना क्षेत्रों में आयोजित दो जनसभाओं को संबोधित करते हुए दिया। रामगिरी महाराज पिछले महीने इस्लाम और पैगंबर मोहम्मद के बारे में कथित अपमानजनक टिप्पणी की वजह से चर्चा में आए थे। अगर महाराज को नुकसान पहुंचाया गया, तो इसके परिणाम भुगतने होंगे। हाल ही में सोशल मीडिया पर राणे का एक वीडियो वायरल हुआ है। इसमें भाजपा विधायक यह कहते हुए सुनाई दे रहे हैं, अगर कोई रामगिरी महाराज के खिलाफ कुछ भी बोलेगा, तो हम तुम्हारी मस्जिदों में घुसकर एक–एक को मारेंगे। यह बात ध्यान में रखना। पीटीआई–भाषा वीडियो की सत्यता की पुष्टि नहीं करता है। एक पुलिस अधिकारी ने सोमवार को बताया कि श्रीरामपुर और तोपखाना पुलिस थानों में राणे के खिलाफ दो प्राथमिकी दर्ज की गई।ऑल इंडिया मजलिस–ए–इत्तेहादुल मुस्लिममीन के प्रवक्ता वारिस पठान ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर उक्त वीडियो साझा करते हुए महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से राणे को गिरफ्तार करने का अनुरोध किया।

जसदीप सिंह गिल होंगे राधास्वामी सत्संग ब्यास के अगले प्रमुख

अमृतसर। जसदीप सिंह गिल को सोमवार को तत्काल प्रभाव से डेरा राधास्वामी सत्संग ब्यास (आरएसएसबी) का आध्यात्मिक प्रमुख नामित किया गया। डेरा प्रमुख गुरिंदर सिंह ढिल्लों ने इस आशय की घोषणा की। देश–विदेश में बड़ी संख्या में डेरा राधास्वामी के अनुयाई हैं। समय–समय पर देश के शीर्ष राजनेता भी डेरा ब्यास जाते रहते हैं। इसकी पुष्टि करते हुए डेरा के एक शीर्ष अधिकारी ने बताया, कुछ समय से शहर से बाहर रहे बाबाजी कल डेरा ब्यास लौटे। आज सुबह उन्होंने डेरा सचिव एवं क्षेत्रीय प्रमुखों समेत सभी वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक बुलाई जहां उनके उत्तराधिकारी के नाम की घोषणा की गई। ढिल्लों के स्वास्थ्य के संबंध खबरों पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि वह बिल्कुल ठीक हैं। गिल (45) ने कैमब्रिज से रासायनिक अभियांत्रिकी में डॉक्टरेट कर रखी है। वह दिल्ली के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के छात्र रह चुके हैं। वह सिपला (इंडिया) में मुख्य रणनीति अधिकारी एवं वरिष्ठ प्रबंधन कार्मिक भी रहे हैं।

कोलकाता पुलिस आयुक्त के इस्तीफे की मांग को लेकर जूनियर डॉक्टरों का प्रदर्शन

भाषा। कोलकाता

कोलकाता के विभिन्न मेडिकल कॉलेजों के जूनियर डॉक्टरों ने यहां पुलिस आयुक्त विनीत गोयल के इस्तीफे की मांग को लेकर सोमवार को पुलिस मुख्यालय लालबाजार तक एक रैली निकाली।जूनियर डॉक्टरों ने 14 अगस्त को आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में हुई तोड़फोड़ को रोकने में पुलिस पर निष्क्रियता के आरोप लगाए हैं।आंदोलनकारी डॉक्टरों को लालबाजार की ओर जाने वाले बी.बी. गांगुली मार्ग पर लगाए गए अवरोधकों से पहले ही रोक दिया गया। इन डॉक्टरों ने कहा कि उनकी यह रैली शांतिपूर्ण थी और उनके प्रतिनिधि पुलिस आयुक्त से मिलना चाहते थे। उन्होंने मांग की कि रैली को पुलिस मुख्यालय की ओर आगे बढ़ने दिया जाए। उन्होंने कहा कि उन्हें लालबाजार से काफी पहले ही रोक दिया गया। रोके जाने के बाद आंदोलनकारी डॉक्टर वहीं सड़क पर बैठ गए एवं नारे लगाने लगे। प्रदर्शनकारियों ने रीढ़ की हड्डी की प्रतिकृति और लाल गुलाब ले रखे थे। उनका कहना था कि ए पुलिस के नागरिकों की सुरक्षा के कर्तव्य पर जोर देने के लिए हैं। उनके हाथों में राष्ट्रध्वज एवं नारे लिखे तख्तियां भी थीं। इन तख्तियों पर डॉक्टरों समेत सभी के लिए इंसाफ एवं सुरक्षा की मांग की गई थी। कुछ तख्तियों पर गोयल की तस्वीर थी जिसके नीचे उनके इस्तीफे की मांग संबंधी नारे लिखे गए थे।

ICICI Bank शाखा कार्यालय : आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, प्रथम तल, पश्चिम विंग, डीएसएमजी, मैशी सेंटर, होसुर मेन रोड, बोम्मनहल्ली, बैंगलोर–560068

सार्वजनिक सूचना – प्रत्याभूत आस्ति की बिक्री हेतु निविदा–सह–ई–नीलामी
[नियम 8 (6) का प्रावधान देखें]
अचल संपत्तियों की बिक्री हेतु सूचना

अचल संपत्तियों के विक्रय हेतु ई–नीलामी विक्रय की सूचना वित्तीय आस्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुन: निर्माण तथा प्रतिभूति हित अधिनियम, 2002 के अन्तर्गत सहपठित प्रतिभूति ब्याज (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 की धारा 8(6) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए जारी की गई है।
सर्वजन तथा व्यक्तिगत रूप से कर्ज़दार(रों) एवं ज़मानतदार(रों) को इस सूचना द्वारा सूचित किया जाता है कि नीचे दर्शाई गई अचल संपत्ति संरक्षित ऋणदाता केपास बंधक/ अधिभारित है। उनका भौतिक अधिग्रहण आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड (संरक्षित ऋणदाता) द्वारा प्राधिकृत अधिकारी के रूप में कर लिया गया है एवं दर्शाए विवरण अनुसार उनके द्वारा "जहाँ है जैसी है", "जैसी है वैसी है" एवं "जिस भी स्थिति में ह" के आधार पर अचल संपत्ति के विक्रय के लिए प्रस्ताव आमंत्रित किए जा रहे हैं :–

क्र. सं.	कर्ज़दार(रों)/ सह–कर्ज़दार(रों)/ ज़मानतदार(रों) के नाम/ ऋण खाता संख्या	प्रत्याभूत आस्तियों का विवरण, ऋणभारों सहित, यदि कोई है	बकाया राशि (रु. में)	सुरक्षित मूल्य (रु. में) / धरोहर राशि जमा (रु. में)	संपत्ति निरीक्षण की तिथि एवं समय	ई–नीलामी की तिथि एवं समय
(ए)	(बी)	(सी)	(डी)	(ई)	(एफ)	(जी)
1.	श्री अर्णव टंडन (कर्ज़दार), ऋण खाता संख्या LBBNG00005829057/ LBBNG00005864325	यह पूरी संपत्ति दो बेडरूम, हॉल, किचन आवासीय अपार्टमेंट है, जिसका ग्राउंड फ्लोर नंबर 001 है, जिसे ''ड्रीम डिलाइट'' के नाम से जाना जाता है और वर्तमान में बियरिंग बीबीएमपी कथा नंबर 4961/39/ 10/48/4/55/1 जीएफ–001 है, जिसमें 1150 वर्ग फीट का सुपर बिल्ट अप एरिया है, साथ ही स्टिल्ट फ्लोर में एक कार पार्किंग स्लॉट नंबर 01 है। अपार्टमेंट में विट्रिफाइड टाइल्स फ्लोरिंग और जंगल वुड विंडोज हैं, जो डॉ. विष्णुवर्धन रोड स्थित है, केंगेरी विलेज और होबली, बैंगलोर साउथ तालुक, बैंगलोर	रु. 74,18, 270.35/- (अगस्त 28, 2024 तक)	रु. 50,40, 000/- / रु. 5,04,000/-	सितम्बर 15, 2024 को सुबह 11:00 बजे से दोपहर 02:00 बजे तक	अक्टूबर 15,2024 को सुबह 11:00 से दोपहर 12:00 बजे तक

ऑनलाइन नीलामी हमारी ई–नीलामी संस्था **मेसर्स नेक्सझेन सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड** की वेबसाइट **(https://disposalhub.com)** पर संचालित होगी। बंधककर्ताओं/ सूचना प्रेषितकर्ताओं को **अक्टूबर 14, 2024** को **शाम 04:00** बजे से पूर्व तक कुल बकाया राशि उस पर आगे ब्याज सहित भुगतान करने का अंतिम अवसर दिया जाता है, जिसमें विफल रहने पर इस/इन संरक्षित संपत्ति(यों) की बिक्री निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार की जाएगी।
संभावित बोलीकर्ता(ओं) को बयाना राशि (ईएमडी) डिमाण्ड ड्राफ्ट (डीडी) (कॉलम **ई** देखें) जो **आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, प्रथम तल, पश्चिम विंग, डीएसएमजी, मैशी सेंटर, होसुर मेन रोड, बोम्मनहल्ली, बैंगलोर–560068** में **अक्टूबर 14, 2024** तक **शाम 05:00** बजे से पूर्व जमा करना अनिवार्य है एवं इसके पश्चात् वे अपना प्रस्ताव उपरोक्त वर्णित वेबसाइट के माध्यम से ईएमडी के भुगतान साक्ष्य अर्थात बैंक डीडी पावती की स्कैन इमेज (छायाप्रति) **अक्टूबर 14, 2024** तक **शाम 05:00** बजे से पूर्व जमा करें। यदि संभावित बोलीकर्ता(ओं) वेबसाइट के माध्यम से उनके प्रस्ताव को जमा कराने में विफल रहते हैं, तो वे **आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, प्रथम तल, पश्चिम विंग, डीएसएमजी, मैशी सेंटर, होसुर मेन रोड, बोम्मनहल्ली, बैंगलोर–560068** में निविदा प्रलेखों की हस्ताक्षरित प्रति को **अक्टूबर 14, 2024** को **शाम 05:00** बजे से पूर्व तक जमा करवा सकते हैं। बयाना राशि का डिमाण्ड ड्राफ्ट/ पे ऑर्डर किसी भी राष्ट्रीयकृत/ शैडूल्ड बैंक द्वारा **आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड** की **बैंगलोर** शाखा के पक्ष में भुगतान हेतु होना चाहिए।
संपत्ति निरीक्षण, ई–नीलामी के नियम एवं शर्तों तथा निविदा प्रक्रिया के संदर्भ में स्पष्टीकरण हेतु कृपया **आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड** कर्मचारी के फोन नंबर **9844542086/8008999536** पर संपर्क करें।
प्राधिकृत अधिकारी बिना किसी कारण दर्शाए किसी एक अथवा अधिक निविदा व बोली को निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित रखते है।
बिक्री के विस्तृत नियमों एवं शर्तों हेतु कृपया वेबसाइट **www.icicibank.com/n4p4s** पर संपर्क करें।

तिथि : सितम्बर 03, 2024
स्थान : गुड़गाँव
प्राधिकृत अधिकारी
आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड

अगर मैं रीट पर कुछ भी कहूंगी तो मुझ पर हितों के टकराव का आरोप लगेगा: सेबी प्रमुख

भाषा। मुंबई

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) की चेयरपर्सन माधबी पुरी बुच ने रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स (रीट) पर टिप्पणी करने से सोमवार को इनकार करते हुए कहा कि अगर वह इस विषय पर कुछ कहेंगी तो उनपर हितों के टकराव का आरोप लगाया जाएगा। बुच ने यह बात ऐसे समय में कही है जब अमेरिकी निवेश एवं शोध कंपनी हिंडनबर्ग ने अपनी एक रिपोर्ट में उनके और निजी इक्विटी क्षेत्र की कंपनी ब्लैकस्टोन से जुड़े संभावित हितों के टकराव के बारे में सवाल उठाए हैं।
उनके पति धवल बुच ब्लैकस्टोन में वरिष्ठ सलाहकार हैं, जो रीट क्षेत्र की एक प्रमुख कंपनी है। हालांकि, दंपति ने आरोपों का खंडन किया है। इसके अलावा, हिंडनबर्ग ने आरोप लगाया था कि रीट विनियम 2014 में सेबी के हालिया संशोधनों से एक विशिष्ट वित्तीय समूह को लाभ पहुंचा है। सेबी ने इन आरोपों को खारिज किया है। सेबी की प्रमुख बुच ने सोमवार को भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के एक कार्यक्रम में कहा, यदि मैं रीट पर एक शब्द भी कहूंगी तो मुझपर हितों के टकराव का आरोप लगा दिया जाएगा। रीट भारतीय बाजार में एक नई अवधारणा है। अपने आकर्षक रिटर्न तथा पूंजी वृद्धि के कारण यह विश्वस्तर पर एक लोकप्रिय विकल्प रहा है। रीट वाणिज्यिक अचल संपत्ति परिसंपत्तियों के खंड से बना होता है, जिनमें से अधिकतर पहले से ही पट्टे पर दी गई होती हैं। इस बीच, कांग्रेस ने बुच के खिलाफ हितों के टकराव के नए आरोप लगाते हुए सोमवार को दावा किया कि वह इस बाजार नियामक की पूर्णकालिक सदस्य होते हुए भी आईसीआईसीआई बैंक से नियमित वेतन ले रही थीं। कांग्रेस के मीडिया एवं प्रचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा कि बुच पांच अप्रैल, 2017 से चार अक्टूबर, 2021 तक सेबी की पूर्णकालिक सदस्य थीं और दो मार्च, 2022 से इसकी चेयरपर्सन हैं। उन्होंने कहा, माधबी पुरी बुच सेबी की पूर्णकालिक सदस्य होते हुए नियमित वेतन आईसीआईसीआई बैंक से ले रही थीं, जो कि 16.80 करोड़ रुपए बैठता है। वह आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल, ईएसओपी और ईएसओपी का टीडीएस भी बैंक से ले रही थीं। सेबी ने हालांकि कांग्रेस के आरोपों पर अभी तक कोई टिप्पणी नहीं की है।

बुच को सेवानिवृत्ति के बाद कोई वेतन भुगतान नहीं किया गया: आईसीआईसीआई बैंक

नई दिल्ली। निजी क्षेत्र के आईसीआईसीआई बैंक ने मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस की तरफ से सेबी प्रमुख माधवी पुरी बुच पर लगाए गए आरोपों पर सोमवार को कहा कि उसने अक्टूबर, 2013 में बुच की सेवानिवृत्ति के बाद से उन्हें कोई भी वेतन या ईएसओपी नहीं दिया है। इससे पहले कांग्रेस ने आरोप लगाया कि वर्ष 2017 में भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) का सदस्य बनने वाली बुच ने वेतन और अन्य पारिश्रमिक के तौर पर आईसीआईसीआई बैंक से 16.8 करोड़ रुपए हासिल किए थे। कांग्रेस ने कहा है कि सेबी चेयरमैन को 2017 से आईसीआईसीआई समूह की तरफ से 16.8 करोड़ रुपए मिले है, जो उन्हें बाजार नियामक से मिली आय का 5.09 गुना है। इस आरोप पर बैंक ने बयान मे कहा, आईसीआईसीआई बैंक या इसकी समूह कंपनियों ने माधबी पुरी बुच को उनकी सेवानिवृत्ति के बाद उनके सेवानिवृत्ति लाभों के सिवाय कोई वेतन या कोई ईएसओपी (कर्मचारी शेयर विकल्प योजना) नही दिया गया है। यह ध्यान देने योग्य है कि उन्होंने 31 अक्टूबर, 2013 से प्रभावी सेवानिवृत्ति का विकल्प चुना था। आईसीआईसीआई समूह में अपने कार्यकाल के दौरान बुच को बैंक की नीतियो के अनुरूप वेतन, सेवानिवृत्ति लाभ, बोनस और ईएसओपी के रूप में पारिश्रमिक मिला। बैंक ने कहा, हमारे नियमो के तहत ईएसओपी आवंटित किए जाने की तारीख से अगले कुछ वर्षो मे मिलते है। बुच को ईएसओपी आवंटन किए जाते समय लागू नियमो के तहत सेवानिवृत्त कर्मचारियो समेत बैंक कर्मचारियो के पास विकल्प था कि वे अधिकृत होने की तारीख से 10 साल की अवधि तक कभी भी अपने ईएसओपी का उपयोग कर सकते है। इसके पहले कांग्रेस महासचिव और मीडिया प्रभारी जयराम रमेश ने कहा कि अदाणी समूह द्वारा सेबी नियमो के उल्लंघन पर की जा रही नियामकीय जांच के मामले मे सेबी प्रमुख पर हितो के टकराव को लेकर गंभीर सवाल उठे है। रमेश ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट मे कहा, ऐसा लगता है कि भारत सरकार ने इन सवालो को आसानी से दरकिनार कर दिया है। अब चौकाने वाले गैरकानूनी पहलू का यह नया खुलासा हुआ है। आईसीआईसीआई बैंक ने अपने बयान मे कहा कि बुच को उनकी सेवानिवृत्ति के बाद किए गए सभी भुगतान आईसीआईसीआई समूह में काम करते समय उनके द्वारा अर्जित किए गए थे। इन भुगतानो मे ईएसओपी और सेवानिवृत्ति लाभ भी शामिल है। बयान मे कहा गया है कि आयकर नियमो के मुताबिक, ईएसओपी आवंटन और उसके क्रियान्वयन के दिन स्टॉक की कीमत के बीच के अंतर को अनुलाभ आय माना जाता है और उसे सेवानिवृत्त कर्मचारियो के फॉर्म 16 के भाग बी मे दर्शाया जाता है। बैंक को इस आय पर अनुलाभ कर काटना जरूरी है।

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, निर्माण शाखा
उत्तराखण्ड पेयजल निगम, भीमताल (नैनीताल)
दूरभाष कार्यालयः– 05942–247895 Email : eecd.btl@gmail.com

पत्रांक : 3148/535/43 — **अल्पकालीन निविदा सूचना** — दिनांक : 02.09.2024

अध्यक्ष, उत्तराखण्ड पेयजल निगम की ओर से अधोहस्ताक्षरी द्वारा निम्नलिखित कार्यों हेतु मोहरबंद निविदा, दिनांक 13.09.2024 अपरान्ह 3:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है जो उसी कार्यदिवस में अपरान्ह 03:30 बजे उपस्थित निविदादाताओं अथवा उनके अधिकृत प्रतिनिधियों की उपस्थिति में इस कार्यालय में निविदा समिति द्वारा खोली जायेगी। उक्त दिनांकों में अवकाश घोषित होने की स्थिति में निविदा अगले कार्य दिवस को डाली/खोली जायेगी।

क्र0 सं0	विकासखण्ड	कार्य का विवरण	धरोहर धनराशि (रू0 में)	कार्य पूर्ण करने की अवधि	निविदा प्रपत्र का मूल्य	ठेकेदारी पंजीकरण की न्यूनतम श्रेणी
1	हल्द्वानी	जल जीवन मिशन की गोविन्दपुर गढ़वाल पेयजल योजना के अन्तर्गत अवशेष कार्य।	38000.00	2 माह	1500+ जी0एस0टी0 18%	श्रेणी ''डी'' में पंजीकृत
2	भीमताल	जिला योजना की गेठिया उपवन पेयजल योजना के अन्तर्गत पाईप लाईन निर्माण सम्बन्धित कार्य।	16000.00	2 माह	1000+ जी0एस0टी0 18%	श्रेणी ''डी'' में पंजीकृत
3	ओखलकाण्डा	जल जीवन मिशन के अन्तर्गत कचलाकोट पेयजल योजना के अवशेष कार्य।	50000.00	2 माह	2000+ जी0एस0टी0 18%	श्रेणी ''डी'' में पंजीकृत
4	ओखलकाण्डा	जल जीवन मिशन के अन्तर्गत नाई पेयजल योजना के अवशेष कार्य।	40000.00	1 माह	1500+ जी0एस0टी0 18%	श्रेणी ''डी'' में पंजीकृत
5	ओखलकाण्डा	जल जीवन मिशन के अन्तर्गत दम्का तल्ला (रैकूना) पेयजल योजना के अवशेष कार्य।	30000.00	1 माह	1500+ जी0एस0टी0 18%	श्रेणी ''डी'' में पंजीकृत

नोट :– 1. नियम एवं अन्य शर्तें किसी भी कार्य दिवस में प्रातः 10.00 बजे से सांय 5.00 बजे तक कार्यालय या नोटिस बोर्ड में देखी जा सकती है।

अधिशासी अभियन्ता

''जल संचय –जीवन संचय'' ''कृपया जल स्त्रोतों को प्रदूषित होने से बचाइये''
''जल स्त्रोत बताइये-पेयजल योजना पाइये'' ''जल स्त्रोतों को प्रदूषित करना दण्डनीय अपराध है''

रूस का ड्रोन, क्रूज, बैलिस्टिक मिसाइल से कीव पर हमला

भाषा। कीव

रूस ने यूक्रेन की राजधानी कीव को निशाना बनाकर सोमवार को ड्रोन, क्रूज और बैलिस्टिक मिसाइल से बड़े पैमाने पर हमले किए। यूक्रेन के गृह मंत्रालय ने बताया कि तड़के राजधानी कई विस्फोटों से दहल उठी, जिससे निवासियों को बम रोधी आश्रय स्थलों में शरण लेनी पड़ी। कीव के लगभग हर हिस्से को निशाना बनाया गया जिससे तीन लोग घायल हो गए और दो स्कूलों की इमारतों को नुकसान पहुंचा। छुट्टियों के बाद यूक्रेन में विद्यालय खुल गए हैं। हालांकि कुछ जगहों पर हमले से हुए नुकसान के कारण कक्षाएं रद्द कर दी गईं। युद्ध के 900 से ज्यादा दिनों के बाद भी रूस और यूक्रेन के बीच लड़ाई में कोई कमी आने या बातचीत की मेज पर आने का कोई संकेत नहीं दिख रहा है।

यूक्रेन रूस के कुर्स्क क्षेत्र में हमले कर रहा है, वहीं रूसी सेना पूर्वी यूक्रेन के डोनबास औद्योगिक क्षेत्र अंतर्गत दोनेत्सक में और भी आगे बढ़ रही है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा है कि यूक्रेन के कुर्स्क पर हमले से रूसी सेना को पूर्वी यूक्रेन में आगे बढ़ने से नहीं रोका जा सकेगा। उन्होंने कहा कि यूक्रेन की सेना रूसी सैनिकों को वहां लड़ाई से हटाने का अपना लक्ष्य हासिल नहीं कर पाई है। पुतिन ने दक्षिणी साइबेरिया की यात्रा के दौरान स्कूली छात्रों से कहा, दुश्मन ने अपने लिए जो मुख्य लक्ष्य निर्धारित किया था-डोनबास में हमारे सैन्य अभियान को रोकना-वह उन्होंने हासिल नहीं किया है। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने पिछले महीने कहा था कि कुर्स्क में सैन्य कार्वाई का उद्देश्य एक बफर जोन बनाना है, जो सीमा पार से रूसी सेना द्वारा किए जाने वाले अन्य हमलों को रोक सके। पुतिन ने कहा है कि छह अगस्त से यूक्रेन का कुर्स्क पर शुरू हुआ हमला विफल हो जाएगा और इसके बाद यूक्रेन के अधिकारी शांति वार्ता की ओर बढ़ना चाहेंगे। यूक्रेन की वायु सेना ने कहा कि रूस ने रात भर यूक्रेन पर विभिन्न प्रकार की 35 मिसाइलें दागीं और 26 ड्रोन हमले किए। इसने कहा कि नौ बैलिस्टिक मिसाइलें, 13 क्रूज मिसाइलें और 20 ड्रोन गिरा दिए गए। गर्मी की छुट्टियों के बाद छात्रों के लिए सोमवार को स्कूल में वापसी का पहला दिन था। यूक्रेन में, इस दिन विभिन्न समारोहों का आयोजन होता है।

हेलीकॉप्टर हादसे में मारे गए 22 लोगों के शव बरामद

मास्को। रूस के सुदूर पूर्व में शनिवार को हुए हेलीकॉप्टर हादसे में मारे गए सभी 22 लोगों के शव बरामद कर लिए गए है। आपातकालीन मंत्रालय के अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। हेलीकॉप्टर में मुख्य रूप से पर्यटक सवार थे। मृतकों में चालक दल के सभी तीन सदस्य शामिल है। यह हादसा कमचात्का क्षेत्र में हुआ जो एक प्राचीन प्रायद्वीप है और यहां कई ज्वालामुखी है। यह क्षेत्र अपनी सुंदरता और समृद्ध वन्य जीवन के लिए मशहूर है। शनिवार को 19 यात्रियों और चालक दल के तीन सदस्यों के साथ एक एमआई-8 हेलीकॉप्टर ने वाचकज़ेत्स ज्वालामुखी के करीब से उड़ान भरी थी और दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हेलीकॉप्टर का मलबा अगले दिन मिला। रूस की सरकारी समाचार एजेंसी आरआईए नोवोस्ती ने आपातकालीन मंत्रालय का हवाला देते हुए कहा कि संभवत: यह हादसा खराब मौसम में कम दृश्यता के कारण हुआ।

इजराइल में आम हड़ताल के कारण करीब पूरे देश में प्रमुख बाजार और प्रतिष्ठान बंद रहे

भाषा। यरूशलम

गाजा में बंधक बनाए गए लोगों को मुक्त कराने में विफल रहने के विरोध में इजराइल में सोमवार को आम हड़ताल के आह्वान के कारण करीब पूरे देश में बंद और अन्य तरह का व्यवधान दिखा जिसमें इसका मुख्य अंतरराष्ट्रीय हवाई हड्डा भी शामिल है। हालांकि, कुछ क्षेत्रों में इस आह्वान को नजरअंदाज किया गया जो गहरे राजनीतिक मतभेदों को दर्शाता है। हड़ताल के कारण प्रमुख बाजार और प्रतिष्ठान बंद रहे। गाजा में रविवार की देर रात छह बंधकों के मृत पाए जाने के बाद इजराइल के हजारों लोग शोक और आक्रोष के बीच सड़कों पर उतर गए। पीड़ित परिवारों और अधिकतर लोगों ने प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को दोषी ठहराया और कहा कि लगभग 11 महीने पुराने युद्ध को समाप्त करने के लिए हमास के साथ समझौते के माध्यम से उन्हें जिंदा वापस लाया जा सकता था। लेकिन अन्य लोग हमास पर लगातार सैन्य दबाव बनाए रखने की नेतन्याहू की रणनीति का समर्थन करते हैं। हमास की ओर से सात अक्टूबर को इजराइल पर हमले के साथ युद्ध शुरू हो गया था। इजराइल के सबसे बड़े व्यापार संघ हिस्तादुत ने सोमवार को आम हड़ताल का आह्वान किया था, जो युद्ध की शुरुआत के बाद पहली हड़ताल है। इसका उद्देश्य बैंकिंग, स्वास्थ्य सेवा और देश के मुख्य हवाई अड्डे सहित अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों को बंद करना या बाधित करना है।अधिकारियों ने बताया कि यमन के हूती विद्रोहियों के संदिग्ध हमले में सोमवार को लाल सागर में एक जहाज को निशाना बनाया गया। ब्रिटिश सेना के यूनाइटेड किंगडम समुद्री व्यापार परिचालन केंद्र (यूकेएमटीओ) ने बताया कि दो मिसाइल या रॉकेट जहाज से टकराए तथा तीसरा विस्फोट जहाज के निकट हुआ। यूकेएमटीओ ने कहा कि जहाज पर कोई हताहत नहीं हुई है और वह अगले बंदरगाह की ओर बढ़ रहा है।

दक्षिण कोरिया : राष्ट्रपति ने किया संसद के उद्घाटन सत्र का बहिष्कार

सियोल। दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सूक योल ने सोमवार को संसद के औपचारिक उद्घाटन का बहिष्कार किया, क्योंकि शीर्ष अधिकारियों और उनकी पत्नी पर गलत काम करने के आरोपो को लेकर विपक्ष के साथ उनका मतभेद गहरा गया है। दक्षिण कोरिया की संसदीय परंपरा के अनुसार राष्ट्रपति नेशनल असेंबली के सत्रों के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते है। इसके साथ ही यून 1980 के दशक के अंत में देश में सैन्य तानाशाही समाप्त कर लोकतंत्र की स्थापना होने के बाद संसद के उद्घाटन सत्र का बहिष्कार करने वाले पहले राष्ट्रपति बन गए है। रूढ़ीवादी यून ने 2022 में मामूली अंतर से राष्ट्रपति चुनाव में जीत हासिल की थी।

अफ्रीका में दस लाख हनुमान चालीसा बांटेगा हिंदू संगठन

जोहानिसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका में एक प्रमुख हिंदू संगठन ने अगले पांच साल मे हनुमान चालीसा की छोटे आकार की दस लाख मुफ्त प्रतियां बांटने की शुरुआत की है।हनुमान चालीसा की यह प्रति जेब मे रखी जा सकती है और इसे दुनियाभर में सबसे छोटी प्रति माना जा रहा है। शनिवार को यहां विष्णु मंदिर मे दान उत्सव के दौरान इसके वितरण की शुरुआत हुई।एसए हिंदूज नामक संगठन की संस्थापक पंडित लूसी सिगाबन ने कहा, हमने आध्यात्मिक विकास, सामुदायिक सेवा और सांस्कृतिक संरक्षण का उत्सव मनाने के लिए दक्षिण अफ्रीका के एक दर्जन से अधिक धार्मिक संगठनो के प्रतिनिधियो के साथ एक कार्यक्रम आयोजित किया।

सिम्बायोसिस युनिवर्सिटी ने एसएलएटी 2025 के लिए रजिस्ट्रेशन शुरू किया

सिम्बायोसिस। सिम्बायोसिस इंटरनेशनल डीम्ड युनिवर्सिटीद्ध एसआईयू ने सिम्बायोसिस लॉ एडमिशन टेस्ट 2025 के लिए रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया शुरू करने की घोषणा की है। युनिवर्सिटी के लॉ प्रोग्राम के लिए बेहद प्रतिष्ठित प्रवेश परीक्षा है। इस साल प्रक्रिया में बड़ा बदलाव लाया गया हैए इसके लिए ऐप्लीकेशन विंडो आधिकारिक रूप से 14 अगस्त 2024 को खोली गई और अब परीक्षा की दिसम्बर 13 शुक्रवार और दिसम्बर 15 रविवार 2024 को रखी गई है जबकि पारम्परिक रूप से इसका आयोजन मई में किया जाता है। वे उम्मीदवार जो इस परीक्षा में हिस्सा लेना चाहते हैं, वे रजिस्ट्रेशन प्रक्रियाए योग्यता के मानकों एवं अन्य ज़रूरी जानकारी के लिए आधिकारिक वेबसाईट पर विज़िट कर सकते हैं। परीक्षा दो बार होगी और दोनों में से सर्वश्रेष्ठ स्कोर के आधार पर छात्र युनिवर्सिटी के लॉ प्रोग्राम में प्रवेश पा सकेंगे। एसएलएटी पहले सिम्बायोसिस एंट्रेन्स टेस्ट एक भाग था जो सिम्बायोसिस के चार प्रतिष्ठिल लॉ स्कूलों. पुणे हैदराबाद, नोएडा और नागपुर में प्रवेश के लिए गेटवे है। हर टेस्ट के लिए रजिस्ट्रेशन शुल्क रु 2250 है और कॉलेज सलेक्शन के लिए प्रत्येक प्रोग्राम के लिए रु 1000 का शुल्क अलग से होगा।

फिलीपीन में बाढ़ और भूस्खलन से नौ लोगों की मौत

मनीला। उत्तरी फिलीपीन में तूफान के कारण भूस्खलन और भारी बारिश हुई, जिससे सोमवार तक कई इलाकों में बाढ़ आ गई और कम से कम नौ लोगों की मौत हो गई। इसको देखते हुए अधिकारियों ने स्कूलों को बंद कर दिया तथा सरकारी कामकाज भी स्थगित करना पड़ा। मौसम ब्यूरो के अनुसार, उष्णकटिबंधीय तूफान यागी सोमवार दोपहर तक मनीला के दक्षिण-पूर्व में क्यूजोन प्रांत के इनफांटा शहर से 115 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में था, यह 75 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से टकराया और इसकी रफ्तार 90 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंच गई। स्थानीय रूप से एनटेंग नाम से जाना जाने वाला यह तूफान लूजोन के मुख्य उत्तरी क्षेत्र के पूर्वी तट के पास 15 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ रहा है।आपदा न्यूनीकरण अधिकारी एनरिलिटो बर्नार्डो जूनियर ने बताया कि सोमवार को राजधानी के पश्चिम में रिजाल प्रांत के एंटिपोलो शहर में पहाड़ी पर स्थित दो छोटी झुग्गियां भूस्खलन की चपेट में आ गईं, जिससे एक गर्भवती महिला समेत कम से कम तीन लोगों की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि चार अन्य ग्रामीण उफनते नालों में डूब गए। राष्ट्रीय पुलिस प्रवक्ता कर्नल जीन फजार्डो ने बिना विस्तृत जानकारी दिए पत्रकारों को बताया कि मध्य फिलीपीन में तूफान के कारण हुए भूस्खलन में दो और लोगों की मौत हो गई तथा 10 अन्य घायल हो गए। पुलिस ने बताया कि पूर्वी कैमरिन्स सुर प्रांत के नागा शहर में खराब मौसम में दो स्थानीय लोगों की मौत हो गई। यहां कई क्षेत्रों में बाढ़ का पानी घुसा है। प्राधिकारी इस बात की पुष्टि करने में जुटे हैं कि ए मौतें मौसम से संबंधित थी या नहीं। इसमें एक व्यक्ति की मौत करंट लगने से हुई है। देश के सबसे अधिक आबादी वाले क्षेत्र लूजोन के एक बड़े हिस्से में तूफान की चेतावनी जारी की गई, जिसमें महानगरीय क्षेत्र मनीला भी शामिल है। यहां तूफानी मौसम के कारण स्कूल और अधिकांश सरकारी कार्यालय बंद कर दिए गए। राजधानी के पूर्वी छोर पर मरीकिना नदी के भीड़भाड़ वाले तट पर सुबह के समय एक सायरन बजाया गया, जिसमें हजारों लोगों को नदी के जलस्तर में वृद्धि तथा भारी बारिश के कारण नदी के उफान पर आने की स्थिति में वहां से निकलने के लिए तैयार रहने की चेतावनी दी गई।

ईरान के राष्ट्रपति का हेलीकॉप्टर खराब मौसम के कारण दुर्घटनाग्रस्त हुआ था : रिपोर्ट

तेहरान। एक आधिकारिक जांच रिपोर्ट में सामने आया है कि ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी का हेलीकॉप्टर खराब मौसम के कारण दुर्घटनाग्रस्त हुआ था। ईरान के सरकारी टीवी ने रविवार को यह जानकारी दी। मई में हेलीकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होने से रईसी और सात अन्य लोगों की मौत हो गई थी। सशस्त्र बलों के जनरल स्टाफ के उच्चतम बोर्ड की अंतिम रिपोर्ट में कहा गया है कि हेलीकॉप्टर दुर्घटना का मुख्य कारण वसंत में क्षेत्र की जटिल मौसमी परिस्थितियां थीं। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि अचानक घना कोहरा ऊपर की ओर उठने लगा और इसी दौरान हेलीकॉप्टर पहाड़ से टकरा गया।

बीडीआर विद्रोह की फिर से जांच करेगी बांग्लादेश की अंतरिम सरकार

ढाका। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने सोमवार को कहा कि वह अर्द्धसैनिक बल बांग्लादेश राइफल्स (बीडीआर) में 2009 के विद्रोह की जल्द पुन: जांच और निष्पक्ष सुनवाई शुरू करेगी, जिसमें बल में सेवारत 57 सैन्य अधिकारियों समेत 74 लोग मारे गए थे। अंतरिम सरकार के गृह एवं कृषि मामलों के सलाहकार लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) एम जहांगीर आलम चौधरी ने कहा कि एक नागरिक और एक पूर्व सैन्यकर्मी के रूप में वह इस दुखद घटना में न्याय सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। ढाका में स्वीडिश राजदूत रेटो सिगफ्रीड रेंगली के साथ बैठक के बाद उन्होंने मीडिया से कहा, बीडीआर संबंधी घटना की पुन: जांच और निष्पक्ष सुनवाई प्रक्रिया जल्द ही शुरू होगी। विद्रोह 25-26 फरवरी, 2009 को शुरू हुआ, जब सेना के अधिकारियों ने बीडीआर जवानों की मांगों को पूरा करने से इनकार कर दिया था। विद्रोही सैनिकों ने ढाका में बीडीआर के पिलखाना मुख्यालय में विद्रोह किया और यह जल्दी ही पूरे देश में फ्रंटियर फोर्स के सेक्टर मुख्यालयों और क्षेत्रीय इकाइयों तक फैल गया। विद्रोह में अर्द्धसैनिक बलों के जवानों ने अपने कमांडरों की ओर बंदूकें तान दीं, उन्हें नजदीक से गोली मार दी या उन्हें धारदार हथियारों से हमला करके मार डाला, उनके शवों को सीवर में छिपा दिया और उनके डरे हुए परिवार के सदस्यों को बैरकों में बंधक बना दिया।

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार तीस्ता जल बंटवारा संधि पर भारत से बातचीत फिर शुरू करने की इच्छुक

भाषा। ढाका

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार में जल संसाधन मामलों की सलाहकार सैयदा रिजवाना हसन ने कहा है कि सरकार तीस्ता जल बंटवारा संधि पर भारत के साथ बातचीत फिर से शुरू करना चाहती है। उन्होंने कहा कि ऊपरी तटवर्ती और निचले तटवर्ती देशों को जल बंटवारे पर अंतरराष्ट्रीय सिद्धांतों का पालन करना चाहिए। ढाका में पीटीआई-भाषा के साथ बातचीत में हसन ने भरोसा जताया कि भारत के साथ तीस्ता संधि एवं अन्य जल बंटवारा संधियों पर विवाद को बातचीत के जरिए सौहार्दपूर्ण तरीके से सुलझा लिया जाएगा लेकिन उन्होंने सुझाव दिया कि अगर किसी समझौते पर नहीं पहुंचा जा सका तो बांग्लादेश अंतरराष्ट्रीय वैधानिक दस्तावेजों और सिद्धांतों पर विचार कर सकता है। उन्होंने कहा, मैंने (बांग्लादेश में) सभी संबंधित पक्षकारों से तीस्ता जल बंटवारा मुद्दे पर चर्चा की है। चर्चा में हम इसी नतीजे पर पहुंचे कि तीस्ता संधि के संबंध में हमें प्रक्रिया और संवाद को फिर से शुरू करने की आवश्यकता है। हमें गंगा संधि पर भी काम करना है जिसकी मियाद दो साल में पूरी होने वाली है। उन्होंने कहा, दोनों पक्ष सहमत हैं और तीस्ता जल-बंटवारा संधि का मसौदा तैयार है। लेकिन पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री के विरोध के कारण समझौते पर हस्ताक्षर नहीं हो पाया। तथ्य यही है कि हम समझौते को अंतिम रूप नहीं दे पाए। इसलिए हम समझौते के मसौदे के साथ उस बिंदु से शुरुआत करेंगे और भारत से आगे आकर वार्ता प्रक्रिया को पुन: आरंभ करने का आग्रह करेंगे। भारत और बांग्लादेश तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की 2011 में ढाका यात्रा के दौरान तीस्ता जल बंटवारा संधि पर हस्ताक्षर करने वाले थे लेकिन पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अपने राज्य में पानी की कमी का हवाला देते हुए इस पर सहमति देने से इनकार कर दिया। सैयदा ने कहा, हम सौहार्दपूर्ण समाधान खोजने का प्रयास करेंगे। चूंकि यह एक अंतरराष्ट्रीय जल मुद्दा है, इसलिए यह अन्य देशों के कानूनी अधिकार के विचार से भी संबंधित है। अत: कितना पानी उपलब्ध है और क्या यह पर्याप्त है, यह हमारे लिए स्पष्ट नहीं है। यहां तक कि अगर बहुत कम पानी उपलब्ध है, तो अंतरराष्ट्रीय साझाकरण मानदंडों के कारण बांग्लादेश को नदी से जल का प्रवाह जारी रहना चाहिए। हसन ने उल्लेख किया कि अगर ऊपरी तटवर्ती और निचले तटवर्ती दोनों देश कुछ अंतरराष्ट्रीय कानूनी सिद्धांतों का पालन करें तो अंतरराष्ट्रीय जल बंटवारे के मुद्दे को बेहतर ढंग से निपटाया जा सकता है। बांग्लादेश की प्रसिद्ध पर्यवरणविद ने कहा, बांग्लादेश जल बंटवारे के संबंध में अंतरराष्ट्रीय वैधानिक सिद्धांतों और दस्तावेजों का समर्थन करने पर विचार कर सकता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसमें शामिल होने के संदर्भ में मेरा यही मतलब है।

बांग्लादेश में भारतीय वीजा आवेदन केंद्रों ने तत्काल चिकित्सा और छात्र वीजा के लिए सीमित स्लॉट खोले

ढाका। बांग्लादेश के प्रमुख शहरो मे भारतीय वीजा आवेदन केंद्रो ने तत्काल चिकित्सा और छात्र वीजा की आवश्यकता वाले बांग्लादेशी नागरिकों के लिए सीमित आवेदन स्लॉट की पेशकश शुरू कर दी है।ए सेवाएं ढाका, चटगांव, राजशाही, सिलहट और खुलना मे प्रदान की जा रही है।बांग्लादेश मे भारतीय वीजा आवेदन केंद्र (आईवीएसी) ने एक बयान में कहा, इसके अलावा, इन पांच केंद्रो ने उन अत्यावश्यक मामलो के लिए सीमित आवेदन स्लॉट भी खोले है, जहां बांग्लादेशी छात्रों और श्रमिकों को तीसरे देश की यात्रा करने की आवश्यकता होती है और जिनके लिए उन्होने पहले से ही भारत मे विदेशी दूतावासो के साथ वीजा के लिए समय ले रखा है। बयान मे कहा गया है, ए सेवाएं तब तक सीमित रहेंगी जब तक कि आईवीएसी अपना सामान्य परिचालन फिर से शुरू नही कर देता। बांग्लादेश में सरकारी नौकरियों में विवादास्पद आरक्षण प्रणाली के खिलाफ छात्रों द्वारा बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन किया गया था। प्रदर्शन जुलाई के मध्य मे शुरू हुआ और अंततः पांच अगस्त को शेख हसीना के नेतृत्व वाली अवामी लीग सरकार को सत्ता से हटा दिया गया। जुलाई के मध्य से लेकर अब तक विरोध प्रदर्शनो के कारण 600 से अधिक लोग मारे जा चुके है।वर्तमान मे, 84 वर्षीय नोबेल पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व मे एक अंतरिम सरकार देश चला रही है।

संसद की अध्यक्ष शिरीन ने इस्तीफा दिया

ढाका। बांग्लादेश की संसद की अध्यक्ष शिरीन शर्मिन चौधरी ने सोमवार को इस्तीफा दे दिया। करीब चार सप्ताह पहले राष्ट्रपति मोहम्मद शहाबुद्दीन ने प्रधानमंत्री शेख हसीना के पद से हटने के बाद सदन को भंग कर दिया था। राष्ट्रपति भवन के अधिकारियो ने बताया किचौधरी ने राष्ट्रपति को अपना इस्तीफा सौंप दिया है। उनका इस्तीफा ऐसे समय मे आया है जब सरकार विरोधी प्रदर्शनो के दौरान एक आभूषण कारीगर की हत्या के मामले मे उन पर आरोप लगाया गया है। चौधरी के अलावा अवामी लीग के नेताओ और हसीना के नेतृत्व वाली सरकार मे मंत्री रहे कई लोगो के खिलाफ भ्रष्टाचार और हत्या समेत अन्य आरोपो मे मामले दर्ज किए गए है। हसीना के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देने और देश छोड़ने के बाद अवामी लीग के कई नेताओ को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है।

संभवत: एआई बहुत सारी नौकरियां ना छीने

पर कामगारों को बनाएगा और कुशल

भाषा। वाशिंगटन

एक ऐसे ग्राहक-सेवा केंद्र की कल्पना करें जो आपकी भाषा बोलता हो, चाहे वह कोई भी भाषा हो। दुनिया भर में ग्राहक-सेवा केंद्र चलाने वाली, कैलिफोर्निया के इरविन की एक कंपनी एलोरिका ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) अनुवाद टूल पेश किया है जो उसके प्रतिनिधियों को 200 अलग-अलग भाषाएं और 75 बोलियां बोलने वाले ग्राहकों से बात करने की सुविधा देता है। इसलिए, एलोरिका का कोई प्रतिनिधि जो, मान लीजिए, केवल स्पेनिश बोलता है, हांगकांग में कैंटोनीज भाषा बोलने वाले किसी व्यक्ति से खराब प्रिंटर या गलत बैंक स्टेटमेंट के बारे में शिकायत दर्ज कर सकता है। एलोरिका को कैंटोनीज बोलने वाले प्रतिनिधि को नियुक्त करने की आवश्यकता नहीं होगी। एआई की ताकत ऐसी ही है। और, संभावित रूप से, खतरा: शायद कंपनियों को इतने कर्मचारियों की जरूरत नहीं होगी और कुछ नौकरियों में कटौती होगी, अगर चैटबॉट काम का बोझ संभाल सकें। लेकिन बात यह है कि एलोरिका नौकरियों में कटौती नहीं कर रही है। यह अभी भी बढ़ चढ़कर भर्ती कर रही है। एलोरिका और फर्नीचर रिटेलर आइकिया सहित अन्य कंपनियों के अनुभव से पता चलता है कि एआई शायद नौकरी खत्म करने वाला साबित न हो, जिससे कई लोग डरते हैं। इसके बजाय, यह तकनीक अतीत की सफलताओं की तरह हो सकती है जैसे भाप इंजन, बिजली, इंटरनेट। यानी कुछ नौकरियां खत्म होंगी और कुछ नौकरियां पैदा होंगी। और संभवत: कामगार अधिक उत्पादक बनेंगे, जिससे अंतत: उन्हें, उनके नियोक्ताओं और अर्थव्यवस्था को लाभ होगा। इनडीड हायरिंग लैब के अर्थशास्त्री निक बंकर ने कहा कि उन्हें लगता है कि एआई बहुत सारी नौकरियों को प्रभावित करेगा-शायद हर नौकरी को कुछ हद तक अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करेगा। लेकिन मुझे नहीं लगता कि इससे बड़े पैमाने पर बेरोजगारी बढ़ेगी। हमने अपने इतिहास में अन्य बड़ी तकनीकी घटनाएं देखी हैं, और उनसे बेरोजगारी में बड़ी वृद्धि नहीं हुई। प्रौद्योगिकी विनाश करती है लेकिन सृजन भी करती है। नई नौकरियां पैदा होंगी। एआई मशीनों को ऐसे कार्य करने में सक्षम बनाती है जिन्हें पहले मानवीय बुद्धिमत्ता की आवश्यकता होती थी।

इनडीड हायरिंग ट्रैकर में सेल्स, मार्केटिंग और टेक भूमिकाओं की मांग बढ़ी

नई दिल्ली। इनडीड हायरिंग ट्रैकर के नए एडिशन में भारत में अप्रैल से जून 2024 के बीच व्हाईट कॉलर नौकरी बाजार में महत्वपूर्ण वृद्धि सामने आई है। इस दौरान 73 प्रतिशत नियोक्ताओं ने भर्तियाँ कीं जो पिछली तिमाही जनवरी-मार्च 2024 के मुकाबले 7 प्रतिशत बढ़ीं। अर्थव्यवस्था की मौजूदा चुनौतियों के बाद भी इससे मुख्य क्षेत्रों में तेजी से स्पष्ट संकेत मिले हैं। सेल्स और मार्केटिंग का क्षेत्र नियोक्ताओं के लिए महत्वपूर्ण होता जा रहा है। इस दौरान सेल्स में 30 प्रतिशत भर्तियाँ और मार्केटिंग में 23 प्रतिशत भर्तियाँ हुई हैं। यह परिवर्तन कंपनियों द्वारा अपनी वृद्धि और परफॉर्मेंस को मजबूत करने पर जोर का संकेत दे रहा है। जहाँ संगठन बाजार में अपनी पहुँच को मजबूत कर रहे हैंए वहीं इन पदों को व्यवसायों को सफलता दिलाने के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है। आईटी पदों के लिए मांग मजबूत बनी रही। डेटा एनालिस्ट 23 प्रतिशत डेटा इंजीनियर 16 प्रतिशत और डेटा वैज्ञानिकों 11 प्रतिशत की मांग सबसे ज्यादा रही। इससे उद्योगों में हो रहा डिजिटल परिवर्तन प्रदर्शित होता हैए जिनके लिए विशेषज्ञ कौशल वाले पदों की जरूरत हैए ताकि व्यवसाय जटिल टेक्नोलॉजिकल परिदृश्य में आगे बढ़ सकें। जहाँ कंपनियाँ भर्ती कर रही हैंए वहीं कौशल की बढ़ती कमी भी चिंता का विषय है। इनडीड की हायरिंग ट्रैकर रिपोर्ट में सामने आया कि अगर कौशल संवर्धन को प्राथमिकता नहीं दी गईए तो 61 प्रतिशत नियोक्ताओं को अगले दो सालों में कौशल की कमी बढ़ने का अनुमान है। इसके बावजूदए केवल 23 प्रतिशत नियोक्ता वर्तमान में व्यक्तिगत प्रशिक्षण कार्यक्रम पेश कर रहे हैंए जिससे उनके द्वारा यह कमी देखे जाने और इस पर कार्रवाई किए जाने का बड़ा अंतर स्पष्ट होता है। इनडीड इंडिया के हेड ऑफसेल्सए शशि कुमार ने कहा कि हमारी लेटेस्ट हायरिंग ट्रैकर रिपोर्ट से श्रम बाजार की मौजूदा डायनामिक्स का विस्तृत अनुमान मिलता है।

क्विक न्यूज

चीन की नाराजगी के बाद प्रशांत क्षेत्र के नेताओं ने ताइवान का उल्लेख हटाया

नुकु अलोफा (टोंगा)। दक्षिण प्रशांत क्षेत्र में प्रभाव बढ़ाने के चीन के प्रयासो से मची हलचल ने क्षेत्र के सबसे महत्वपूर्ण कूटनीतिक शिखर सम्मेलन को प्रभावित कर दिया है। प्रशांत द्वीप के एक नेता ने बीजिंग के कहने पर, बैठक के समापन वक्तव्य से ताइवान की भागीदारी की पुष्टि को हटाने का स्पष्ट उल्लेख किया है।ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के अलावा 18 द्वीपीय राष्ट्रों के समूह द पैसिफिक आइलैंड फोरम ने शुक्रवार को अपनी सप्ताह भर की वार्षिक बैठक के बाद नेताओं के बीच हुए समझौतों को रेखांकित करते हुए एक सार्वजनिक विज्ञप्ति जारी की, जिसमें शुरू में स्वशासित ताइवान की स्थिति की पुनः पुष्टि की गई, जिसे चीन अपना क्षेत्र होने का दावा करता है। लेकिन शनिवार को इसे हटा दिया गया।टोंगा के नुकु आलोफा में शिखर सम्मेलन में अधिकारियों ने यह नही बताया कि बयान में परिवर्तन क्यों हुआ। लेकिन रविवार देर शाम एक समाचार संस्था द्वारा पोस्ट किए गए वीडियो मे प्रशांत क्षेत्र के एक नेता चीन के प्रशांत क्षेत्र के विशेष दूत कियान बो को आश्वासन देते हुए दिखाई दे रहे है कि ताइवान का संदर्भ हटा दिया जाएगा। कियान ने पत्रकारों से अपनी टिप्पणी में इसकी मांग की थी। यह दस्तावेज विवादित क्षेत्र में चीन की भूमिका के बारे मे एक तनावपूर्ण, बड़े पैमाने पर निजी क्षेत्रीय बहस को उजागर करता है, जिसे प्रशांत देशों ने बैठक से पहले सार्वजनिक रूप से खत्म करने की मांग की थी।

फिलीपीनः संदिग्ध साइबर अपराध के खिलाफ छापेमारी कर 160 से अधिक लोग हिरासत में लिए गए

मनीला। फिलीपीन प्राधिकारियों ने मध्य प्रांत में एक संदिग्ध अवैध ऑनलाइन गेमिंग और साइबरस्कैम परिसर पर कार्वाई करते हुए 160 से अधिक लोगों को हिरासत में ले लिया जो इंटरनेट आधारित अपराध को अंजाम दे रहे थे। अधिकारियों ने रविवार को जानकारी में बताया कि हिरासत में लिए गए अधिकांश लोग चीन और इंडोनेशिया के नागरिक हैं। शनिवार को 100 से अधिक सरकारी एजेंट ने लापु-लापु शहर में एक रिजॉर्ट पर छापेमारी की। राष्ट्रपति फर्डिनेंड मार्कोस जूनियर ने जुलाई में व्यापक स्तर में ऑनलाइन गेमिंग के संचालन पर प्रतिबंध लगाने के आदेश दिए थे जो अधिकांश चीन नागरिकों द्वारा संचालित किए जा रहे हैं। इसके बाद से ही इस तरह की कार्वाई की जा रही है। मार्कोस ने कहा कि बड़े पैमाने पर संचालित अवैध ऑनलाइन गेमिंग में फिलीपीन के कानूनों की अनदेखी की गई और नियमों का उल्लंघन किया। इसके अलावा, यहां वित्तीय घोटाले, मानव तस्करी, यातना, अपहरण और हत्या सहित अन्य अपराधों को भी अंजाम दिया गया। प्रेसिडेंशियल एंटी-ऑर्गेनाइज्ड क्राइम कमीशन के अनुसार, टूरिस्ट गार्डन रिजॉर्ट में इंडोनेशिया के लोगों को ऑनलाइन गेमिंग केंद्र में जबरन काम करने के लिए मजबूर किया जा रहा था। मनीला स्थित इंडोनेशिया के दूतावास द्वारा अपने देश के आठ लोगों को बचाने के अनुरोध किए जाने के बाद रिजॉर्ट में छापेमारी की गई। कमीशन ने विस्तृत जानकारी दिए बिना कहा कि कम से कम 162 विदेशी नागरिक परिसर के भीतर मिले जो कि साइबर अपराध से जुड़े तीन अलग-अलग गिरोह के लिए काम कर रहे थे। फिलीपीन अधिकारियों के अनुसार, ए गिरोह ऑनलाइन माध्यम से मोहपाश में फंसाकर, गेमिंग और निवेश के माध्यम से लोगों को ठगते थे। इसने बताया कि चीन के 83, इंडोनेशिया के 70, म्यांमा के छह, ताइवान के दो और मलेशिया के एक नागरिक को हिरासत में लिया गया है जिन्हें आव्रजन ब्यूरो द्वारा जांच और संभावित निर्वासन के लिए मनीला ले जाया जाएगा।

अमेरिका के हवाई में एक व्यक्ति ने पड़ोसी के घर पर गोली चलाकर तीन लोगों की हत्या की

होनोलूलू। अमेरिका के हवाई मे शनिवार की रात पड़ोसियो के बीच विवाद के कारण हुई गोलीबारी में तीन लोगों की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए। हमलावर को भी एक स्थानीय व्यक्ति ने गोली मार दी, जिसे गैर इरादतन हत्या के मामले में गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने यह जानकारी दी।होनोलूलू पुलिस जासूस लेफ्टिनेंट दीना थोएम्स ने बताया कि, प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, 58 वर्षीय एक व्यक्ति ने फ्रंट-एंड लोडर मशीन का उपयोग करके कारों को टक्कर मारते हुए उस घर में प्रवेश किया जहां एक पारिवारिक समारोह हो रहा था। थोएम्स के अनुसार उस व्यक्ति ने घर पर जमा हुए लोगों पर गोलियां चलानी शुरू कर दी, जिससे वैनानाई की रहने वाली तीन महिलाओं की मौत हो गई। वैनानाई, होनोलूलू शहर के पश्चिम में करीब 48 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। उन्होंने एक पत्रकार वार्ता में बताया कि, उसी समय घर में रहने वाले 42 वर्षीय व्यक्ति ने उस संदिग्ध को गोली मार दी। पुलिस प्रवक्ता ने स्थानीय निवासी को गिरफ्तार किए जाने के कारण के बारे में पूछने पर तुरंत कोई जवाब नही दिया। थोएम्स ने बताया कि मरने वाली महिलाओं की उम्र 34, 36 और 29 साल थी। उन्होंने बताया कि 31 वर्षीय एक पुरुष और 52 वर्षीय एक महिला को गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया। थोमेम्स ने बताया कि संदिग्ध व्यक्ति की पहचान नही हो पाई है। उसके पास फ्रंट-एंड लोडर मशीन में अज्ञात ईंधन से भरे चार ड्रम थे। पुलिस प्रमुख जो लोगन ने पत्रकार वार्ता मे कहा कि यह गोलीबारी इस क्षेत्र में पिछले कुछ सप्ताहो मे हुई कई गोलीबारी की घटनाओं में से सबसे नई घटना है, जिसके कारण पुलिस ने बंदूक हिसा से लड़ने के लिए कदम उठाने का संकल्प लिया है।

जर्मनी की धुर दक्षिणपंथी पार्टी ने राज्य चुनाव जीता

बर्लिन। जर्मनी में एक धुर दक्षिणपंथी पार्टी ने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद देश में पहली बार एक पूर्वी राज्य के चुनाव में जीत दर्ज की है और एक अन्य राज्य के चुनाव में उसके मुख्यधारा की कंजरवेटिव पार्टी के बाद दूसरे स्थान पर रहने की संभावना है। चुनाव में एक प्रख्यात वामपंथी नेता द्वारा स्थापित नई पार्टी ने भी अच्छा प्रदर्शन किया है, जबकि चांसलर ओलाफ स्कोल्ज की सरकार मे शामिल दलो के लिए नतीजे बेहद निराशाजनक रहे है। सरकारी टेलीविजन चैनल एआरडी और जेडडीएफ ने चुनाव पूर्व सर्वेक्षण (एक्जिट पोल) और आंशिक गणना के आधार पर अनुमान जताया कि धुर दक्षिणपंथी ऑल्टरनेटिव फॉर जर्मनी (एएफडी) थुरिंगिया मे 32-33 प्रतिशत वोट जीत रही है, जो मुख्य राष्ट्रीय विपक्षी पार्टी मध्यमार्गी-दक्षिपंथी क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन (सीडीयू) से 24 फीसदी अधिक है। अनुमानों के मुताबिक, पड़ोसी राज्य सैक्सोनी में सीडीयू को 31.5-31.8 प्रतिशत और एएफडी को 30.8-31.4 प्रतिशत वोट मिल रहे। सीडीयू 1990 से राज्य का नेतृत्व कर रही है। राष्ट्रीय गठबंधन सरकार में शामिल ग्रीन्स पार्टी के एक नेता ओमिद नूरिपुर ने कहा, 1949 के बाद एक धुर दक्षिणपंथी पार्टी राज्य की संसद में मजबूत ताकत के रूप में उभरी है और इससे कई लोगों गहरी चिंता एवं आशंका पैदा हुई है। अन्य पार्टियो का कहना है कि वे गठबंधन में शामिल होकर एएफडी को सत्ता मे नही लाएंगी। एएफडी की वरिष्ठ नेता एलिस वीडेल ने एआरडी से कहा, यह हमारे लिए एक ऐतिहासिक सफलता है। उन्होंने चुनावी नतीजों को स्कोल्ज की गठबंधन सरकार के लिए खतरे की घंटी करार दिया।

अफ़गानिस्तान में आत्मघाती विस्फोट में कम से कम छह लोगों की मौत, 13 घायल

इस्लामाबाद। अफ़गानिस्तान की राजधानी काबुल के पास सोमवार को एक आत्मघाती हमले मे कम से कम छह लोगो की मौत हो गई और 13 अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। काबुल के पुलिस प्रमुख के प्रवक्ता खालिद जादरान ने बताया कि विस्फोट काबुल के दक्षिण-पश्चिमी काला बख्तियार इलाके मे हुआ। उन्होंने बताया कि मृतकों मे एक महिला भी शामिल है, जबकि 13 लोग घायल हुए है। घायलों को अस्पताल ले जाया गया है। पुलिस घटना की जांच कर रही है और अभी तक किसी ने घटना की जिम्मेदारी नही ली है।

पैरा शटलरों ने लगाई पदकों की झड़ी , नितेश को स्वर्ण

● तुलसीमति ने रजत, मनीषा ने कांस्य पदक जीता

भाषा। पेरिस

भारत के कुमार नितेश ने सोमवार को यहां पुरुष एकल एसएल3 बैडमिंटन फाइनल में कड़े मुकाबले में ग्रेट ब्रिटेन के डेनियल बेथेल को हराकर पैरालंपिक में पहली बार स्वर्ण पदक जीता। हरियाणा के 29 साल के नितेश ने अपने मजबूत डिफेंस और सही शॉट चयन की मदद से तोक्यो पैरालंपिक के रजत पदक विजेता बेथेल को एक घंटे और 20 मिनट चले मुकाबले में 21-14 18-21 23-21 से हराया। नितेश ने मैच के बाद कहा, मुझे अब भी कुछ अहसास नहीं हो रहा। वहीं भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों तुलसीमति मुरुगेसन और मनीषा रामदास ने सोमवार को यहां पैरालंपिक की महिला एकल एसयू5 स्पर्धा में क्रमश: रजत और कांस्य पदक जीता। बाइस साल की शीर्ष वरीय तुलसीमति को फाइनल में चीन की गत चैंपियन यैंग कियू शिया के खिलाफ 17-21 10-21 से हार का सामना करना पड़ा।दूसरी वरीय मनीषा ने डेनमार्क की तीसरी वरीय कैथरीन रोसेनग्रेन को 21-12 21-8 से हराकर कांस्य पदक जीता। एसयू5 वर्ग

उन खिलाड़ियों के लिए है जिनके ऊपरी अंगों में विकार है। यह खेलने वाले या फिर दूसरे हाथ में हो सकता है। पेरिस पैरालंपिक में इन दो पदक से पहले भारत को एसएल3 वर्ग में नितेश कुमार ने मौजूदा खेलों का बैडमिंटन का पहला स्वर्ण पदक दिलाया।शायद जब मैं पोडियम पर जाऊंगा और राष्ट्रगान बजेगा तो इस भावना का सामना कर पाऊंगा। एसएल3 वर्ग के खिलाड़ियों के शरीर के निचले हिस्से में अधिक गंभीर विकार होता है और वह आधी चौड़ाई वाले कोर्ट पर खेलते हैं। जब नितेश 15 वर्ष के थे तब उन्होंने 2009 में विशाखापत्तनम में एक रेल दुर्घटना में अपना बायां पैर खो दिया था लेकिन वह इस सदमे से उबर गए और पैरा बैडमिंटन को अपनाया। नितेश की यह जीत सिर्फ निजी उपलब्धि नहीं है बल्कि इस जीत के साथ एसएल3 वर्ग का स्वर्ण पदक भारत के पास बरकरार रहा। तोक्यो में तीन साल पहले जब पैरा बैडमिंटन ने पदार्पण किया था तो प्रमोद भगत ने इस स्पर्धा का स्वर्ण पदक जीता था। आईआईटी मंडी से स्नातक नितेश ने इससे पहले बेथेल के खिलाफ सभी नौ मैच गंवाए थे और उन्होंने सोमवार को ग्रेट ब्रिटेन के खिलाड़ी के खिलाफ पहली जीत दर्ज की।उन्होंने कहा, मैंने इस तरह से नहीं सोचा था। मेरे दिमाग में विचार आ रहे थे कि मैं कैसे जीतूंगा। लेकिन मैं यह नहीं सोच रहा था कि जीतने के बाद मैं क्या करूंगा। फाइनल मुकाबला धीरज और कौशल का परीक्षण था जिसमें दोनों खिलाड़ियों ने बहुत ही कठिन रैलियां खेली। शुरुआती गेम में लगभग तीन मिनट की 122 शॉट की रैली भी थी। नितेश ने अपने रिवर्स हिट, ड्रॉप शॉट और नेट पर शानदार खेल से बेथेल को पूरे मैच में परेशान किया। शुरुआती गेम में नितेश एक समय 6-9 से पीछे थे लेकिन अपने मजबूत डिफेंस की बदौलत वापसी करने में सफल रहे और ब्रेक के समय 11-9 से आगे थे। उन्होंने इसके बाद 18-14 की बढ़त बनाई और बेथेल के शॉट बाहर मारने पर गेम जीत लिया। भारतीय खिलाड़ी दूसरे गेम में 14-12 से आगे था और सीधे गेम में जीत दर्ज कर सकता था लेकिन बेथेल ने वापसी करते हुए मुकाबले को तीसरे और निर्णायक गेम में खींच दिया। तीसरे और निर्णायक गेम दोनों खिलाड़ियों के बीच प्रत्एक अंक के लिए कड़ा मुकाबला देखने को मिला। दोनों खिलाड़ी 8-8 के स्कोर से 19-19 तक पहुंचे। भारतीय खिलाड़ी को 20-19 के स्कोर पर पहला चैंपियनशिप प्वाइंट मिला लेकिन वह इसका फायदा नहीं उठा पाया। बेथेल को भी 21-20 के स्कोर पर चैंपियनशिप प्वाइंट मिला लेकिन वह भी शॉट नेट पर मार बैठे।

तीरंदाज शीतल- राकेश की जोड़ी सेमीफाइनल में

पेरिस। शीतल देवी और राकेश कुमार की भारतीय जोड़ी ने सोमवार को यहां पेरिस पैरालंपिक की मिश्रित टीम कंपाउंड ओपन तीरंदाजी स्पर्धा के सेमीफाइनल मे जगह बनाई। शीतल और राकेश ने क्वार्टर फाइनल में तियोडोरा ऑडी आयुदिया फेरेलिन और केन स्वेगुमिलांग की इंडोनेशिया की जोड़ी को आसानी से 154-143 से हराया। मिश्रित कंपाउंड ओपन वर्ग मे शीतल और राकेश की शीर्ष वरीय जोड़ी ने सेमीफाइनल तक के सफर के दौरान शानदार फॉर्म दिखाई। सेमीफाइनल मे भारतीय जोड़ी का सामना फातिमेह हेमाती और हादी नोरी की ईरान की जोड़ी से होगा। ईरान की जोड़ी ने क्वार्टर फाइनल में जेन कार्ला गोगेल और रेइनाल्डो वैगनर चाराओ फरेरा की ब्राजील की जोड़ी को 153-151 से हराया। सत्रह साल की शीतल का जन्म 2007 मे फोकोमेलिया नामक एक दुर्लभ जन्मजात विकार के साथ हुआ था जिसके कारण उसके अंग अविकसित रह जाते है। इस बीमारी के कारण उसके हाथ पूरी तरह से विकसित नही हो पाए। 39 वर्षीय राकेश को रीढ़ की हड्डी में चोट लगी थी और 2009 मे इससे उबरने के बाद उन्हे अहसास हुआ कि अब उन्हे जीवन भर व्हीलचेयर पर रहना होगा जिससे वे अवसाद मे चले गए और यहां तक कि उन्होंने आत्महत्या करने के बारे मे भी सोचा। रविवार को राकेश पुरुषों के कंपाउंड ओपन वर्ग के कांस्य पदक मुकाबले मे चीन के ही जिहाओ से एक अंक से हार गए थे।

पेरिस पैरालंपिक की पदक तालिका

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
चीन	41	29	13	83
ब्रिटेन	25	14	10	49
अमेरिका	11	16	10	37
फ्रांस	9	10	13	32
ब्राजील	9	6	15	30
आस्ट्रेलिया	7	6	11	24
नीदरलैंड	7	2	4	13
उजबेकिस्तान	6	4	4	14
इटली	5	6	10	21
भारत	2	4	5	11

भारतीय निशानेबाज निहाल सिंह और आमिर अहमद भट क्वालीफिकेशन दौर से बाहर

शेटराउ (फ्रांस)। भारतीय निशानेबाज निहाल सिंह और आमिर अहमद भट सोमवार को यहां मिश्रित 25 मीटर पिस्टल (एसएच1) स्पर्धा के क्वालीफिकेशन दौर में क्रमशः 10वें और 11वें स्थान पर रहते हुए फाइनल में जगह बनाने में नाकाम रहे।दोनों भारतीयों के प्रदर्शन में क्वालीफिकेशन के पहले चरण में निरंतरता दिखी। प्रिसिजन चरण के बाद निहाल 287 अंक के साथ चौथे जबकि आमिर 286 अंक के साथ आठवें और अंतिम क्वालीफाइंग स्थान पर चल रहे थे।रैपिड चरण में हालांकि निहाल और आमिर दोनों 282 अंक ही जुटा पाए और कुल क्रमशः 569 और 568 का स्कोर बनाया जो फाइनल में जगह बनाने के लिए पर्याप्त नही था। क्वालीफिकेशन दौर मे शीर्ष आठ मे रहने वाले निशानेबाज फाइनल मे प्रवेश करते है। एसएच। मे वर्गीकृत खिलाड़ी बिना किसी कठिनाई के अपनी बंदूक पकड़ने और खड़े होकर या बैठकर(व्हीलचेयर या कुर्सी पर) गोली चलाने मे सक्षम होते है। नियम के तहत एसएच। खिलाड़ी पिस्टल या राइफल का उपयोग कर सकते है।भारतीय निशानेबाज दूसरे दिन पदक जीतने मे नाकाम रहे।

पूर्व और उत्तर क्षेत्रजूनियर पुरुष और महिला अंतर क्षेत्रीय चैंपियनशिप में जीते

लखनऊ। पूर्व क्षेत्र और उत्तर क्षेत्र ने सोमवार को यहां हॉकी इंडिया जूनियर पुरुष अंतर क्षेत्रीय चैंपियनशिप मे अपने-अपने मुकाबले जीते। पूर्व क्षेत्र ने दक्षिण क्षेत्र को 3-। से हराया जबकि उत्तर क्षेत्र ने पश्चिम क्षेत्र को 6-2 से शिकस्त दी। रांची में चल रही महिला प्रतियोगिता मे पूर्व क्षेत्र ने रोशनी एडंड के गोल से उत्तर क्षेत्र को।-0 से हराया। पश्चिम क्षेत्र ने दक्षिण क्षेत्र को एकतरफा मुकाबले में 6-0 से रौदा।

तलवार इंडोनेशिया ओपन में करियर के सर्वश्रेष्ठ संयुक्त छठे स्थान पर रहे

जकार्ता। भारतीय खिलाड़ी सप्तक तलवार पांच लाख डॉलर इनामी इंडोनेशिया ओपन गोल्फ टूर्नामेंट के आखिरी दौर में चार अंडर 68 का कार्ड खेलकर संयुक्त रूप से छठे स्थान पर रहे। सप्तक ने चार दौर में 69-67-68-68 के कार्ड के साथ कुल 12 अंडर 272 का स्कोर किया और एशियाई टूर पर पहली बार शीर्ष 10 मे रहे।टूर्नामेंट मे भाग ले रहे अन्य भारतीयों मे खलिन जोशी (68) और भारतीय-अमेरिकी मानव शाह (68) एक समान सात अंडर के स्कोर के साथ संयुक्त 30वें स्थान पर रहे।

शुभंकर शर्मा ब्रिटिश मास्टर्स में 18वें स्थान पर

बेलफ्राइ (ब्रिटेन)। भारतीय गोल्फर शुभंकर शर्मा बेटफ्रेड ब्रिटिश मास्टर्स मे चार अंडर 68 के स्कोर के साथ 18वें स्थान पर रहे और उन्होंने लगातार दूसरी बार शीर्ष 20 मे जगह बनाई है। इससे पहले वह इसी सप्ताह डेनिश ओपन में संयुक्त 14वें स्थान पर रहे थे। डेनमार्क के निकलस नोरगार्ड ने दो शॉट से खिताब जीता। अब वह रेस टू दुबई रैंकिंग मे छठे स्थान पर पहुंच गए है।

दीक्षा आयरिश ओपन में संयुक्त 38वें स्थान पर रही

डबलिन (आयरलैंड)। भारतीय गोल्फर दीक्षा डागर महिला आयरिश ओपन के चौथे दौर मे पार 73 का कार्ड खेलने के बाद संयुक्त रूप से 38वें स्थान पर रही। दीक्षा ने चौथे दौर मे चार बोगी किए और इतने ही बर्डी लगाए। उनका का कुल स्कोर चार अंडर 288 रहा। टूर्नामेंट मे भाग ले रही तीन अन्य भारतीय त्वेसा मलिक संधू, प्रणवी उर्स और रिद्धिमा दिलावरी कट मे जगह बनाने से चूक गई थी।

ईस्ट दिल्ली राइडर्स ने महिला डीपीएल में दक्षिण दिल्ली सुपरस्टार्स को हराया

नई दिल्ली। ईस्ट दिल्ली राइडर्स ने महिला दिल्ली प्रीमियर लीग के उद्घाटन मैच मे सोमवार को यहां साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स पर 11 रनों से जीत हासिल की।प्रतिका रावल की 38 गेंद मे 41 रन की पारी के दम पर राइडर्स की टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए आठ विकेट पर 114 रन बनाए। इसके जवाब मे सुपरस्टार्स की टीम छह विकेट पर 103 रन ही बना सकी। राइडर्स के लिए साची ने हरफनमौला प्रदर्शन किया।

दलीप ट्रॉफी में पहले दौर के मैच नहीं खेल सकेंगे सूर्यकुमार

मुंबई। भारतीय बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव दाहिने हाथ मे लगी चोट के कारण पांच सितंबर से शुरू हो रही दलीप ट्रॉफी के पहले दौर के मैच नही खेल सकेंगे। सूर्यकुमार ने कोयंबटूर मे तमिलनाडु क्रिकेट संघ एकादश के खिलाफ मुंबई के लिए बुची बाबू आमंत्रण टूर्नामेंट खेला था। वह चोट के कारण आखिरी दिन नही खेल सका सूर्यकुमार को पांच से आठ सितंबर तक अनंतपुर मे भारत डी के खिलाफ भारत सी के लिए खेलना है।

कथुनिया को पुरुषों के एफ-56 चक्का फेंक स्पर्धा में रजत

● लगातार दूसरी बार पैरालंपिक में मारी बाजी

भाषा। पेरिस

भारत के योगेश कथुनिया ने पेरिस पैरालंपिक में पुरुषों की एफ56 चक्का फेंक स्पर्धा में 42.22 मीटर के सत्र के अपने सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ सोमवार को यहां रजत पदक जीता। कथुनिया ने इससे पहले तोक्यो पैरालंपिक में भी इस स्पर्धा का रजत पदक जीता था। इस 27 साल के खिलाड़ी ने अपने पहले प्रयास में मौजूदा सत्र का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 42.22 मीटर की दूरी तय की। ब्राजील के क्लॉडनी बतिस्ता डॉस सैंटोस ने अपने पांचवें प्रयास में 46.86 मीटर की दूरी के साथ इन खेलों का नया रिकॉर्ड कायम करते हुए पैरालंपिक में स्वर्ण पदक की हैट्रिक पूरी की। यूनान के कंस्टेंटिनो तजौनिस ने 41.32 मीटर के प्रयास के साथ कांस्य पदक जीता। चार खिलाड़ियों की इस स्पर्धा में स्लोवाकिया के डुसान लैक्जको 41.20 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ अंतिम स्थान पर रहे। एफ 56 वर्ग में भाग ले वाले वाले खिलाड़ी बैठ कर प्रतिस्पर्धा करते है। इस वर्ग में ऐसे खिलाड़ी होते है जिनके शरीर के निचले हिस्से में विकार होता है और मांसपेशियां कमजोर होती है। कथुनिया नौ साल की उम्र में गुइलेन-बैरी सिंड्रोम से ग्रसित हो गए थे। यह एक दुर्लभ बीमारी है जिसमें शरीर के अंगों में सुन्नता, झनझनाहट के साथ मांसपेशियों में कमजोरी आ जाती है और बाद में यह पक्षाघात (पैरालिसिस) का कारण बनता है। वह बचपन में व्हीलचेयर की मदद से चलते थे लेकिन अपनी मां मीना देवी की मदद से वह बाधाओं पर काबू पाने में सफल रहे। उनकी मां ने फिजियोथेरेपी सीखी ताकि वह अपने बेटे को फिर से चलने में मदद कर सके। कथुनिया के पिता भारतीय सेना में सेवा दे चुके हैं। कथुनिया ने दिल्ली के प्रतिष्ठित किरोड़ीमल कॉलेज से कॉमर्स में स्नातक किया है। पैरालंपिक खेलों में दो रजत पदक के अलावा उनके पास विश्व चैंपियनशिप के तीन पदक हैं। इसमें दो रजत और एक कांस्य पदक शामिल हैं।कथुनिया हालांकि सोमवार के अपने प्रयास से संतुष्ठ नहीं होंगे क्योंकि उन्होंने तोक्यो पैरालंपिक में 44.38 मीटर के प्रयास के साथ रजत पदक जीता था।

अब रजत पदक की बाधा को पार कर स्वर्ण पदक जीतना चाहता हूं: कथुनिया

पेरिस। पैरालंपिक खेलो में लगातार दूसरी बार रजत पदक जीतने वाले भारतीय चक्का फेंक खिलाड़ी योगेश कथुनिया अपने प्रदर्शन से बहुत खुश नही है क्योंकि उन्हे लगता है कि वह कई प्रमुख टूर्नामेंटो मे दूसरे स्थान की बाधा को पार नही कर पा रहे है। हरियाणा के 27 वर्षीय खिलाड़ी ने पेरिस पैरालंपिक मे पुरुषो के एफ56 चक्का फेंक स्पर्धा में 42.22 मीटर के सत्र के अपने सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ सोमवार को यहां रजत पदक जीता। कथुनिया अपने प्रदर्शन से संतुष्ट नहीं थे और उन्होने अगले बड़े टूर्नामेंट मे अपने पदक का रंग बेहतर करने का वादा किया। कथुनिया ने मैच के बाद यहां कहा, प्रतियोगिता ठीक रही, मुझे रजत पदक मिला। मै अब पदक का रंग बदलने के लिए कड़ी मेहनत करूंगा। उन्होंने कहा, पिछले कुछ समय से मैं केवल रजत जीत रहा हूं, चाहे वह तोक्यो (पैरालंपिक) हो या आज, विश्व चैंपियनशिप या एशियाई खेल..हर जगह मै रजत जीत रहा हूं। गाड़ी अटक गई है। मुझे लगता है कि मुझे और अधिक मेहनत करने की जरूरत है।

बोपन्ना और एबडेन की पुरुष युगल जोड़ी बाहर

न्यूयॉर्क। रोहन बोपन्ना और उनके ऑस्ट्रेलियाई जोड़ीदार मैथ्यू एब्डेन की तीसरे दौर में हार के साथ ही भारत की अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट के पुरुष युगल में चुनौती समाप्त हो गई। बोपन्ना और एबडेन की दूसरी वरीयता प्राप्त जोड़ी रविवार की रात को खेले गए मैच में मैक्सिमो गोंजालेज और आंद्रेस मोल्टेनी की अर्जेंटीना की 16वीं वरीयता प्राप्त जोड़ी से 66 मिनट में।-6, 5-7 से हार गई। बोपन्ना और एबडेन ने इस साल की शुरुआत में ऑस्ट्रेलियाई ओपन में पुरुष युगल का खिताब जीता था। 44 वर्षीय बोपन्ना पहले ही डेविस कप से संन्यास लेने की घोषणा कर चुके हैं और यह देखना दिलचस्प होगा कि वह जनवरी 2025 में ऑस्ट्रेलियाई ओपन में अपने खिताब का बचाव करने के लिए कोर्ट पर उतरेंगे या नहीं।

कोको बाहर, लगातार खिताब नही जीत पाने का सिलसिला जारी

● अमेरिकी ओपन

न्यूयॉर्क। गत चैंपियन कोको गॉफ का अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट के महिला एकल में अपने खिताब का बचाव करने का अभियान चौथे दौर में ही थम गया। इस तरह से वर्ष के अंतिम ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट में लगातार खिताब नहीं जीत पाने का पिछले 10 वर्षों से चला आ रहा सिलसिला जारी है। तीसरी वरीयता प्राप्त गॉफ ने 19 डबल फॉल्ट किए जिसका आखिर में उन्हें खामियाजा भुगतना पड़ा और वह एम्मा नवारो से 6-3, 4-6, 6-3 से हार गईं। गॉफ का पिछली कुछ प्रतियोगिताओं में प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। वह पेरिस ओलंपिक के तीसरे दौर में हार गई थी जबकि अमेरिकी ओपन की तैयारी के सिलसिले में खेले गए टूर्नामेंट में भी वह अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई थी। उन्होंने हालांकि इसे सकारात्मक रूप में लिया।गॉफ ने कहा, भले ही कुछ परिणाम अनुकूल नहीं रहे लेकिन मैंने इस सत्र में अच्छा प्रदर्शन किया। कितने ही खिलाड़ी हैं जो

चौथे दौर में पहुंचाना चाहते हैं और ओलंपिक का हिस्सा बनना चाहते हैं। कई खिलाड़ी हैं जो ध्वजवाहक बनना चाहते हैं। यह इस परिप्रेक्ष्य में है। यह परिणाम शुक्रवार को मौजूदा पुरुष चैंपियन नोवाक जोकोविच की तीसरे दौर में हार के बाद आया है। इसका मतलब है कि अमेरिकी ओपन में अपने खिताब का बचाव करने में असफल रहने का पिछले कुछ वर्षों से चला आ रहा सिलसिला जारी रहेगा। अमेरिकी ओपन में पिछले 10 वर्ष से कोई भी खिलाड़ी लगातार दो बार खिताब नहीं जीत पाया है। महिला एकल में ऐसा करने वाली आखिरी खिलाड़ी सेरेना विलियम्स थी जिन्होंने 2012 से 2014 तक खिताब जीते थे। पुरुष वर्ग में ऐसा कारनामा रोजर फेडरर ने 2004 से 2008 तक किया था। नवारो का अगला मुकाबला पाउला बडोसा से होगा, जिन्होंने वांग याफान के खिलाफ 6-।, 6-2 से जीत दर्ज की। दूसरी वरीयता प्राप्त आर्यना सबालेंका भी क्वार्टर फाइनल में पहुंच गई हैं। उन्होंने एलिस मर्टेंस को 6-2, 6-4 से हराया। सबालेंका क्वार्टर फाइनल में झेंग किनवेन से भिड़ेंगी, जिन्होंने सोमवार को सुबह दो बजकर 15 मिनट पर समाप्त हुए मैच में डोना वेकिच को 7-6 (2), 4-6, 6-2 से हराया। अमेरिकी ओपन में इससे पहले कभी कोई मैच इतनी देर रात तक नहीं खिंचा था।पुरुष वर्ग में जोकोविच को हराने वाले 28 वरीयता प्राप्त एलेक्सी पोपिरिन का सफर भी लंबा नहीं चल पाया और वह फ्रांसिस टियाफो से 6-4, 7-6 (3), 2-6, 6-3 से हारकर बाहर हो गए।

क्विक न्यूज

बधिर निशानेबाजी विश्व चैंपियनशिप: धनुष का विश्व रिकॉर्ड, भारत ने पुरुष एयर राइफल में तीनों पदक जीते

नई दिल्ली। भारत ने जर्मनी के हेनोवर में दूसरी विश्व बधिर निशानेबाजी चैंपियनशिप के दूसरे दिन पुरुष 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा मे दबदबा बनाया जब धनुष श्रीकांत, शौर्य सैनी और मोहम्मद मुर्तजा वानिया ने तीनों पदक देश की झोली मे डाले। धनुष ने एक ही दिन मे दो विश्व रिकॉर्ड बनाए। उन्होंने पहले क्वालीफिकेशन दौर में 632.7 के साथ विश्व रिकॉर्ड बनाया और फिर फाइनल मे भी 251.7 अंक के साथ पिछले विश्व रिकॉर्ड को तोड़ा।शौर्य ने फाइनल मे 249.9 अंक के साथ रजत पदक जीता। मुर्तजा वानिया ने 226.2 अंक के साथ कांस्य पदक अपने नाम किया। पुरुष स्पर्धा के अलावा महिला वर्ग मे भी भारत ने अच्छा प्रदर्शन किया जब माहित संधू और नताशा जोशी ने क्रमश: रजत और कांस्य पदक जीते। भारत प्रतियोगिता के पहले दिन एक स्वर्ण, दो रजत और एक कांस्य पदक सहित कुल चार पदक जीत चुका है।

गठिया से जूझ रही है साइना नेहवाल, साल के आखिर तक संन्यास पर करेंगी फैसला

नई दिल्ली। भारत की चोटी की बैडमिंटन खिलाड़ी और पूर्व ओलंपिक कांस्य पदक विजेता साइना नेहवाल ने खुलासा किया है कि वह गठिया से जूझ रही है और उन्हे इस साल के अंत तक इस खेल मे अपने भविष्य के बारे मे फैसला करना होगा क्योंकि इस बीमारी के कारण उनके लिए सामान्य दिनों की तरह अभ्यास करना मुश्किल हो गया है। विश्व की पूर्व नंबर एक खिलाड़ी 34 वर्षीय नेहवाल ने लंदन ओलंपिक 2012 मे कांस्य पदक जीता था। तीन बार ओलंपिक खेलो मे भाग लेने वाली नेहवाल ओलंपिक मे पदक जीतने वाली पहली भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी बनी थी। राष्ट्रमंडल खेल 2010 और 2018 की स्वर्ण पदक विजेता ने कहा कि वह अब इस तथ्य को नजरअंदाज नही कर सकती है कि उनका करियर अपने अंतिम चरण मे है।

चोटिल नागल स्वीडन के खिलाफ डेविस कप मुकाबले से हटे

नई दिल्ली। भारत के शीर्ष एकल खिलाड़ी सुमित नागल पीठ की चोट के कारण स्वीडन के खिलाफ आगामी डेविस कप मुकाबले से सोमवार को हट गए। नागल हाल ही मे अमेरिकी ओपन मे अपने पहले दौर के एकल मुकाबले मे टालोन ग्रिक्सपुर से हार गए थे। भारत और स्वीडन के बीच स्टॉकहोम मे इनडोर हार्ड-कोर्ट प्रतियोगिता 14-15 सितंबर को खेली जाएगी। नागल के हटने के बाद रिजर्व खिलाड़ी आर्यन शाह को मुख्य टीम मे शामिल किया गया है जबकि मानस धमने को स्टैंडबाय पर रखा गया है। नागल ने सोशल मीडिया पर लिखा, मै स्वीडन के खिलाफ आगामी डेविस कप मुकाबले मे भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए वास्तव मे उत्सुक था। मुझे हालांकि पीठ मे दर्द की समस्या पिछले कुछ सप्ताह से परेशान कर रही है। डॉक्टरों ने मुझे अगले दो सप्ताह तक आराम करने की सलाह दी है, जिससे मेरे पास तैयारी करने और स्वीडन मे प्रतिस्पर्धा करने के लिए पर्याप्त समय नही है। मैने इसी समस्या के कारण अमेरिकी ओपन मे युगल मुकाबलो से अपना नाम वापस ले लिया था।

क्रिकेटर रोड्रिग्स व नित्यश्री प्लेटिनम इवारा से जुड़ीं

नई दिल्ली। प्लेटिनम इवारा के नए कैम्पेन में जेमिमाह रोड्रिग्स और नित्यश्री वेंकटरमणन इस सीज़न के लिए अपनी पसंदीदा ज्वेलरी के बारे में बता रही हैं। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की डायनामिक स्टार, जेमिमाह और तमिल नाडु की लोकप्रिय गायिका, नित्यश्री ने स्वयं की खोज और व्यक्तिगत विकास के नए मानक स्थापित किए हैं। प्लेटिनम इवारा कलेक्शन न केवल उनकी पसंदीदा ज्वेलरी और स्टाईल प्रतिबिंबित करती हैए बल्कि उनकी अद्वितीय यात्रा और व्यक्तिगत उपलब्धि का सार भी है। प्लेटिनम की हर ज्वेलरी उनकी उपलब्धियोंए भावनात्मक खुलासों और सफलताओं का शक्तिशाली प्रतीक है। जेमिमाह और नित्यश्री द्वारा चुनी गई यह ज्वेलरी उनकी व्यक्तिगत पहचान और प्रामाणिकता की अभिव्यक्ति करती है। जेमिमाह रोड्रिग्स और नित्यश्री वेंकटरमण ने सितारों में जन्मे दुर्लभ मैटलए प्लेटिनम की ज्वेलरी चुनी है क्योंकि यह टिकाऊपनए शुद्धता और प्राकृतिक सफेद चमक का प्रतीक हैए जो कभी कम नहीं होती। अपनी अतुलनीय शक्ति और स्थायी सौंदर्य के साथ प्लेटिनम उनके विशिष्ट स्टाईल और उपलब्धियों का प्रतिनिधित्व करता है।

पाकिस्तान की बल्लेबाजी लड़खड़ाई, बारिश ने बांग्लादेश का इंतजार लंबा कराया

रावलपिंडी (पाकिस्तान)। युवा तेज गेंदबाजों हसन महमूद और नाहिद राणा ने आपस में नौ विकेट साझा कर के सोमवार को दूसरे टेस्ट के चौथे दिन पाकिस्तान की दूसरी पारी को 172 रन पर समेट दिया, जिससे बांग्लादेश के पास दो मैचों की श्रृंखला मे सूपड़ा साफ करने का मौका है।खराब रोशनी और फिर बारिश के कारण दिन के आखिरी सत्र मे सिर्फ एक ओवर का खेल हो गया। बांग्लादेश ने जीत के लिए 185 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए सात ओवरो मे बिना किसी नुकसान के 42 रन बना लिए थे। मैच के आखिरी दिन अब टीम को जीत के लिए 143 रन की जरूरत है और उसके सभी विकेट बचे हुए है। बांग्लादेश की टीम अगर इस मैच को जीतने या ड्रॉ कराने मे सफल रही तो यह टेस्ट श्रृंखला मे पाकिस्तान के खिलाफ उसकी पहली जबकि विदेशी सरजमी द्विपक्षीय श्रृंखला मे दूसरी जीत होगी।

नए कोच मार्केज की देखरेख में भारतीय टीम की नजरें बेहतर शुरुआत पर

हैदराबाद। विश्व कप क्वालीफायर मे निराशा को पीछे छोड़ते हुए भारतीय पुरुष फुटबॉल टीम मंगलवार को यहां इंटरकांटिनेंटल कप के पहले मैच मे जब मॉरीशस के खिलाफ मैदान पर उतरेगी तो उसकी कोशिश नए मुख्य कोच मोनालो मार्केज के नेतृत्व मे दमदार आगाज करने की होगी।भारतीय पुरुष टीम 16 साल मे पहली बार तेलंगाना की राजधानी पहुंची है। यह शहर तीन से नौ सितंबर तक इंटरकांटिनेंटल कप के लिए मॉरीशस और सीरिया की मेजबानी करेगा। मार्केज ने इस टूर्नामेंट को एएफसी एशियन कप क्वालीफायर जैसे भविष्य के बड़े टूर्नामेंटो की तैयारियो के लिए ड्रेस रिहर्सल करार दिया है।

राष्ट्रीय ओपन चैम्पियनशिप: नितिन, एंसी सोजन को सर्वश्रेष्ठ एथलीट का पुरस्कार मिला

बेंगलुरु सेना की लंबी कूद की अनुभवी खिलाड़ी एंसी सोजन ने सोमवार को यहां राष्ट्रीय ओपन चैंपियनशिप के समापन दिन 6.71 मीटर के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हुए स्वर्ण पदक के साथ सर्वश्रेष्ठ महिला एथलीट का पुरस्कार अपने नाम किया। तेईस साल की यह खिलाड़ी दिग्गज अंजू बॉबी जॉर्ज के 2002 मे बनाए गए 6.74 मीटर के मीट रिकॉर्ड को तोड़ने से मामूली अंतर से चूक गईं।उन्होने स्वर्ण पदक जीतने के बाद कहा, मेरा 6.71 मीटर का स्वर्ण जीतने वाला प्रदर्शन 2025 सत्र की तैयारी के लिए एक अच्छा मानदंड होगा।

मोहन बगान व ईस्ट बंगाल के मैच में दिखा रामांच

●बदइंतजामी ने फीकी रही फुटबॉल मैच की रंगत

लखनऊ। केडी सिंह बाम स्टेडियम में मुख्यमंत्री कप फुटबॉल में मोहन बागान और ईस्ट बंगाल के मैच को देखकर लखनऊ के लोग झोम उठे। प्रतियोगिता का उद्घाटन सीएम योगी ने किया। मैच को देखने के लिए काफी भी ड़ जुटी। इसकी वजह लोगों को कुछ परेशानी भी उठानी पड़ी। सोमवार शाम यहां खेले जाने वाला मैच आयोजकों की बदइंतजामी का भी गवाह बना। चिर प्रतिद्वंदी मोहन बागान और ईस्ट बंगाल के बीच मैच यहां शाम साढ़े छह बजे से हजरतगंज स्थित केडी सिंह बाबू स्टेडियम पर खेला जाना था जिसको देखने के लिये नवाब नगरी के फुटबॉल प्रेमी शाम साढ़े चार बजे से ही यहां जमना शुरु हो गये थे।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को इस निशुल्क प्रदर्शनी मैच का उदघाटन करना था जिसके चलते पुलिस प्रशासन भी सक्रिय हो गया था। स्टेडियम पर पार्किंग के लिये कोई स्थान निर्धारित नहीं होने के कारण वाहनो का प्रवेश शाम पांच बजे से ही निषेध कर दिया गया था। मैच के बाहर फुटपाथ पर पुलिसकर्मियों ने फुटबॉल प्रेमियों को बैरियर लगा कर रोक दिया गया जिससे बड़ी संख्या में दर्शक आयोजकों को कोसते हुये स्टेडियम के बाहर से ही घर वापस होने को मजबूर हुये। बदइंतजामी का स्तर इस कदर था कि प्रेस प्रतिनिधियों के वाहनों को

भी पुलिस अधिकारियों ने प्रवेश करने से रोक दिया और जब उनसे फुटपॉथ पर पार्क करने की मनुहार की गयी तो उनका जवाब था कि उन्हे साफ निर्देश मिले हैं कि उन्हे सिर्फ मुख्यमंत्री के लिये रास्ता साफ चाहिये और किसी भी वाहन का स्टेडियम अथवा फुटपाथ पर वाहन पार्क करना निषेध है।

लोग इंतजाम से नाराज दिखे

स्टेडियम के भीतर भी हालात अप्रिय दिखे। मुकाबले में दर्शक जुटाने के लिये हालांकि पोस्टर बैनर पर खेल विभाग ने जम कर पैसे लुटाये लेकिन मैदान में प्रवेश करने से वंचित हुये खेल प्रेमी उन्हे कोसते नजर आये। यहां तक कि प्रेस दीर्घा के लिये भी कोई निर्धारित स्थान न होने से पत्रकारों ने भी दर्शकों के बीच बैठ कर मैच कवर किया। रोमांचक मुकाबले के गवाह बनने से चूके दर्शकों ने स्टेडियम के बाहर पुलिस प्रशासन और आयोजकों की जमकर आलोचना की। इनमें अधिकतर का मानना था कि फुटबॉल की लोकप्रियता तभी बढ़ेगी जब प्रदेश के विभिन्न शहरों में इस स्तर की टीमों के बीच मुकाबलों की आवृत्ति में इजाफा हो मगर वीआईपी संस्कृति और मठाधीशों के चलते दर्शक शायद ही फुटबाल के मैदान को ओर रुख कर सकें।

विद्यालयी कबड्डी में चमके खिलाड़ी

लखनऊ । क्रिश्चियन इ कॉलेज के द्वारा जनपदीय माध्यमिक विद्यालयी कबड्डी प्रतियोगिता 2024' बालक वर्ग का आयोजन कॉलेज के प्रांगण में किया गया। प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि सी जी शुक्ला संरक्षक जिला कबड्डी संघ एवं चैयरमैन टेक्निकल कमेटी उत्तर प्रदेश कबड्डी संघ ने प्रतियोगिता का उद्घाटन कर छात्रों को उत्तम प्रदर्शन के लिए अग्रिम शुभकामनाएं दी। बालक वर्ग प्रतियोगिता के अंतर्गत 14 वर्षीय बालक में 6 ए 17 वर्षीय बालक वर्ग में 11 एवं 19 वर्षीय बालक वर्ग में आयु वर्ग के 16 कॉलेज की टीमों ने प्रतिभाग किया । आज के खेले गए 17 वर्षीय बालक वर्ग के फाइनल मुकाबले में बाबू त्रिलोकी सिंह इन्टर कॉलेज काकोरी लखनऊ ने रामाधीन इन्टर कॉलेज को 25-17 अंक से मात देकर विजेता होने का गौरव प्राप्त किया। 17 वर्षीय विजेता टीम के खिलाड़ियों को प्रधानाचार्य नवीन प्रकाश मसीह जी ने मेडल पहनाकर सम्मानित कर खिलाड़ियों को मंडल स्तरीय प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएं दी। प्रतियोगिता के अंतिम सत्र में विद्यालय के प्रधानाचार्य नवीन प्रकाश मसीह जी ने सभी खिलाड़ियों, शारीरीक शिक्षा शिक्षकों एवं सफल आयोजन हेतु आयोजक शारीरिक शिक्षा शिक्षक पुनीत रैडक्लिफ का आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर जिला सचिव वेद प्रकाश यादव , आलोक भारद्वाज , राजकुमार त्रिपाठी, विप्लव चौधरी, प्रवीण शर्मा, पुनीत रेडक्लिफ अजय दिवाकर, हिमांशु शुक्ला,श्रीमती सुशीला गौतम, श्रीमती प्रीति व अन्य उपास्थित रहें।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा द इंडियन एक्सप्रेस लिमिटेड,ए-8, सेक्टर-7, जिला-गौतमबुद्ध नगर, नोएडा (उ.प्र.)-201301, दूरभाष-01202470700 से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: प्रदीप तिवारी। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5,बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष:011-69342500।